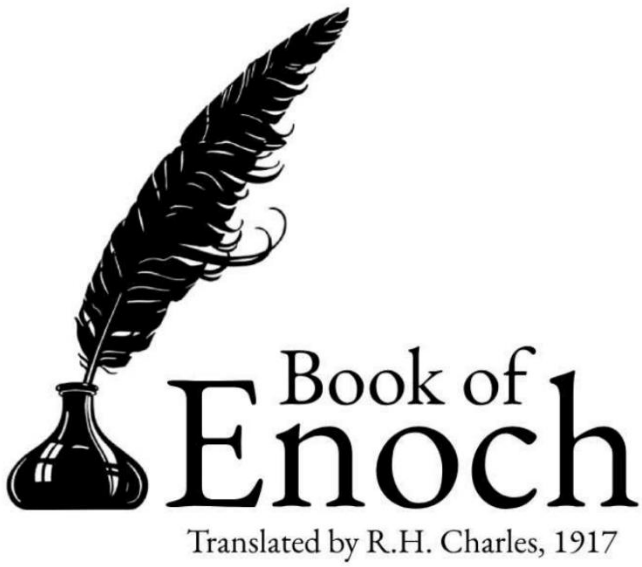


हनोक की पुस्तक

अध्याय 1

1. हनोक के आशीर्वाद के शब्द, जिनसे उसने चुने हुए और नेक लोगों को आशीर्वाद दिया, जो मुसीबत के दिन में जी रहे होंगे, जब सभी बुरे और नास्तिकों को हटा दिया जाएगा।
2. और उसने अपनी कहानी शुरू की और कहा—हनोक एक नेक आदमी था, जिसकी आँखें परमेश्वर ने खोली थीं, उसने स्वर्ग में पवित्र परमेश्वर का दर्शन देखा, जो स्वर्गदूतों ने मुझे दिखाया था, और उनसे मैंने सब कुछ सुना, और उनसे मैंने जैसा देखा वैसा समझा, लेकिन इस पीढ़ी के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ी के लिए।
3. चुने हुए लोगों के बारे में मैंने कहा, और उनके बारे में अपनी कहानी शुरू की: पवित्र महान अपने घर से बाहर आएगा,
4. और सनातन परमेश्वर पृथ्वी पर, अर्थात सीनै पर्वत पर चलेगा, और अपने डेरे से प्रकट होगा, और अपनी शक्ति के बल के साथ स्वर्ग के स्वर्ग से प्रकट होगा।
5. और सब लोग डर से कांप उठेंगे, और पहरेदार कांप उठेंगे, और धरती के कोने-कोने तक बड़ा डर और थरथराहट उन्हें जकड़ लेगी।
6. और ऊँचे पहाड़ हिल जाएँगे, और ऊँची पहाड़ियाँ नीची हो जाएँगी, और आग की लपटों के सामने मोम की तरह पिघल जाएँगी,
7. और पृथ्वी पूरी तरह से फट जाएगी, और पृथ्वी पर जो कुछ भी है वह नष्ट हो जाएगा, और सभी मनुष्यों पर न्याय होगा।
8. लेकिन नेक लोगों के साथ वह शांति बनाए रखेगा। और चुने हुए लोगों की रक्षा करेगा, और उन पर दया होगी। और वे सब परमेश्वर के होंगे, और वे समृद्ध होंगे, और वे सब धन्य होंगे। और वह उन सब की मदद करेगा, और उन्हें रोशनी दिखाई देगी, और वह उनके साथ शांति बनाए रखेगा।
9. और देखो! वह अपने हज़ारों पवित्र लोगों के साथ आ रहा है, ताकि सब पर न्याय करे, और सब पापियों को खत्म करे: और सब इंसानों को उनके पाप के सारे कामों के लिए दोषी ठहराए जो उन्होंने पापियों के साथ किए हैं, और उन सभी कठोर बातों के लिए जो पापियों ने उसके खिलाफ कही हैं।

अध्याय दो

1. तुम आसमान में होने वाली हर चीज़ को देखो, कि वे अपना चक्कर नहीं बदलते, और आसमान में जो रोशनी है, वे सब अपने-अपने समय पर कैसे उगती और डूबती हैं, और अपने तय क्रम से नहीं बदलतीं।
2. धरती को देखो, और शुरू से आखिर तक उस पर होने वाली बातों पर ध्यान दो, वे कितनी पक्की हैं, धरती की कोई भी चीज़ नहीं बदलती, बल्कि परमेश्वर के सारे काम तुम्हें दिखाई देते हैं।
3. गर्मी और सर्दी को देखो, कैसे सारी धरती पानी से भर जाती है, और उस पर बादल, ओस और बारिश होती है।

अध्याय 3

ध्यान से देखें कि सर्दियों में सभी पेड़ ऐसे लगते हैं जैसे वे मुरझा गए हों और उनके सारे पत्ते झड़ गए हों, सिवाय चौदह पेड़ों के, जिनके पत्ते नहीं झड़ते बल्कि दो से तीन साल तक नए पत्ते आने तक पुराने पत्ते बने रहते हैं।

अध्याय 4

और फिर, गर्मी के दिनों में देखो कि सूरज धरती के ऊपर होता है, उसके सामने। और तुम सूरज की गर्मी की वजह से छाया और पनाह ढूंढते हो, और धरती भी बढ़ती गर्मी से जलती है, और इसलिए तुम धरती पर या उसकी गर्मी की वजह से किसी चट्टान पर नहीं चल सकते।

अध्याय 5

1. देखो कि पेड़ कैसे हरी पत्तियों से खुद को ढक लेते हैं और फल देते हैं: इसलिए तुम ध्यान दो और उसके सभी कामों के बारे में जानो, और पहचानो कि जो हमेशा जीवित रहता है, उसने उन्हें ऐसा कैसे बनाया है।
2. और उसके सारे काम इसी तरह साल दर साल हमेशा चलते रहते हैं, और वे सारे काम जो वे उसके लिए पूरे करते हैं, और उनके काम बदलते नहीं हैं, बल्कि जैसा परमेश्वर ने तय किया है, वैसा ही होता है।
3. और देखो कि समुद्र और नदियाँ भी उसी तरह अपने काम पूरे करते हैं और उसकी आज्ञाओं से नहीं बदलते।
4. लेकिन तुम पक्के नहीं रहे, न ही प्रभु की आज्ञाओं का पालन किया, बल्कि तुम भटक गए और अपने गंदे मुँह से उसकी महानता के खिलाफ घमंड और कठोर बातें बोलीं। हे कठोर दिल वालों, तुम्हें शांति नहीं मिलेगी।
5. इसलिए तुम अपने दिनों को बुरा समझोगे, और तुम्हारी ज़िंदगी के साल खत्म हो जाएंगे, और तुम्हारी बर्बादी के साल हमेशा बुरा समझकर बढ़ा दिए जाएंगे, और तुम्हें कोई रहम नहीं मिलेगा।
6. उन दिनों में तुम अपने नाम को सभी नेक लोगों के लिए हमेशा के लिए बदनाम करोगे, और जो लोग कोसते हैं, वे सब तुम्हारे नाम से कोसेंगे, और सभी पापी और भगवान न मानने वाले तुम्हारे नाम से कोसेंगे, और तुम्हारे लिए भगवान न मानने वालों के लिए एक कोस होगा। और सभी... खुश होंगे, और पापों की

माफ़ी होगी, और हर तरह की दया, शांति और सहनशीलता होगी: उनके लिए मुक्ति होगी, एक अच्छी रोशनी। और तुम सभी पापियों के लिए कोई मुक्ति नहीं होगी, बल्कि तुम सब पर एक कोस रहेगा।
7. लेकिन चुने हुए लोगों के लिए रोशनी, खुशी और शांति होगी, और वे धरती के वारिस होंगे।
8 और तब चुने हुए लोगों को बुद्धि दी जाएगी, और वे सब जीवित रहेंगे और फिर कभी पाप नहीं करेंगे, न तो बुराई से और न ही घमंड से: लेकिन जो बुद्धिमान हैं वे विनम्र होंगे।
9 और वे फिर कभी गलती नहीं करेंगे, न ही वे अपनी ज़िंदगी के सारे दिन पाप करेंगे, न ही वे भगवान के गुस्से या प्रकोप से मरेंगे, बल्कि वे अपनी ज़िंदगी के दिनों की गिनती पूरी करेंगे। और उनकी ज़िंदगी शांति से बढ़ेगी, और उनकी खुशी के साल कई गुना बढ़ेंगे, उनकी ज़िंदगी के सारे दिन हमेशा की खुशी और शांति में रहेंगे।

अध्याय 6

1. और ऐसा हुआ कि जब इंसानों की संतानें बढ़ गईं, तो उन दिनों में उन्हें सुंदर और सुंदर बेटियाँ पैदा हुईं।
2. और स्वर्ग के बच्चों, स्वर्गदूतों ने उन्हें देखा और उन पर मोहित हो गए, और एक दूसरे से कहा: 'आओ, हम इंसानों में से अपने लिए पत्नियाँ चुनें और बच्चे पैदा करें।'
3. और सेमजाज़ा, जो उनका लीडर था, ने उनसे कहा: 'मुझे डर है कि तुम सच में यह काम करने के लिए राज़ी नहीं होगे, और मुझे अकेले ही एक बड़े पाप की सज़ा भुगतनी पड़ेगी।'
4. और सबने उसे जवाब दिया और कहा: 'आओ हम सब कसम खाएं, और सब एक-दूसरे से कसम खाएं कि हम इस प्लान को नहीं छोड़ेंगे बल्कि यह काम करेंगे।'
5. फिर सबने मिलकर कसम खाई और आपस में एक-दूसरे को शाप देकर उस पर सहमत हो गए।
6. और वे कुल मिलाकर दो सौ थे; जो जेरेड के दिनों में माउंट हेर्मोन की चोटी पर उतरे थे, और उन्होंने उसका नाम माउंट हेर्मोन रखा, क्योंकि उन्होंने उस पर एक-दूसरे को शाप देकर कसम खाई थी और खुद को बांध लिया था।
7. और उनके नेताओं के नाम ये हैं: सेमीज़ाज़, उनका नेता, अरकीबा, रामेल, कोकाबेल, तामील, रामेल, दानेल, एज़ेक़ेल, बरक़िजाल, असाएल, अरमारोस, बतरेल, अननेल, ज़कील, समसापेल, सतरेल, तुरेल, जोमजाएल, सारीएल।
8. ये उनके दसों सरदार हैं।

अध्याय 7

1. और बाकी सब ने भी उनके साथ मिलकर पत्नियाँ बना लीं, और हर एक ने अपने लिए एक-एक चुन ली, और वे उनके पास जाने लगे और उनके साथ अपवित्र होने लगे, और उन्होंने उन्हें टोने-टोटके और जड़ काटना सिखाया, और उन्हें पौधों से जान-पहचान कराई।
2. और वे गर्भवती हुईं, और उन्होंने बड़े-बड़े दानवों को जन्म दिया, जिनकी ऊँचाई तीन हज़ार हाथ थी।
3. जिसने इंसानों की सारी कमाई खत्म कर दी। और जब इंसान उन्हें और नहीं संभाल सका,
4. दानव उनके खिलाफ हो गए और इंसानों को खा गए।
5. और वे पक्षियों, जानवरों, रेंगने वाले जानवरों और मछलियों के खिलाफ पाप करने लगे, और एक-दूसरे का मांस खाने और खून पीने लगे।
6. तब पृथ्वी ने अधर्मियों पर दोष लगाया।

अध्याय 8

1. और अज़ाज़ेल ने लोगों को तलवारें, चाकू, ढालें और कवच बनाना सिखाया, और उन्हें धरती की धातुएं और उनसे काम करने की कला, कंगन, गहने, सुरमा का इस्तेमाल, पलकों को सुंदर बनाना, हर तरह के महंगे पत्थर और हर तरह के रंग बनाना सिखाया।
2. और बहुत ज़्यादा नास्तिकता बढ़ी, और उन्होंने बदचलनी की, और वे भटक गए, और अपने सभी कामों में बिगड़ गए। सेमजाज़ा ने जादू-टोना और जड़ काटना सिखाया, अरमारोस ने जादू-टोना ठीक करना सिखाया, बराकिजाल ने ज्योतिष सिखाया, कोकाबेल ने नक्षत्रों का ज्ञान सिखाया, एज़ेकेल ने बादलों का ज्ञान सिखाया, अराकिएल ने धरती के निशान, शम्सीएल ने सूरज के निशान और सारीएल ने चाँद का रास्ता बताया। और जब लोग मर रहे थे, तो वे रो रहे थे, और उनकी चीख आसमान तक पहुँच गई...

अध्याय 9

1. और फिर माइकल, उरीएल, राफेल और गेब्रियल ने स्वर्ग से नीचे देखा और देखा कि धरती पर बहुत खून बह रहा है, और धरती पर हर तरह का अधर्म हो रहा है।
2. और उन्होंने एक दूसरे से कहा: 'पृथ्वी पर कोई नहीं रह गया है, और उनकी रोने की आवाज़ स्वर्ग के दरवाज़ों तक पहुँच रही है।
3. और अब हे स्वर्ग के पवित्र लोगों, तुम्हारे पास मनुष्यों की आत्माएं यह कहते हुए आती हैं, "हमारा मामला सबसे ऊंचे परमेश्वर के सामने लाओ।"
4. और उन्होंने युगों के प्रभु से कहा: 'प्रभुओं के प्रभु, देवताओं के परमेश्वर, राजाओं के राजा, और युगों के परमेश्वर, तेरा महिमा का सिंहासन युगों-युगों तक बना रहेगा, और तेरा नाम युगों-युगों तक पवित्र, गौरवशाली और धन्य रहेगा!
5. सब चीज़ें तूने बनाई हैं, और सब चीज़ों पर तेरा ही अधिकार है: और सब चीज़ें तेरी नज़र में खुली और खुली हैं, और तू सब चीज़ों को देखता है, और कोई भी चीज़ तुझसे छिप नहीं सकती।
6. तुम देख रहे हो कि अज़ाज़ेल ने क्या किया है, जिसने धरती पर सारी बुराई सिखाई है और उन हमेशा रहने वाले राज़ों को बताया है जो स्वर्ग में सुरक्षित थे, जिन्हें लोग जानने की कोशिश कर रहे थे:
7. और सेमजाज़ा को, जिसे तूने अपने साथियों पर राज करने का अधिकार दिया है।
8. और वे धरती पर इंसानों की बेटियों के पास गए, और औरतों के साथ सोए, और खुद को गंदा किया, और उन पर हर तरह के पाप दिखाए।
9. औरतों ने दानवों को जन्म दिया है, और इस तरह पूरी धरती खून और बुराई से भर गई है।

10. और अब, देखो, जो लोग मर चुके हैं उनकी आत्माएं रो रही हैं और स्वर्ग के दरवाज़ों तक अपनी गुहार लगा रही हैं, और उनका विलाप ऊपर तक पहुँच गया है: और धरती पर हो रहे गलत कामों की वजह से यह बंद नहीं हो रहा है।
11. और तू सब बातें होने से पहले ही जानता है, और तू इन बातों को देखता है और इन्हें सहता है, और तू हमें यह नहीं बताता कि इनके बारे में हमें क्या करना चाहिए।'

अध्याय 10

1. तब परमप्रधान, पवित्र और महान परमेश्वर ने कहा, और ऊरीएल को लेमेक के बेटे के पास भेजा, और उससे कहा:
2. नूह के पास जाओ और मेरे नाम से उससे कहो, "छिप जाओ!" और उसे आने वाला अंत बताओ: कि पूरी धरती खत्म हो जाएगी, और पूरी धरती पर एक बाढ़ आने वाली है, और जो कुछ भी उस पर है उसे खत्म कर देगी।
3. और अब उसे निर्देश दो कि वह बच जाए और उसका वंश दुनिया की सभी पीढ़ियों के लिए सुरक्षित रहे।'
4. और फिर प्रभु ने राफेल से कहा: 'अज़ाज़ेल के हाथ-पैर बांधकर उसे अंधेरे में फेंक दो: और दुदाएल में रेगिस्तान में एक रास्ता बनाओ, और उसे उसमें फेंक दो।
5. और उस पर ऊबड़-खाबड़ और नुकीली चट्टानें रख दो, और उसे अंधेरे से ढक दो, और उसे हमेशा वहीं रहने दो, और उसका चेहरा ढक दो ताकि वह रोशनी न देख सके।
6. और बड़े फैसले के दिन उसे आग में डाल दिया जाएगा। और उस धरती को ठीक करो जिसे फरिश्तों ने खराब कर दिया है, और धरती के ठीक होने का ऐलान करो, ताकि वे मुसीबत को ठीक कर सकें, और इंसान के सभी बच्चे उन सभी सीक्रेट बातों से खत्म न हों जिन्हें वॉचर्स ने बताया है और अपने बेटों को सिखाया है।
8. और सारी धरती अज़ाज़ेल के सिखाए कामों की वजह से खराब हो गई है: सारा पाप उसी को दो।'
9. और गेब्रियल से प्रभु ने कहा: 'नाजायज़ और बुरे लोगों, और बदचलन बच्चों के खिलाफ़ कार्रवाई करो: और बदचलन बच्चों और पहरेदारों के बच्चों को इंसानों के बीच से खत्म कर दो और उन्हें बाहर निकाल दो: उन्हें एक दूसरे के खिलाफ़ भेजो ताकि वे लड़ाई में एक दूसरे को खत्म कर दें: क्योंकि उनके दिन लंबे नहीं रहेंगे।
10. और जो कुछ वे, यानी उनके पिता तुमसे मांगेंगे, वह उनके पिता को उनकी तरफ से पूरा नहीं किया जाएगा; क्योंकि वे हमेशा की ज़िंदगी जीने की उम्मीद करते हैं, और उनमें से हर एक पांच सौ साल जिएगा।'
11. और प्रभु ने माइकल से कहा: 'जाओ, सेमजाज़ा और उसके साथियों को बांध दो जिन्होंने औरतों के साथ संबंध बनाए हैं और उनकी सारी गंदगी से खुद को अपवित्र कर लिया है।
12. और जब उनके बेटे एक-दूसरे को मार डालें, और वे अपने प्रियजनों की तबाही देख लें, तो उन्हें सत्तर पीढ़ियों तक धरती की घाटियों में बांधकर रखना, उनके न्याय और उनके अंत के दिन तक, जब तक कि हमेशा-हमेशा के लिए न्याय पूरा न हो जाए।
13. उन दिनों उन्हें आग के गहरे गड्ढे में ले जाया जाएगा: और उस यातना और जेल में जहाँ वे हमेशा के लिए बंद रहेंगे।
14. और जो कोई भी दोषी ठहराया जाएगा और नष्ट किया जाएगा, वह तब से सभी पीढ़ियों के अंत तक उनके साथ बंधा रहेगा।
15. और दुष्टों और पहरेदारों के बच्चों की आत्माओं को नष्ट कर दो, क्योंकि उन्होंने इंसानों के साथ गलत किया है।
16. धरती से सारी बुराई को मिटा दो और हर बुरे काम को खत्म कर दो: और नेकी और सच्चाई का पौधा उगने दो: और यह एक आशीर्वाद साबित होगा; नेकी और सच्चाई के काम हमेशा के लिए सच्चाई और खुशी में लगाए जाएंगे।
17 और तब सभी नेक लोग बच निकलेंगे, और हज़ारों बच्चे पैदा करने तक ज़िंदा रहेंगे, और अपनी जवानी और बुढ़ापे के सारे दिन शांति से बिताएंगे।
18 और तब सारी धरती नेकी से जोती जाएगी, और सब जगह पेड़ लगाए जाएंगे और आशीषों से भर जाएगी।
19. और उस पर सब अच्छे पेड़ लगाए जाएँगे, और उस पर अंगूर की बेलें लगाई जाएँगी; और जो अंगूर की बेलें वे उस पर लगाएँगे, वे बहुत सारा वाइन देंगी, और उस पर बोए गए हर बीज से हज़ार फल मिलेंगे, और जैतून के हर माप से दस कुण्ड तेल मिलेगा।
20. और तू धरती को हर तरह के ज़ुल्म, हर तरह के अधर्म, हर तरह के पाप और हर तरह की बुराई से साफ़ कर; और धरती पर फैली सारी गंदगी को धरती से खत्म कर दे।
21. और सभी इंसान नेक बनेंगे, और सभी देश मेरी पूजा करेंगे और मेरी तारीफ़ करेंगे, और सभी मेरी पूजा करेंगे। और धरती हर गंदगी, और हर पाप, और हर सज़ा, और हर तकलीफ़ से साफ़ हो जाएगी, और मैं उन्हें पीढ़ी-दर-पीढ़ी और हमेशा के लिए इस पर फिर कभी नहीं भेजूंगा।

अध्याय 11

1. और उन दिनों मैं स्वर्ग में आशीर्वाद के भंडार खोलूंगा, ताकि उन्हें इंसानों के काम और मेहनत पर धरती पर उतार सकूं।
2. और सच्चाई और शांति दुनिया के सभी दिनों में और इंसानों की सभी पीढ़ियों में एक साथ जुड़ी रहेंगी।

अध्याय 12

1. इन बातों से पहले हनोक छिपा हुआ था, और किसी को भी नहीं पता था कि वह कहाँ छिपा है, और कहाँ रहता है, और उसका क्या हुआ।
2. और उसके काम पहरेदारों के साथ थे, और उसके दिन पवित्र लोगों के साथ थे।
3. और मैं, हनोक, महान प्रभु और युगों के राजा को आशीर्वाद दे रहा था, और देखो! पहरेदारों ने मुझे हनोक शास्त्री कहा और मुझसे कहा:
4. 'हनोक, हे नेकी के लेखक, जाओ, स्वर्ग के पहरेदारों को बताओ जिन्होंने ऊंचे स्वर्ग को, पवित्र शाश्वत स्थान को छोड़ दिया है, और औरतों के साथ खुद को गंदा कर लिया है, और धरती के बच्चों की तरह किया है, और अपने लिए पत्नियां बना ली हैं: "तुमने धरती पर बहुत बड़ी तबाही मचाई है:
5. और तुम्हें न तो शांति मिलेगी और न ही पापों की क्षमा; और क्योंकि वे अपने बच्चों में आनंदित रहते हैं,

6. वे अपने प्रियजनों की हत्या देखेंगे, और अपने बच्चों की बर्बादी पर विलाप करेंगे, और हमेशा प्रार्थना करेंगे, लेकिन दया और शांति तुम्हें नहीं मिलेगी।''

अध्याय 13

1. और हनोक ने जाकर कहा: 'अज़ाज़ेल, तुम्हें कोई शांति नहीं मिलेगी: तुम्हें जेल में डालने के लिए तुम्हारे खिलाफ़ कड़ी सज़ा दी गई है:
2. और जो बुराई तूने सिखाई है, और जो बुराई, बुराई और पाप के काम तूने लोगों को दिखाए हैं, उसकी वजह से न तो कोई तुम्हें बर्दाश्त करेगा और न ही कोई तुमसे कुछ मांगेगा।
3. तब मैं गया और उन सबसे एक साथ बात की, और वे सब डर गए, और डर और कांपने लगे।
4. और उन्होंने मुझसे गुज़ारिश की कि मैं उनके लिए एक अर्ज़ी तैयार करूँ ताकि उन्हें माफ़ी मिल सके, और मैं उनकी अर्ज़ी स्वर्ग के प्रभु के सामने पढ़ूँ।
5. क्योंकि उसके बाद से वे न तो उससे बात कर सकते थे और न ही अपने पापों की शर्म के कारण स्वर्ग की ओर आँखें उठा सकते थे, जिनके लिए उन्हें सज़ा दी गई थी।
6. फिर मैंने उनकी अर्ज़ी और उनकी आत्माओं और उनके कामों के बारे में उनकी प्रार्थना लिखी और उनकी गुज़ारिशें भी लिखीं कि उन्हें माफ़ी मिले और वे लंबे समय तक जिएं।
7. और मैं गया और दान के पानी के पास, दान की ज़मीन में, हेर्मोन के पश्चिम के दक्षिण में बैठ गया: मैंने उनकी अर्ज़ी तब तक पढ़ी जब तक मैं सो नहीं गया।
8. और देखो, मुझे एक सपना आया, और मुझे कुछ दृश्य दिखाई दिए, और मैंने सज़ा के दृश्य देखे, और एक आवाज़ आई जिसने मुझे कहा कि मैं इसे स्वर्ग के बेटों को बताऊँ, और उन्हें डाँटूँ।
9. और जब मैं जागा, तो उनके पास गया, और देखा कि वे सब लेबनान और सेनेसेर के बीच अबेल्सजाईल में, अपने चेहरे ढके हुए, इकट्ठे बैठे रो रहे थे।
10. और मैंने उन्हें वे सारे दर्शन बताए जो मैंने नींद में देखे थे, और मैं नेकी की बातें कहने लगा, और आसमान के पहरेदारों को डांटने लगा।

अध्याय 14

1. उस दर्शन में पवित्र महान परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार नेकी के वचनों और हमेशा रहने वाले पहरेदारों की फटकार की किताब।
2. मैंने अपनी नींद में देखा कि मैं अब अपनी जीभ और अपने मुंह की सांस से क्या कहूंगा: जिसे महान ने इंसानों को बातचीत करने और दिल से समझने के लिए दिया है।
3. जैसे उसने इंसान को बनाया और उसे ज्ञान की बातें समझने की ताकत दी है, वैसे ही उसने मुझे भी बनाया और मुझे पहरेदारों, यानी स्वर्ग की संतानों को डांटने की ताकत दी है।
4. मैंने तुम्हारी अर्जी लिखी, और मेरे दर्शन में ऐसा दिखाई दिया, कि तुम्हारी अर्जी हमेशा के लिए तुम्हें नहीं दी जाएगी, और तुम्हारे बारे में आखिरकार फैसला हो गया है: हाँ, तुम्हारी अर्जी तुम्हें नहीं दी जाएगी।
5. और अब से तुम हमेशा के लिए स्वर्ग में नहीं चढ़ोगे, और धरती के बंधनों में तुम्हें दुनिया के सभी दिनों के लिए बांधने का आदेश जारी किया गया है।
6. और इससे पहले कि तुम अपने प्यारे बेटों की बर्बादी देखोगे, तुम्हें उनसे कोई खुशी नहीं होगी, बल्कि वे तुम्हारे सामने तलवार से मारे जाएंगे।
7. और उनकी तरफ से तुम्हारी अर्जी न तो मानी जाएगी, और न तुम्हारी अपनी तरफ से: भले ही तुम रोओ और प्रार्थना करो और उन सभी शब्दों को बोलो जो मैंने लिखे हैं।
8. और मुझे यह नज़ारा दिखाया गया: देखो, नज़ारे में बादलों ने मुझे बुलाया और धुंध ने मुझे बुलाया, और तारों और बिजली की चाल ने मुझे तेज़ी से आगे बढ़ाया, और नज़ारे में हवाओं ने मुझे उड़ाया और ऊपर उठाकर स्वर्ग में ले गईं।
9. और मैं अंदर तब तक गया जब तक मैं एक दीवार के पास नहीं पहुँच गया जो क्रिस्टल से बनी थी और आग की लपटों से घिरी हुई थी: और यह मुझे डराने लगा।
10. और मैं आग की लपटों में चला गया और एक बड़े घर के पास पहुँचा जो क्रिस्टल से बना था: और घर की दीवारें क्रिस्टल से बने फर्श की तरह थीं, और इसकी नींव क्रिस्टल की थी।
11. उसकी छत तारों और बिजली के रास्ते जैसी थी, और उनके बीच आग जैसे करूब थे, और उनका आसमान पानी जैसा साफ़ था।
12. दीवारों के चारों ओर धधकती आग थी, और उसके दरवाज़े आग से धधक रहे थे।
13. और मैं उस घर में गया, और वह आग की तरह गर्म और बर्फ की तरह ठंडा था: उसमें जीवन का कोई आनंद नहीं था: डर ने मुझे घेर लिया, और कांपने लगा।
14. और जब मैं कांपने और थरथराने लगा, तो मैं मुंह के बल गिर पड़ा।
15. और मैंने एक सपना देखा, और देखो! एक दूसरा घर था, जो पहले वाले से भी बड़ा था, और पूरा दरवाज़ा मेरे सामने खुला हुआ था, और वह आग की लपटों से बना था।
16. और हर तरह से यह अपनी शान, शान और फैलाव में इतना आगे था कि मैं तुम्हें इसकी शान और फैलाव के बारे में बता नहीं सकता।
17. और उसका फर्श आग का था, और उसके ऊपर बिजलियाँ और तारों का रास्ता था, और उसकी छत भी धधकती हुई आग की थी।
18. और मैंने देखा कि उसमें एक ऊँचा सिंहासन है; उसका रूप क्रिस्टल जैसा था, और उसके पहिए चमकते सूरज जैसे थे, और वहाँ करूबों का दर्शन था।
19. और सिंहासन के नीचे से धधकती आग की धाराएँ निकल रही थीं, जिन्हें मैं देख नहीं सकता था।
20. और महान महिमा उस पर विराजमान थी, और उसका वस्त्र सूर्य से भी अधिक चमकीला था और किसी भी बर्फ से अधिक सफेद था।
21. उसके ऐश्वर्य और तेज के कारण कोई भी स्वर्गदूत भीतर प्रवेश करके उसका मुख न देख सका, और न कोई मनुष्य उसे देख सका।
22. उसके चारों ओर धधकती आग थी, और उसके सामने एक बड़ी आग खड़ी थी, और आस-पास कोई भी उसके पास नहीं आ

सकता था: दस हज़ार गुना दस हज़ार लोग उसके सामने खड़े थे, फिर भी उसे किसी सलाहकार की ज़रूरत नहीं थी।
23. और जो परम पवित्र लोग उसके निकट थे, वे रात को न तो उसे छोड़ते थे और न उससे दूर होते थे।
24. तब तक मैं कांपते हुए मुंह के बल गिरा हुआ था: और प्रभु ने अपने मुंह से मुझे बुलाया, और मुझसे कहा: 'यहाँ आओ, हनोक, और मेरा वचन सुनो।'
25. और पवित्र लोगों में से एक ने मेरे पास आकर मुझे जगाया, और मुझे उठने को कहा, और मैं दरवाज़े के पास गया, और मैंने अपना मुँह नीचे झुकाया।

अध्याय 15

1. और उसने जवाब दिया और मुझसे कहा, और मैंने उसकी आवाज़ सुनी: 'डरो मत, हनोक, तुम नेक आदमी और नेकी के लेखक हो: यहाँ आओ और मेरी आवाज़ सुनो।
2. और जाओ, स्वर्ग के पहरेदारों से कहो, जिन्होंने तुम्हें उनके लिए बीच-बचाव करने के लिए भेजा है: "तुम्हें इंसानों के लिए बीच-बचाव करना चाहिए, न कि इंसानों को तुम्हारे लिए:"
3. तुम क्यों ऊँचे, पवित्र और हमेशा रहने वाले स्वर्ग को छोड़कर औरतों के साथ सोए, और इंसानों की बेटियों के साथ खुद को गंदा किया, और अपनी पत्नियाँ रखीं, और धरती के बच्चों जैसा काम किया, और अपने बेटों के तौर पर दानवों को जन्म दिया?
4. और भले ही तुम पवित्र, आध्यात्मिक और हमेशा की ज़िंदगी जीने वाले थे, फिर भी तुमने औरतों के खून से खुद को गंदा किया है, और मांस के खून से बच्चे पैदा किए हैं, और इंसानों की तरह, तुमने मांस और खून की लालसा की है, जैसा कि वे भी करते हैं जो मरते और खत्म हो जाते हैं।
5. इसलिए मैंने उन्हें पत्नियाँ भी दी हैं ताकि वे उनसे प्रेग्नेंट हों और उनके बच्चे हों, ताकि धरती पर उन्हें किसी चीज़ की कमी न हो।
6. लेकिन तुम पहले आध्यात्मिक थे, हमेशा की ज़िंदगी जी रहे थे, और दुनिया की सभी पीढ़ियों के लिए अमर थे।
7. और इसलिए मैंने तुम्हारे लिए पत्नियाँ नहीं रखीं; क्योंकि स्वर्ग के आत्मिक लोगों का निवास स्वर्ग में है।
8. और अब, जो दानव आत्मा और शरीर से पैदा हुए हैं, उन्हें धरती पर बुरी आत्माएँ कहा जाएगा, और धरती पर उनका निवास होगा।
9. बुरी आत्माएं उनके शरीर से निकली हैं; क्योंकि वे इंसानों से पैदा हुई हैं, और पवित्र पहरेदारों से उनकी शुरुआत और मूल उत्पत्ति है; वे धरती पर बुरी आत्माएं होंगी, और उन्हें बुरी आत्माएं कहा जाएगा।
10. स्वर्ग की आत्माएँ स्वर्ग में रहेंगी, परन्तु पृथ्वी की आत्माएँ जो पृथ्वी पर उत्पन्न हुई हैं, पृथ्वी पर ही रहेंगी।
11. और दानवों की आत्माएं धरती पर दुख पहुंचाती हैं, जुल्म करती हैं, तबाह करती हैं, हमला करती हैं, लड़ाई करती हैं, और तबाही मचाती हैं, और मुसीबत खड़ी करती हैं: वे खाना नहीं खातीं, लेकिन फिर भी भूखी और प्यासी रहती हैं, और जुर्म करती हैं। और ये आत्माएं आदमियों और औरतों के खिलाफ उठेंगी, क्योंकि वे उन्हीं से निकली हैं।

अध्याय 16

1. दानवों के मारे जाने, बर्बाद होने और मौत के दिनों से, जिनके शरीर से आत्माएं निकलकर, बिना सज़ा के खत्म कर देंगी -- इस तरह वे खत्म होने के दिन तक खत्म करती रहेंगी, वह बड़ा सज़ा जिसमें युग खत्म होगा, पहरेदारों और नास्तिकों पर, हाँ, पूरी तरह से खत्म होगा।
2. और अब उन पहरेदारों के बारे में जिन्होंने तुम्हें उनके लिए बीच-बचाव करने के लिए भेजा है, जो पहले स्वर्ग में थे, उनसे कहो:
3. "तुम स्वर्ग में थे, लेकिन सारे राज़ अभी तक तुम पर ज़ाहिर नहीं हुए थे, और तुम बेकार राज़ जानते थे, और तुमने अपने दिल की कठोरता से इन्हें औरतों को बताया, और इन राज़ों के ज़रिए औरतें और मर्द धरती पर बहुत बुरे काम करते हैं।"
4. इसलिए उनसे कहो, "तुम्हें शांति नहीं मिलेगी।"

अध्याय 17

1. और वे मुझे एक ऐसी जगह ले गए जहाँ जो लोग थे वे धधकती आग की तरह थे, और जब वे चाहते थे तो इंसानों के रूप में प्रकट हो जाते थे।
2. और वे मुझे अंधेरे की जगह पर ले गए, और एक पहाड़ पर जिसकी चोटी स्वर्ग तक पहुँचती थी।
3. और मैंने रोशनी की जगहों और तारों और बिजली के खज़ानों को देखा और सबसे गहरी गहराइयों में आग वाला धनुष, तीर, उनका तरकश, आग वाली तलवार और सब तरह की बिजलियाँ थीं।
4. और वे मुझे जीवित जल और पश्चिम की आग के पास ले गए, जो हर सूर्यास्त को सह लेती है।
5. और मैं आग की एक नदी के पास पहुँचा जिसमें आग पानी की तरह बहती है और पश्चिम की ओर विशाल समुद्र में मिल जाती है।
6. मैंने बड़ी नदियाँ देखीं और बड़ी नदी और बड़े अंधकार के पास आया, और उस जगह गया जहाँ कोई प्राणी नहीं चलता।
7. मैंने सर्दियों के अंधेरे के पहाड़ देखे और वह जगह जहाँ से गहरे समुद्र का सारा पानी बहता है।
8. मैंने पृथ्वी की सभी नदियों के मुहाने और गहरे समुद्र के मुहाने को देखा।

अध्याय 18

1. मैंने सभी हवाओं के खज़ाने देखे: मैंने देखा कि कैसे उसने उनसे पूरी सृष्टि और पृथ्वी की मज़बूत नींव तैयार की थी।
2. और मैंने पृथ्वी के कोने का पत्थर देखा: मैंने चारों हवाओं को देखा जो पृथ्वी और आकाश के फ़लक को उठाती हैं।
3. और मैंने देखा कि हवाएँ कैसे आसमान की दीवारों को फैलाती हैं, और आसमान और धरती के बीच उनका ठिकाना होता है: ये आसमान के खंभे हैं।
4. मैंने स्वर्ग की हवाओं को देखा जो घूमती हैं और सूरज और सभी तारों के घेरे को अस्त कर देती हैं।

5. मैंने धरती पर हवाओं को बादलों को ले जाते देखा: मैंने फ़रिश्तों के रास्ते देखे। मैंने धरती के आखिर में ऊपर आसमान का फ़रामान देखा।
6. और मैं आगे बढ़ा और एक जगह देखी जो दिन-रात जलती रहती है, जहाँ शानदार पत्थरों के सात पहाड़ हैं, तीन पूरब की तरफ और तीन दक्षिण की तरफ।
7. और जो पूरब की तरफ़ थे, उनमें से एक रंगीन पत्थर का था, एक मोती का, एक धधकती लकड़ी का, और एक दक्षिण की तरफ़ लाल पत्थर का था।
8. लेकिन बीच वाला पत्थर स्वर्ग तक पहुंचा था, जैसे भगवान का सिंहासन, जो संगमरमर का बना था, और सिंहासन का ऊपरी हिस्सा नीलम का था।
9. और मैंने एक धधकती हुई आग देखी। और इन पहाड़ों के पार एक इलाका है जो बड़ी धरती का आखिरी हिस्सा है: वहाँ आसमान पूरा हुआ।
10. और मैंने एक गहरा गड्ढा देखा, जिसमें आसमान से आग के खंभे थे, और उनके बीच मैंने आग के खंभे गिरते हुए देखे, जो ऊंचाई और गहराई की ओर एक जैसे थे।
11. और उस गहरी खाई के पार मैंने एक ऐसी जगह देखी जिसके ऊपर न तो आसमान था, और न ही उसके नीचे कोई मज़बूत ज़मीन थी: उस पर न पानी था, और न ही कोई पक्षी, बल्कि वह एक सुनसान और डरावनी जगह थी।
12. मैंने वहाँ सात तारे देखे जो बड़े जलते हुए पहाड़ों जैसे थे, और जब मैंने उनके बारे में पूछा,
13. स्वर्गदूत ने कहा: 'यह जगह स्वर्ग और पृथ्वी का अंत है: यह सितारों और स्वर्ग के लोगों के लिए जेल बन गई है।
14. और जो तारे आग पर मंडराते हैं, वे वे हैं जिन्होंने अपने उगने की शुरुआत में प्रभु की आज्ञा का उल्लंघन किया, क्योंकि वे अपने तय समय पर नहीं निकले।
15. और वह उन पर बहुत गुस्सा हुआ, और उन्हें उस समय तक के लिए बांध दिया जब तक कि उनका गुनाह पूरा न हो जाए, यानी दस हज़ार साल के लिए।

अध्याय 19

1. और उरीएल ने मुझसे कहा: 'यहां वे फ़रिश्ते खड़े होंगे जिन्होंने औरतों से रिश्ता बना लिया है, और उनकी आत्माएं कई अलग-अलग रूप लेकर इंसानों को गंदा कर रही हैं और उन्हें देवताओं के तौर पर राक्षसों को बलि चढ़ाने के लिए भटका रही हैं, वे यहां खड़े रहेंगे, उस बड़े फैसले के दिन तक जिसमें उनका फैसला किया जाएगा और जब तक उनका अंत नहीं हो जाता।
2. और जो स्वर्गदूत भटक गए थे उनकी औरतें भी जलपरी बन जाएंगी।'
3. और मैं, हनोक, अकेले ही वह दर्शन, सब बातों का अन्त देखा: और कोई भी मनुष्य वैसा नहीं देखेगा जैसा मैंने देखा है।

अध्याय 20

1. और ये उन पवित्र स्वर्गदूतों के नाम हैं जो देखते रहते हैं।
2. उरीएल, पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, जो दुनिया और टार्टरस पर है।
3. राफेल, पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, जो मनुष्यों की आत्माओं पर अधिकार रखता है।
4. रागुएल, पवित्र स्वर्गदूतों में से एक जो प्रकाशमान दुनिया से बदला लेता है।
5. माइकल, पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, यानी वह जो इंसानियत के सबसे अच्छे हिस्से और अव्यवस्था पर नियुक्त है।
6. सरकाएल, पवित्र फ़रिश्तों में से एक, जो उन रूहों पर हुक्म दिया गया है, जो रूह में गुनाह करते हैं।
7. गेब्रियल, पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, जो स्वर्ग, साँपों और करूबों पर अधिकार रखता है।
8. रेमीएल, पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, जिसे परमेश्वर ने उन लोगों पर नियुक्त किया जो फिर से जी उठेंगे।

अध्याय 21

1. और मैं वहां गया जहां चीजें अस्त-व्यस्त थीं।
2. और मैंने वहाँ कुछ भयानक देखा: मैंने न तो ऊपर कोई स्वर्ग देखा, न ही कोई मज़बूती से बनी धरती, बल्कि एक अस्त-व्यस्त और भयानक जगह देखी।
3. और वहाँ मैंने देखा कि स्वर्ग के सात तारे आपस में बँधे हुए हैं, बड़े पहाड़ों की तरह और आग से जल रहे हैं।
4. तब मैंने कहा: 'वे किस पाप के लिए बंधे हुए हैं, और किस कारण से उन्हें यहाँ फेंका गया है?'
5. तब उरीएल, जो मेरे साथ था और पवित्र स्वर्गदूतों में से एक था, और उनका मुखिया था, ने कहा: 'हनोक, तुम क्यों पूछ रहे हो, और तुम सच्चाई के लिए क्यों उत्सुक हो?
6. ये आकाश के उन तारों में से हैं, जिन्होंने प्रभु की आज्ञा तोड़ी है, और अपने पापों के कारण दस हज़ार साल पूरे होने तक यहीं बंधे हुए हैं।
7. और वहाँ से मैं दूसरी जगह गया, जो पहले वाली जगह से भी ज़्यादा भयानक थी, और मैंने एक भयानक चीज़ देखी: वहाँ एक बहुत बड़ी आग जल रही थी और धधक रही थी, और वह जगह खाई तक फटी हुई थी, आग के बड़े-बड़े खंभों से भरी हुई थी: न तो मैं उसका फैलाव देख पा रहा था और न ही उसका अंदाज़ा लगा पा रहा था।
8. तब मैंने कहा: 'यह जगह कितनी डरावनी है और देखने में कितनी डरावनी है!'
9. तब उरीएल ने, जो मेरे साथ पवित्र स्वर्गदूतों में से एक था, मुझे उत्तर दिया, और मुझसे कहा: 'हनोक, तुम्हें इतना डर और घबराहट क्यों है?' और मैंने उत्तर दिया: 'इस डरावनी जगह के कारण, और दर्द के दृश्य के कारण।'
10. और उसने मुझसे कहा: 'यह जगह स्वर्गदूतों की जेल है, और यहाँ वे हमेशा के लिए कैद रहेंगे।'

अध्याय 22

1. वहां से मैं दूसरी जगह गया, और उसने मुझे पश्चिम में एक और बड़ा और ऊंचा पहाड़ दिखाया जो सख्त चट्टान का था।
2. और उसमें चार खोखले स्थान थे, गहरे, चौड़े और बहुत चिकने। खोखले स्थान देखने में कितने चिकने और गहरे और अँधेरे थे।

3. तब राफेल ने, जो मेरे साथ पवित्र स्वर्गदूतों में से एक था, मुझसे कहा:
4. 'ये खोखली जगहें इसी मकसद से बनाई गई हैं, कि मरे हुए लोगों की आत्माएं यहां इकट्ठा हों, हां, ताकि इंसानों की सभी आत्माएं यहां इकट्ठा हों। और ये जगहें उन्हें उनके फैसले के दिन तक और उनके तय समय तक, जब तक उन पर बड़ा फैसला न आ जाए, तब तक रखने के लिए बनाई गई हैं।'
5. मैंने मरे हुए इंसानों की आत्माओं को देखा, और उनकी आवाज़ स्वर्ग तक गई और प्रार्थना की।
6. तब मैंने राफेल नाम के स्वर्गदूत से पूछा जो मेरे साथ था, और मैंने उससे कहा: 'यह आत्मा - यह किसकी है जिसकी आवाज़ बाहर निकलती है और प्रार्थना करती है?'
7. और उसने मुझे जवाब दिया: 'यह वही आत्मा है जो हाबिल से निकली थी, जिसे उसके भाई कैन ने मार डाला था, और वह उसके खिलाफ तब तक लड़ती रहती है जब तक कि उसका वंश धरती से खत्म न हो जाए, और उसका वंश इंसानों के बीच से खत्म न हो जाए।'
8. तब मैंने इसके बारे में और सभी खोखली जगहों के बारे में पूछा: 'एक को दूसरे से अलग क्यों किया गया?'
9. और उसने मुझे जवाब दिया और मुझसे कहा: 'ये तीनों इसलिए बनाए गए हैं ताकि मरे हुओं की आत्माओं को अलग किया जा सके। और नेक लोगों की आत्माओं के लिए ऐसा बँटवारा किया गया है, जिसमें पानी का चमकीला झरना है।
10. और ऐसा पापियों के लिए बना दिया गया है जब वे मर जाते हैं और धरती में दफ़न हो जाते हैं और उनके जीवनकाल में उन पर न्याय नहीं किया जाता।
11. यहाँ उनकी आत्माएँ इस बड़े दर्द में अलग रखी जाएँगी, जब तक कि न्याय, सज़ा और उन लोगों की पीड़ा का बड़ा दिन न आ जाए जो हमेशा के लिए शाप देते हैं, और उनकी आत्माओं के लिए बदला लिया जाएगा। वहाँ वह उन्हें हमेशा के लिए बाँध देगा।
12. और ऐसा ही बँटवारा उन लोगों की आत्माओं के लिए किया गया है जो अपनी बात मनवाते हैं, जो अपनी तबाही के बारे में बताते हैं, जब वे पापियों के दिनों में मारे गए थे।
13. ऐसा उन लोगों की आत्माओं के लिए किया गया है जो नेक नहीं थे, बल्कि पापी थे, जो पूरी तरह से गुनाहगार थे, और जो गुनाहगार थे। वे साथी होंगे: लेकिन उनकी आत्माएँ न्याय के दिन मारी नहीं जाएँगी और न ही वहाँ से फिर से ज़िंदा होंगी।
14. तब मैंने महिमा के प्रभु को धन्यवाद दिया और कहा: 'धन्य हो मेरे प्रभु, धर्म के प्रभु, जो सदा राज्य करते हैं।'

अध्याय 23

1. वहां से मैं पृथ्वी के छोर के पश्चिम में एक दूसरे स्थान पर चला गया।
2. और मैंने एक जलती हुई आग देखी जो बिना रुके चलती रही, और दिन-रात अपने रास्ते से रुकी नहीं, बल्कि लगातार चलती रही।
3. और मैंने पूछा: 'यह क्या है जो शांत नहीं रहता?'
4. तब रागुएल, जो मेरे साथ पवित्र स्वर्गदूतों में से एक था, ने मुझे जवाब दिया और मुझसे कहा: 'यह आग का रास्ता जो तुमने देखा है, वह पश्चिम की आग है जो स्वर्ग की सभी रोशनी को सताती है।'

अध्याय 24

1. और वहां से मैं धरती पर दूसरी जगह गया, और उसने मुझे आग का एक पहाड़ दिखाया जो दिन-रात जलता रहता था।
2. और मैं उसके आगे गया और सात शानदार पहाड़ देखे जो एक-दूसरे से अलग थे, और उनके पत्थर शानदार और सुंदर थे, कुल मिलाकर शानदार, शानदार दिखने वाले और सुंदर बाहर के: तीन पूरब की ओर, एक दूसरे पर टिका हुआ, और तीन दक्षिण की ओर, एक दूसरे के ऊपर, और गहरी ऊबड़-खाबड़ खाइयाँ, जिनमें से कोई भी किसी दूसरी से जुड़ी नहीं थी।
3. और सातवाँ पहाड़ इनके बीच में था, और वह ऊँचाई में उनसे बड़ा था, और सिंहासन के आसन जैसा था: और सुगंधित पेड़ सिंहासन के चारों ओर थे।
4. और उनमें एक ऐसा पेड़ था जिसकी खुशबू मैंने पहले कभी नहीं ली थी, न ही उनमें से कोई था और न ही कोई और उसके जैसा था: उसकी खुशबू सबसे ज़्यादा थी, और उसके पत्ते, फूल और लकड़ी हमेशा के लिए नहीं मुरझाते: और उसका फल सुंदर था, और उसका फल खजूर जैसा था।
5. तब मैंने कहा: 'यह पेड़ कितना सुंदर और खुशबूदार है, और इसके पत्ते कितने सुंदर हैं, और इसके फूल दिखने में कितने प्यारे हैं।'
6. तब मीकाएल ने, जो मेरे साथ पवित्र और आदरणीय स्वर्गदूतों में से एक था, और उनका नेता था, उत्तर दिया।

अध्याय 25

1. और उसने मुझसे कहा: 'हनोक, तुम मुझसे पेड़ की खुशबू के बारे में क्यों पूछ रहे हो, और तुम सच क्यों जानना चाहते हो?'
2. तब मैंने उसे उत्तर दिया: 'मैं सब कुछ जानना चाहता हूँ, लेकिन विशेष रूप से इस पेड़ के बारे में।'
3. और उसने जवाब दिया: 'यह ऊंचा पहाड़ जिसे तुमने देखा है, जिसकी चोटी भगवान के सिंहासन जैसी है, यह उसका सिंहासन है, जहां पवित्र महान, महिमा का भगवान, शाश्वत राजा, बैठेगा, जब वह अच्छाई के साथ पृथ्वी का दौरा करने के लिए नीचे आएगा।
4. और इस खुशबूदार पेड़ को किसी भी इंसान को बड़े फैसले तक छूने की इजाज़त नहीं है, जब वह सबसे बदला लेगा और सब कुछ हमेशा के लिए खत्म कर देगा। तब यह नेक और पवित्र लोगों को दिया जाएगा।
5. इसका फल चुने हुए लोगों के खाने के लिए होगा: इसे पवित्र जगह में, हमेशा रहने वाले राजा, प्रभु के मंदिर में लगाया जाएगा।
6 तब वे खुशी से झूम उठेंगे और खुश होंगे, और पवित्र जगह में जाएंगे; और उसकी खुशबू उनकी हड्डियों में होगी, और वे धरती पर लंबी उम्र जिएंगे, जैसे तुम्हारे बाप-दादा जिए थे: और उनके दिनों में कोई दुख, मुसीबत, तकलीफ या मुसीबत उन्हें छू नहीं पाएगी।'
7. तब मैंने महिमा के परमेश्वर, सदा के राजा को धन्यवाद दिया, जिसने नेक लोगों के लिए ऐसी चीज़ें तैयार की हैं, और उन्हें बनाया है और उन्हें देने का वादा किया है।

अध्याय 26

1. और मैं वहाँ से धरती के बीच में गया, और मैंने एक पवित्र जगह देखी जिसमें ऐसे पेड़ थे जिनकी डालियाँ थीं और उनमें टूटे हुए पेड़ की तरह फूल खिल रहे थे।
2. और वहां मैंने एक पवित्र पर्वत देखा, और पर्वत के नीचे पूर्व की ओर एक जलधारा थी, जो दक्षिण की ओर बहती थी।
3. और मैंने पूरब की तरफ़ एक और पहाड़ देखा जो इससे भी ऊँचा था, और उनके बीच एक गहरी और पतली खाई थी: उसमें भी पहाड़ के नीचे एक नदी बहती थी।
4. और उसके पश्चिम में एक और पहाड़ था, जो पहले वाले से नीचा और कम ऊंचाई का था, और उनके बीच एक गहरी और सूखी खाई थी: और एक और गहरी और सूखी खाई तीनों पहाड़ों के सिरों पर थी।
5. और सभी नाले गहरे और सँकरे थे, और सख्त चट्टानों से बने थे, और उन पर पेड़ नहीं लगाए गए थे।
6. और मैं चट्टानों पर अचम्भा हुआ, और मैं घाटी पर अचम्भा हुआ, हाँ, मैं बहुत अचम्भा हुआ।

अध्याय 27

1. तब मैंने कहा: 'यह धन्य भूमि, जो पूरी तरह से पेड़ों से भरी है, और बीच में यह शापित घाटी किस काम की है?'
2. तब मेरे साथ मौजूद पवित्र स्वर्गदूतों में से एक, उरीएल ने जवाब दिया: 'यह शापित घाटी उन लोगों के लिए है जो हमेशा के लिए शापित हैं: यहाँ वे सभी शापित लोग इकट्ठा होंगे जो अपने होठों से प्रभु के खिलाफ़ बुरी बातें कहते हैं और उनकी महिमा के बारे में कठोर बातें बोलते हैं। यहाँ वे इकट्ठा होंगे, और यहाँ उनके न्याय की जगह होगी।
3. आखिरी दिनों में उन पर हमेशा के लिए नेक लोगों के सामने नेक इंसाफ़ का तमाशा होगा: यहाँ दयालु लोग महिमा के प्रभु, हमेशा के राजा को आशीर्वाद देंगे।
4. जब पहले वालों पर न्याय का दिन आएगा, तो वे उस दया के लिए उसे धन्यवाद देंगे जिसके अनुसार उसने उन्हें उनका भाग्य दिया है।
5. तब मैंने महिमा के प्रभु को धन्यवाद दिया और उसकी महिमा को प्रकट किया और उसकी महिमापूर्वक प्रशंसा की।

अध्याय 28

1. और वहाँ से मैं पूरब की ओर रेगिस्तान के पहाड़ों के बीच गया, और मैंने एक जंगल देखा जो सुनसान था, पेड़ों और पौधों से भरा हुआ था।
2. और ऊपर से पानी फूट निकला।
3. उत्तर-पश्चिम की ओर बहने वाले एक बड़े झरने की तरह तेज़ी से बहते हुए इसने हर तरफ बादल और ओस बना दी।

अध्याय 29

1. और वहां से मैं रेगिस्तान में दूसरी जगह गया, और इस पहाड़ के पूरब में पहुंचा।
2. और वहाँ मैंने खुशबूदार पेड़ देखे जो लोबान और गंधरस की खुशबू फैला रहे थे, और वे पेड़ भी बादाम के पेड़ जैसे थे।

अध्याय 30

1. और इनके आगे, मैं पूरब की ओर बहुत दूर गया, और मैंने एक और जगह देखी, पानी से भरी एक घाटी।
2. और उसमें एक पेड़ था, जिसका रंग मैस्टिक जैसे खुशबूदार पेड़ों जैसा था।
3. और उन घाटियों के किनारों पर मैंने खुशबूदार दालचीनी देखी। और इनके आगे मैं पूरब की ओर बढ़ गया।

अध्याय 31

1. और मैंने दूसरे पहाड़ देखे, और उनके बीच पेड़ों के झुरमुट थे, और उनसे अमृत बह रहा था, जिसका नाम सरारा और गैलबानम है।
2. और इन पहाड़ों के पार मैंने धरती के छोर के पूरब में एक और पहाड़ देखा, जिस पर एलो के पेड़ थे, और वे सभी पेड़ बादाम के पेड़ों जैसे, कंटीले पत्तों से भरे हुए थे।
3. और जब कोई इसे जलाता था, तो यह किसी भी खुशबूदार गंध से ज़्यादा मीठी महकती थी।

अध्याय 32

1. और इन खुशबूदार महक के बाद, जब मैंने पहाड़ों के ऊपर उत्तर की ओर देखा तो मैंने सात पहाड़ देखे जो बढ़िया नार्ड, खुशबूदार पेड़ों, दालचीनी और काली मिर्च से भरे हुए थे।
2. और वहाँ से मैं इन सभी पहाड़ों की चोटियों पर, धरती के पूरब की ओर बहुत दूर चला गया, और एरिथ्रियन समुद्र के ऊपर से गुज़रा और उससे बहुत दूर चला गया, और देवदूत ज़ोटील के ऊपर से गुज़रा।
3. और मैं नेकी के बगीचे में आया, और उन पेड़ों के पार वहाँ बहुत सारे बड़े पेड़ उगते हुए देखे, जिनमें अच्छी खुशबू थी, बड़े, बहुत सुंदर और शानदार, और ज्ञान का पेड़ था जिसका फल वे खाते हैं और बहुत ज्ञान पाते हैं।
4. वह पेड़ ऊंचाई में देवदार जैसा है, और उसके पत्ते कैरब पेड़ जैसे हैं: और उसका फल बेल के गुच्छों जैसा बहुत सुंदर है: और पेड़ की खुशबू दूर तक फैलती है।
5. तब मैंने कहा: 'यह पेड़ कितना सुंदर है, और इसका रूप कितना आकर्षक है!'
6. तब पवित्र देवदूत राफेल ने, जो मेरे साथ था, मुझे जवाब दिया और कहा: 'यह ज्ञान का पेड़ है, जिसका फल तुम्हारे बूढ़े पिता और तुम्हारी बूढ़ी माँ ने खाया था, जो तुमसे पहले थे, और उन्होंने ज्ञान सीखा और उनकी आँखें खुल गईं, और उन्होंने जाना कि वे नंगे थे और उन्हें बगीचे से निकाल दिया गया था।'

अध्याय 33

1. और वहाँ से मैं धरती के कोने-कोने तक गया और वहाँ बड़े-बड़े जानवर देखे, और हर एक दूसरे से अलग था; और मैंने

पक्षियों को भी देखा जो दिखने, सुंदरता और आवाज़ में अलग-अलग थे, एक दूसरे से अलग था।
2. और उन जानवरों के पूरब में मैंने धरती के वो कोने देखे जहाँ आसमान है, और आसमान के दरवाज़े खुले हुए थे।
3. और मैंने देखा कि आसमान के तारे कैसे निकलते हैं, और मैंने उन दरवाज़ों को गिना जिनसे वे निकलते हैं, और हर तारे के सभी आउटलेट्स को, उनकी संख्या और उनके नाम, उनके रास्ते और उनकी जगह, और उनके समय और उनके महीनों के हिसाब से लिखा, जैसा कि मेरे साथ रहने वाले पवित्र देवदूत उरीएल ने मुझे दिखाया था।
4. उसने मुझे सब कुछ दिखाया और मेरे लिए लिख दिया: उसने उनके नाम भी मेरे लिए लिखे, और उनके नियम और उनकी कंपनियाँ भी।

अध्याय 34

1. और वहां से मैं उत्तर की ओर पृथ्वी के छोर तक गया, और वहां मैंने पूरी पृथ्वी के छोर पर एक बड़ा और शानदार यंत्र देखा।
2. और यहाँ मैंने स्वर्ग में स्वर्ग के तीन द्वार खुले देखे: उनमें से हर एक से उत्तर की हवाएँ आती हैं: जब वे चलती हैं तो ठंड, ओले, पाला, बर्फ़, ओस और बारिश होती है।
3. और एक द्वार से तो वे भलाई के लिये फूँकते हैं, परन्तु जब वे दूसरे दो द्वारों से फूँकते हैं, तो पृथ्वी पर हिंसा और क्लेश के साथ फूँकते हैं, और वे हिंसा के साथ फूँकते हैं।

अध्याय 35

1. और वहां से मैं पश्चिम की ओर पृथ्वी के छोर तक गया, और वहां स्वर्ग के तीन द्वार खुले देखे, जैसे मैंने पूर्व में देखे थे, उतने ही द्वार और उतने ही निकास।

अध्याय 36

1. और वहाँ से मैं दक्षिण में पृथ्वी के छोर तक गया, और वहाँ स्वर्ग के तीन खुले द्वार देखे: और वहाँ से ओस, वर्षा और हवा आती थी।
2. और वहाँ से मैं पूरब की ओर स्वर्ग के छोर तक गया, और यहाँ स्वर्ग के तीन पूरब के दरवाज़े खुले हुए देखे और उनके ऊपर छोटे-छोटे दरवाज़े थे।
3. इन छोटे-छोटे दरवाज़ों से आसमान के तारे गुज़रते हैं और उन्हें दिखाए गए रास्ते पर पश्चिम की ओर चलते हैं।
4. और जितनी बार मैंने देखा, मैंने हमेशा महिमा के प्रभु को आशीर्वाद दिया, और मैं महिमा के प्रभु को आशीर्वाद देता रहा जिसने महान और शानदार चमत्कार किए हैं, ताकि वह अपने काम की महानता को फ़रिश्तों और आत्माओं और इंसानों को दिखा सके, ताकि वे उसके काम और उसकी सारी रचना की तारीफ़ कर सकें: ताकि वे उसकी शक्ति के काम को देख सकें और उसके हाथों के महान काम की तारीफ़ कर सकें और उसे हमेशा के लिए आशीर्वाद दे सकें।

अध्याय 37

1. दूसरा दर्शन जो उसने देखा, वह ज्ञान का दर्शन था - जिसे हनोक ने देखा, जो येरेद का पुत्र था, जो महललेल का पुत्र था, जो केनान का पुत्र था, जो एनोस का पुत्र था, जो शेत का पुत्र था, और जो आदम का पुत्र था।
2. और यह उन ज्ञान की बातों की शुरुआत है जिन्हें मैंने धरती पर रहने वालों से कहने के लिए अपनी आवाज़ उठाई थी: हे पुराने ज़माने के लोगों, सुनो, और हे बाद में आने वालों, पवित्र आत्मा के वचनों को देखो जो मैं आत्माओं के प्रभु के सामने कहूँगा।
3. बेहतर होता कि हम उन्हें सिर्फ़ पुराने ज़माने के लोगों को ही बताते, लेकिन जो बाद में आएंगे उनसे भी हम समझदारी की शुरुआत को नहीं रोकेंगे।
4. आज तक आत्माओं के प्रभु ने मुझे ऐसी बुद्धि कभी नहीं दी, जैसी मुझे मेरी समझ के अनुसार, आत्माओं के प्रभु की अच्छी इच्छा के अनुसार मिली है, जिनके द्वारा मुझे अनंत जीवन का भाग्य दिया गया है।
5. अब मुझे तीन दृष्टांत बताए गए, और मैंने ऊँची आवाज़ में उन्हें धरती पर रहने वालों को सुनाया।

अध्याय 38

1. पहली कहानी: जब नेक लोगों की मंडली आएगी, और पापियों को उनके पापों का न्याय मिलेगा, और उन्हें धरती से भगा दिया जाएगा:
2. और जब नेक इंसान नेक लोगों की आँखों के सामने आएगा, जिनके चुने हुए काम रूहों के मालिक पर टिके हैं, और नेक लोगों और धरती पर रहने वाले चुने हुए लोगों को रोशनी दिखेगी, तो फिर गुनाहगारों का घर कहाँ होगा, और उन लोगों के आराम की जगह कहाँ होगी जिन्होंने रूहों के मालिक को मना कर दिया है? उनके लिए अच्छा होता अगर वे पैदा ही न हुए होते।
3. जब नेक लोगों के राज़ खुल जाएँगे और पापियों का इंसाफ़ होगा, और नास्तिकों को नेक और चुने हुए लोगों के सामने से भगा दिया जाएगा,
4. उस समय से पृथ्वी के अधिकारी शक्तिशाली और महान नहीं रहेंगे: और वे पवित्र लोगों का चेहरा नहीं देख पाएंगे, क्योंकि आत्माओं के प्रभु ने पवित्र, धर्मी और चुने हुए लोगों के चेहरे पर अपना प्रकाश प्रकट किया है।
5. तब राजा और शक्तिशाली लोग नष्ट हो जाएंगे और धर्मी और पवित्र लोगों के हाथों में सौंप दिए जाएंगे।
6. और इसके बाद कोई भी अपने लिए रूहों के मालिक से दया नहीं मांगेगा क्योंकि उनकी ज़िंदगी खत्म हो चुकी है।

अध्याय 39

1. और उन दिनों ऐसा होगा कि चुने हुए और पवित्र बच्चे ऊंचे स्वर्ग से उतरेंगे, और उनका वंश इंसानों के बच्चों के साथ एक हो जाएगा।
2. और उन दिनों में हनोक को जोश और गुस्से की किताबें, और बेचैनी और निकालने की किताबें मिलीं। और उन पर दया नहीं की जाएगी, आत्माओं का प्रभु कहता है।

3. और उन दिनों एक बवंडर ने मुझे धरती से उठा लिया, और आसमान के कोने पर बिठा दिया।
4. और वहाँ मैंने एक और दर्शन देखा, पवित्र लोगों के निवास स्थान, और धर्मियों के विश्राम स्थान।
5. यहाँ मेरी आँखों ने उनके रहने की जगहें उसके नेक फ़रिश्तों के साथ, और उनके आराम की जगहें पवित्र लोगों के साथ देखीं। और उन्होंने इंसानों के बच्चों के लिए गुज़ारिश की, दुआ की और प्रार्थना की, और नेकी उनके सामने पानी की तरह बही, और दया धरती पर ओस की तरह बही: ऐसा ही उनके बीच हमेशा और हमेशा के लिए है।
6a. और उस जगह मेरी आँखों ने नेकी और विश्वास के चुने हुए को देखा,
7a. और मैंने उसका निवास स्थान आत्माओं के प्रभु के पंखों के नीचे देखा।
6b. और उसके दिनों में नेकी बनी रहेगी, और नेक और चुने हुए लोग उसके सामने हमेशा-हमेशा तक अनगिनत रहेंगे।
7b. और उसके सामने सभी नेक और चुने हुए लोग आग की तरह मज़बूत होंगे, और उनके मुँह आशीर्वाद से भरे होंगे, और उनके होंठ आत्माओं के प्रभु के नाम की तारीफ़ करेंगे, और उसके सामने नेकी कभी कम नहीं होगी, और उसके सामने सच्चाई कभी कम नहीं होगी।
8. मैं वहीं रहना चाहता था, और मेरी आत्मा उस निवास स्थान के लिए तरसती थी: और वहाँ पहले से ही मेरा भाग रहा है, क्योंकि आत्माओं के प्रभु के सामने मेरे लिए ऐसा ही तय किया गया है।
9. उन दिनों में मैंने आत्माओं के प्रभु के नाम की तारीफ़ और बड़ाई की, आशीर्वाद और तारीफ़ के साथ, क्योंकि उसने मुझे आत्माओं के प्रभु की अच्छी मर्ज़ी के अनुसार आशीर्वाद और महिमा के लिए ठहराया था।
10. बहुत देर तक मेरी आँखें उस जगह पर लगी रहीं, और मैंने उसे आशीर्वाद दिया और उसकी तारीफ़ करते हुए कहा: 'वह धन्य है, और वह शुरू से और हमेशा के लिए धन्य रहे।
11. और उसके सामने कभी खत्म नहीं होता। दुनिया बनने से पहले ही वह जानता है कि क्या हमेशा के लिए है और क्या पीढ़ी दर पीढ़ी रहेगा।
12. जो लोग सोते नहीं हैं वे तुझे आशीर्वाद देते हैं: वे तेरी महिमा के सामने खड़े होकर आशीर्वाद देते हैं, तारीफ़ करते हैं और बड़ाई करते हुए कहते हैं: "पवित्र, पवित्र, पवित्र, आत्माओं का प्रभु है: वह पृथ्वी को आत्माओं से भर देता है।"
13. और यहाँ मेरी आँखों ने उन सभी को देखा जो सोते नहीं थे: वे उसके सामने खड़े होकर आशीर्वाद देते हैं और कहते हैं: 'तू धन्य हो, और प्रभु का नाम सदा सर्वदा धन्य रहे।'
14. और मेरा चेहरा बदल गया; क्योंकि मैं अब और देख नहीं सकता था।

अध्याय 40

1. और उसके बाद मैंने लाखों-करोड़ों और लाखों-करोड़ों को देखा, मैंने एक ऐसी भीड़ देखी जो गिनती और गिनती से परे थी, जो आत्माओं के प्रभु के सामने खड़ी थी।
2. और आत्माओं के प्रभु के चारों तरफ मैंने चार मौजूदगी देखीं, जो उनसे अलग थीं जो सोते नहीं हैं, और मैंने उनके नाम जान लिए: क्योंकि जो स्वर्गदूत मेरे साथ गया था, उसने मुझे उनके नाम बताए, और मुझे सब छिपी हुई बातें दिखाईं।
3. और मैंने उन चारों की आवाज़ें सुनीं, जब वे महिमा के प्रभु के सामने तारीफ़ कर रहे थे।
4. पहली आवाज़ आत्माओं के प्रभु को सदा सर्वदा आशीर्वाद देती है।
5. और दूसरी आवाज़ जो मैंने सुनी, वह चुने हुए को और उन चुने हुए लोगों को आशीर्वाद दे रही थी जो आत्माओं के प्रभु पर निर्भर हैं।
6. और तीसरी आवाज़ जो मैंने सुनी, वह थी धरती पर रहने वालों के लिए प्रार्थना और बीच-बचाव करना और आत्माओं के प्रभु के नाम पर विनती करना।
7. और मैंने चौथी आवाज़ सुनी जो शैतानों को भगा रही थी और उन्हें रूहों के मालिक के सामने आने से मना कर रही थी ताकि वे धरती पर रहने वालों पर इल्ज़ाम लगा सकें।
8. उसके बाद मैंने शांति के उस दूत से पूछा जो मेरे साथ था, जिसने मुझे सब कुछ दिखाया जो छिपा हुआ था: 'ये चार लोग कौन हैं जिन्हें मैंने देखा है और जिनकी बातें मैंने सुनी हैं और लिखी हैं?'
9. और उसने मुझसे कहा: 'पहला है माइकल, जो दयालु और सहनशील है: और दूसरा, जो इंसानों की सभी बीमारियों और सभी घावों का अधिकारी है, वह है राफेल: और तीसरा, जो सभी शक्तियों का अधिकारी है, वह है गेब्रियल: और चौथा, जो हमेशा की ज़िंदगी पाने वालों के लिए उम्मीद के साथ पश्चाताप का अधिकारी है, उसका नाम है फनूएल।' और ये आत्माओं के प्रभु के चार फ़रिश्ते और वे चार आवाज़ें हैं जो मैंने उन दिनों सुनी थीं।

अध्याय 41

1. और उसके बाद मैंने स्वर्ग के सारे राज़ देखे, और यह भी कि राज्य कैसे बँटा हुआ है, और इंसानों के कामों को कैसे तराजू में तौला जाता है।
2. और वहाँ मैंने चुने हुए लोगों के घर और पवित्र लोगों के घर देखे, और मेरी आँखों ने देखा कि वहाँ से सभी पापियों को निकाला जा रहा है जो आत्माओं के प्रभु के नाम को नकारते हैं, और घसीटकर ले जाया जा रहा है: और वे आत्माओं के प्रभु की सज़ा के कारण वहाँ नहीं रह सके।
3. और वहाँ मेरी आँखों ने बिजली और गरज के राज़, और हवाओं के राज़ देखे, कि वे धरती पर कैसे बहती हैं, और बादलों और ओस के राज़, और वहाँ मैंने देखा कि वे उस जगह कहाँ से आते हैं और कहाँ से वे धूल भरी धरती को भिगो देते हैं।
4. और वहाँ मैंने बंद कमरे देखे जिनसे हवाएँ बँट जाती हैं, ओलों और हवाओं का कमरा, धुंध और बादलों का कमरा, और उसका बादल दुनिया की शुरुआत से धरती पर मंडराता रहता है।
5. और मैंने सूरज और चाँद के कमरे देखे, जहाँ से वे निकलते हैं और जहाँ वे वापस आते हैं, और उनकी शानदार वापसी, और कैसे एक दूसरे से बेहतर है, और उनका शानदार चक्कर, और कैसे वे अपना चक्कर नहीं छोड़ते, और वे अपने चक्कर में कुछ नहीं जोड़ते और उससे कुछ नहीं लेते, और वे एक-दूसरे पर भरोसा रखते हैं, उस कसम के अनुसार जिससे वे एक साथ बंधे हैं।

6. और सबसे पहले सूरज निकलता है और रूहों के मालिक की आज्ञा के अनुसार अपना रास्ता तय करता है, और उसका नाम हमेशा-हमेशा के लिए ताकतवर है।
7. और उसके बाद मैंने चाँद का छिपा हुआ और दिखने वाला रास्ता देखा, और वह उस जगह पर दिन और रात अपना रास्ता पूरा करती है - एक आत्मा के प्रभु के सामने दूसरे के आमने-सामने खड़ा रहता है। और वे धन्यवाद और तारीफ़ करते हैं और आराम नहीं करते; क्योंकि उन्हें धन्यवाद देने वाला आराम उन्हीं के लिए है।
8. क्योंकि सूरज अक्सर आशीर्वाद या श्राप के लिए बदलता है, और चाँद का रास्ता नेक लोगों के लिए रोशनी और पापियों के लिए अंधेरा है, प्रभु के नाम पर, जिसने रोशनी और अंधेरे के बीच फर्क किया, और इंसानों की आत्माओं को अलग किया, और नेक लोगों की आत्माओं को मज़बूत किया, अपनी नेकी के नाम पर।
9. क्योंकि न तो कोई फ़रिश्ता रोकता है, और न कोई ताकत रोक सकती है; क्योंकि वह उन सबके लिए एक जज नियुक्त करता है, और वह अपने सामने उन सबका न्याय करता है।

अध्याय 42

1. बुद्धि को रहने के लिए कोई जगह नहीं मिली; फिर उसे स्वर्ग में रहने की जगह दी गई।
2. बुद्धि इंसानों के बीच रहने के लिए निकली, पर उसे कोई ठिकाना नहीं मिला: बुद्धि अपनी जगह पर लौट आई, और फ़रिश्तों के बीच बैठ गई।
3. और अधर्म उसके कमरों से निकला: जिसे उसने नहीं ढूँढ़ा, उसे पाया, और उनके साथ रहने लगी, जैसे रेगिस्तान में बारिश, और प्यासी ज़मीन पर ओस।

अध्याय 43

1. और मैंने दूसरी बिजलियाँ और आकाश के तारे देखे, और मैंने देखा कि उसने उन सभी को उनके नामों से कैसे पुकारा और उन्होंने उसकी बात मानी।
2. और मैंने देखा कि कैसे उन्हें रोशनी के अनुपात के हिसाब से सही तराजू में तौला जाता है: मैंने उनके बीच की जगह की चौड़ाई और उनके दिखने का दिन देखा, और उनके घूमने से बिजली कैसे निकलती है: और मैंने देखा कि उनका घूमना फ़रिश्तों की गिनती के हिसाब से होता है, और वे एक-दूसरे पर कैसे भरोसा रखते हैं।
3. और मैंने उस स्वर्गदूत से जो मेरे साथ था और जिसने मुझे छिपी हुई चीज़ें दिखाई थीं, पूछा: 'ये क्या हैं?'
4. और उसने मुझसे कहा: 'आत्माओं के प्रभु ने तुम्हें उनका मतलब बताया है: ये उन पवित्र लोगों के नाम हैं जो धरती पर रहते हैं और आत्माओं के प्रभु के नाम पर हमेशा-हमेशा तक विश्वास करते हैं।'

अध्याय 44

बिजली के बारे में मैंने एक और बात देखी: कैसे कुछ तारे उगते हैं और बिजली बन जाते हैं और अपने नए रूप से अलग नहीं हो पाते।

अध्याय 45

1. और यह दूसरी कहानी उन लोगों के बारे में है जो पवित्र लोगों के निवास और आत्माओं के प्रभु के नाम को अस्वीकार करते हैं।
2. और वे स्वर्ग में नहीं चढ़ेंगे, और पृथ्वी पर नहीं आएंगे: पापियों का यही भाग्य होगा, जिन्होंने आत्माओं के प्रभु के नाम को अस्वीकार किया है, जो इस प्रकार दुख और क्लेश के दिन के लिए सुरक्षित हैं।
3. उस दिन मेरा चुना हुआ महिमा के सिंहासन पर बैठेगा, और उनके कामों को परखेगा, और उनके आराम करने की जगहें अनगिनत होंगी। और जब वे मेरे चुने हुए लोगों को, और उन लोगों को जिन्होंने मेरे शानदार नाम को पुकारा है, देखेंगे तो उनकी आत्माएँ उनके अंदर मज़बूत होंगी:
4. तब मैं अपने चुने हुए को उनके बीच रहने दूँगा। और मैं स्वर्ग को बदल दूँगा और उसे हमेशा की आशीष और रोशनी बना दूँगा।
5. और मैं धरती को बदल दूँगा और उसे आशीर्वाद दूँगा: और मैं अपने चुने हुए लोगों को उस पर रहने दूँगा: लेकिन पापी और बुरे लोग उस पर पैर नहीं रखेंगे।
6. क्योंकि मैंने अपने नेक लोगों को शांति दी है और उन्हें खुश किया है, और उन्हें अपने सामने रहने दिया है: लेकिन पापियों के लिए मेरे पास इंसाफ़ का समय है, ताकि मैं उन्हें धरती से मिटा दूँ।

अध्याय 46

1. और वहाँ मैंने एक को देखा जिसका सिर दिनों का था, और उसका सिर ऊन की तरह सफेद था, और उसके साथ एक और प्राणी था जिसका चेहरा इंसान जैसा था, और उसका चेहरा पवित्र स्वर्गदूतों में से एक की तरह कृपा से भरा हुआ था।
2. और मैंने उस फ़रिश्ते से पूछा जो मेरे साथ गया था और जिसने मुझे उस इंसान के बेटे के बारे में सारी छिपी हुई बातें दिखाईं, कि वह कौन था, और कहाँ से आया था, और वह दिनों के सरदार के साथ क्यों गया था? और उसने जवाब दिया और मुझसे कहा: यह इंसान का बेटा है जिसके पास नेकी है, जिसके साथ नेकी रहती है, और जो सारी छिपी हुई चीज़ों के खज़ाने दिखाता है,
3. क्योंकि आत्माओं के प्रभु ने उसे चुना है, और उसका भाग आत्माओं के प्रभु के सामने सदा के लिए सीधाई में श्रेष्ठ है।
4. और यह इंसान का बेटा जिसे तूने देखा है, राजाओं और ताकतवरों को उनकी सीटों से और ताकतवरों को उनकी गद्दी से उठाएगा, और ताकतवरों की लगाम ढीली करेगा, और पापियों के दांत तोड़ देगा।
5. और वह राजाओं को उनके सिंहासन और राज्यों से नीचे गिरा देगा, क्योंकि वे उसकी बड़ाई और तारीफ़ नहीं करते, और न ही विनम्रता से यह मानते हैं कि राज्य उन्हें कहाँ से मिला।
6. और वह ताकतवरों के चेहरे पर उदासी ला देगा, और उन्हें शर्म से भर देगा। और अंधेरा उनका ठिकाना होगा, और कीड़े उनका बिस्तर होंगे, और उन्हें अपने बिस्तर से उठने की कोई उम्मीद नहीं होगी, क्योंकि वे आत्माओं के प्रभु के नाम की बड़ाई नहीं करते।
7. और ये वे लोग हैं जो आसमान के तारों का न्याय करते हैं, और सबसे ऊँचे के खिलाफ हाथ उठाते हैं, और धरती पर चलते हैं

और उस पर रहते हैं। और उनके सारे काम गलत काम दिखाते हैं, और उनकी ताकत उनके पैसे पर टिकी होती है, और उनका विश्वास उन देवताओं पर होता है जिन्हें उन्होंने अपने हाथों से बनाया है, और वे आत्माओं के प्रभु के नाम को नकारते हैं,
8. और वे उसकी सभाओं के घरों को, और उन वफ़ादारों को जो रूहों के मालिक के नाम पर भरोसा रखते हैं, सताते हैं।

अध्याय 47

1. और उन दिनों में नेक लोगों की प्रार्थना, और नेक लोगों का खून धरती से आत्माओं के प्रभु के सामने पहुँच जाएगा।
2. उन दिनों ऊपर स्वर्ग में रहने वाले पवित्र लोग एक आवाज़ में एक साथ मिलकर विनती करेंगे, प्रार्थना करेंगे और तारीफ़ करेंगे, और आत्माओं के प्रभु के नाम का धन्यवाद करेंगे और उसे धन्य कहेंगे, नेक लोगों के बहाए गए खून के लिए, और ताकि नेक लोगों की प्रार्थना आत्माओं के प्रभु के सामने बेकार न जाए, ताकि उनका इंसाफ़ हो सके, और उन्हें हमेशा के लिए दुख न सहना पड़े।
3. उन दिनों मैंने दिनों के मुखिया को देखा, जब वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठा था, और जीवितों की किताबें उसके सामने खोली गईं: और ऊपर स्वर्ग में उसकी सारी सेना और उसके सलाहकार उसके सामने खड़े थे,
4. और पवित्र लोगों के दिल खुशी से भर गए; क्योंकि नेक लोगों की गिनती पूरी हो चुकी थी, और नेक लोगों की प्रार्थना सुन ली गई थी, और नेक लोगों का खून आत्माओं के प्रभु के सामने हिसाब में लिया गया था।

अध्याय 48

1. और उस जगह मैंने नेकी का वह झरना देखा जो कभी खत्म नहीं होता था: और उसके चारों ओर समझदारी के बहुत से झरने थे; और सभी प्यासे उनसे पीते थे, और समझदारी से भर जाते थे, और उनके रहने की जगह नेक, पवित्र और चुने हुए लोगों के साथ थी।
2. और उसी समय मनुष्य के पुत्र का नाम आत्माओं के प्रभु के सामने रखा गया, और उसका नाम दिनों के मुखिया के सामने रखा गया।
3. हाँ, सूरज और निशानियों के बनने से पहले, आसमान के तारे बनने से पहले, उसका नाम रूहों के मालिक के सामने रखा गया था।
4. वह नेक लोगों के लिए सहारा होगा जिस पर वे टिके रहेंगे और गिरेंगे नहीं, और वह गैर-यहूदियों के लिए रोशनी और परेशान मन वालों के लिए उम्मीद होगा।
5. धरती पर रहने वाले सभी लोग उसके सामने झुककर उसकी पूजा करेंगे, और आत्माओं के प्रभु की तारीफ़ करेंगे, आशीर्वाद देंगे और गीत गाकर जश्न मनाएंगे।
6. और इसी कारण से वह चुना गया और जगत की सृष्टि से पहिले और सदा के लिये उसके साम्हने छिपा हुआ है।
7. और आत्माओं के प्रभु की बुद्धि ने उसे पवित्र और नेक लोगों पर ज़ाहिर किया है; क्योंकि उसने नेक लोगों का भाग्य सुरक्षित रखा है, क्योंकि उन्होंने इस अधर्म की दुनिया से नफ़रत और तिरस्कार किया है, और आत्माओं के प्रभु के नाम पर इसके सभी कामों और तरीकों से नफ़रत की है: क्योंकि उसके नाम से वे बचाए गए हैं, और उनकी ज़िंदगी के मामले में उसकी अच्छी मर्ज़ी के अनुसार हुआ है।
8. इन दिनों में धरती के राजा उदास हो जाएँगे, और जो ताकतवर लोग देश पर कब्ज़ा करते हैं, वे अपने हाथों के कामों की वजह से उदास हो जाएँगे; क्योंकि अपनी तकलीफ़ और परेशानी के दिन वे खुद को बचा नहीं पाएँगे।
9. और मैं उन्हें अपने चुने हुए लोगों के हाथों में सौंप दूँगा: जैसे आग में भूसा वैसे ही वे पवित्र लोगों के सामने जल जाएँगे; जैसे पानी में सीसा, वे नेक लोगों के सामने डूब जाएँगे, और उनका कोई निशान फिर कभी नहीं मिलेगा।
10. और उनके दुख के दिन धरती पर आराम होगा, और उनके सामने वे गिरेंगे और फिर नहीं उठेंगे: और कोई नहीं होगा जो उन्हें अपने हाथों से उठाए और उठाए: क्योंकि उन्होंने आत्माओं के प्रभु और उनके चुने हुए को नकार दिया है। आत्माओं के प्रभु का नाम धन्य हो।

अध्याय 49

क्योंकि बुद्धि पानी की तरह बहाई जाती है, और महिमा उसके सामने सदा तक फीकी नहीं पड़ती।
2. क्योंकि वह नेकी के सारे राज़ों में ताकतवर है, और बुराई एक परछाई की तरह गायब हो जाएगी, और टिकेगी नहीं; क्योंकि चुना हुआ इंसान रूहों के मालिक के सामने खड़ा है, और उसकी शान हमेशा-हमेशा के लिए है, और उसकी ताकत हर पीढ़ी तक रहेगी।
3. और उसमें बुद्धि की आत्मा, और अंतर्दृष्टि देने वाली आत्मा, और समझ और पराक्रम की आत्मा, और उन लोगों की आत्मा जो धार्मिकता में सो गए हैं, वास करती है।
4. और वह गुप्त बातों का न्याय करेगा, और कोई भी उसके सामने झूठ नहीं बोल पाएगा; क्योंकि वह आत्माओं के प्रभु के सामने उसकी इच्छा के अनुसार चुना हुआ है।

अध्याय 50

1. और उन दिनों पवित्र और चुने हुए लोगों के लिए बदलाव होगा, और दिनों की रोशनी उन पर बनी रहेगी, और पवित्र लोगों को महिमा और सम्मान मिलेगा,
2. मुसीबत के दिन, जब पापियों के खिलाफ बुराई जमा की जाएगी। और नेक लोग रूहों के मालिक के नाम से जीतेंगे: और वह दूसरों को यह गवाही देगा ताकि वे माफ़ी मांगें और अपने हाथों के कामों को छोड़ दें।
3. आत्माओं के प्रभु के नाम से उन्हें कोई आदर नहीं मिलेगा, फिर भी उसके नाम से वे बच जाएंगे, और आत्माओं का प्रभु उन पर दया करेगा, क्योंकि उसकी दया बड़ी है।
4. और वह अपने न्याय में भी नेक है, और उसकी महिमा के सामने अधर्म भी टिक नहीं पाएगा: उसके न्याय के समय जो पछतावे नहीं करते वे उसके सामने नाश हो जाएंगे।
5. और अब से मैं उन पर कोई दया नहीं करूंगा, आत्माओं का प्रभु कहता है।

अध्याय 51

1. और उन दिनों में पृथ्वी वह लौटा देगी जो उसे सौंपा गया है, और अधोलोक भी वह लौटा देगा जो उसे मिला है, और नरक वह लौटा देगा जो उसका ऋणी है।
2. और वह उनमें से नेक और पवित्र लोगों को चुनेगा, क्योंकि वह दिन निकट आ गया है जब वे बचाए जाएंगे।
3. और उन दिनों में चुना हुआ मेरे सिंहासन पर बैठेगा, और उसका मुँह ज्ञान और सलाह के सारे राज़ खोलेगा: क्योंकि आत्माओं के प्रभु ने उन्हें उसे दिया है और उसे महिमा दी है।
4. और उन दिनों पहाड़ मेढ़ों की तरह उछलेंगे, और पहाड़ियाँ भी दूध पीकर तृप्त मेमनों की तरह उछलेंगी, और स्वर्ग के सभी स्वर्गदूतों के चेहरे खुशी से खिल उठेंगे।
5. क्योंकि उन दिनों में चुना हुआ उठेगा, और पृथ्वी आनन्दित होगी, और धर्मी उस पर बसे रहेंगे, और चुने हुए उस पर चलेंगे।

अध्याय 52

और उन दिनों के बाद उस जगह पर जहाँ मैंने उन सभी छिपे हुए दृश्यों को देखा था - क्योंकि मैं एक बवंडर में बह गया था और वे मुझे पश्चिम की ओर ले गए थे।
2. वहाँ मेरी आँखों ने स्वर्ग की सभी गुप्त चीज़ें देखीं, जो होंगी, लोहे का पहाड़, और तांबे का पहाड़, और चांदी का पहाड़, और सोने का पहाड़, और मुलायम धातु का पहाड़, और सीसे का पहाड़।
3. और मैंने उस स्वर्गदूत से जो मेरे साथ था, पूछा, 'ये क्या बातें हैं जो मैंने गुप्त रूप से देखी हैं?'
4. और उसने मुझसे कहा: 'ये सब चीज़ें जो तुमने देखी हैं, वे उसके चुने हुए के राज की सेवा करेंगी ताकि वह धरती पर ताकतवर और ताकतवर हो।'
5. और शांति के उस दूत ने मुझे जवाब दिया, 'थोड़ा इंतज़ार करो, और आत्माओं के प्रभु के बारे में सभी गुप्त बातें तुम्हारे सामने आ जाएंगी।
6. और ये पहाड़ जो तेरी आँखों ने देखे हैं, लोहे के पहाड़, और तांबे के पहाड़, और चांदी के पहाड़, और सोने के पहाड़, और मुलायम धातु के पहाड़, और सीसे के पहाड़, ये सब चुने हुए के सामने मोम की तरह होंगे: आग के सामने, और उस पानी की तरह जो ऊपर से उन पहाड़ों पर बहता है, और वे उसके पैरों के सामने बेबस हो जाएँगे।
7. और उन दिनों ऐसा होगा कि कोई भी न बचेगा, न सोने से, न चाँदी से, और न कोई बच सकेगा।
8. और लड़ाई के लिए लोहा नहीं होगा, न ही कोई कवच पहनेगा। कांसा किसी काम का नहीं होगा, और टिन किसी काम का नहीं होगा और उसकी कोई कीमत नहीं होगी, और सीसे की चाहत नहीं की जाएगी।
9. और ये सब बातें नकार दी जाएंगी और धरती की सतह से खत्म कर दी जाएंगी, जब चुना हुआ इंसान आत्माओं के प्रभु के सामने आएगा।'

अध्याय 53

1. वहाँ मेरी आँखों ने खुले मुँह वाली एक गहरी घाटी देखी, और धरती, समुद्र और द्वीपों पर रहने वाले सभी लोग उसके लिए तोहफ़े, भेंट और सम्मान की निशानियाँ लाएँगे, लेकिन वह गहरी घाटी कभी नहीं भरेगी।
2. और उनके हाथ गलत काम करते हैं, और पापी उन सभी को खा जाते हैं जिन पर वे गलत तरीके से ज़ुल्म करते हैं: फिर भी पापी आत्माओं के प्रभु के सामने नष्ट कर दिए जाएँगे, और उन्हें उसकी धरती से निकाल दिया जाएगा, और वे हमेशा-हमेशा के लिए खत्म हो जाएँगे।
3. क्योंकि मैंने सज़ा देने वाले सभी स्वर्गदूतों को वहाँ रहते और शैतान के सभी हथियार तैयार करते देखा।
4. और मैंने शांति के दूत से जो मेरे साथ गया था, पूछा: 'ये यंत्र किसके लिए तैयार कर रहे हैं?'
5. और उसने मुझसे कहा: 'वे इन्हें इस धरती के राजाओं और ताकतवर लोगों के लिए तैयार करते हैं, ताकि वे इस तरह खत्म हो जाएं।
6. और इसके बाद नेक और चुना हुआ अपनी मंडली के घर को दिखाएगा: अब से उन्हें आत्माओं के प्रभु के नाम पर कोई रुकावट नहीं होगी।
7. और ये पहाड़ उसकी नेकी के सामने धरती की तरह खड़े नहीं रहेंगे, बल्कि पहाड़ियाँ पानी के झरने की तरह होंगी, और नेक लोगों को पापियों के ज़ुल्म से आराम मिलेगा।

अध्याय 54

1. और मैंने देखा और पृथ्वी के दूसरे भाग की ओर देखा, और वहाँ जलती हुई आग से भरी एक गहरी घाटी देखी।
2. और वे राजाओं और ताकतवर लोगों को ले आए, और उन्हें इस गहरी घाटी में फेंकना शुरू कर दिया।
3. और वहाँ मेरी आँखों ने देखा कि कैसे उन्होंने ये अपने औज़ार बनाए, बहुत ज़्यादा वज़न वाली लोहे की ज़ंजीरें।
4. और मैंने शांति के दूत से जो मेरे साथ था, पूछा, 'ये ज़ंजीरें किसके लिए तैयार की जा रही हैं?'
5. और उसने मुझसे कहा: 'ये अज़ाज़ेल की सेना के लिए तैयार किए जा रहे हैं, ताकि वे उन्हें पकड़कर पूरी तरह से सज़ा के गड्ढे में डाल दें, और वे उनके जबड़ों को खुरदुरे पत्थरों से ढक देंगे जैसा कि आत्माओं के प्रभु ने आज्ञा दी है।
6. और माइकल, और गेब्रियल, और राफेल, और फानूएल उस बड़े दिन उन्हें पकड़ लेंगे, और उस दिन उन्हें जलती हुई भट्टी में डाल देंगे, ताकि आत्माओं का प्रभु उनसे उनके गलत कामों का बदला ले सके, जो शैतान के अधीन हो गए और धरती पर रहने वालों को गुमराह कर दिया।'
7. 'और उन दिनों आत्माओं के प्रभु की ओर से सज़ा आएगी, और वह आकाश के ऊपर के पानी के सभी कक्षों और पृथ्वी के नीचे के झरनों को खोल देगा।
8. और सारा पानी पानी से मिल जाएगा: जो आसमान के ऊपर है वह मर्दाना है, और जो पानी धरती के नीचे है वह औरत का है।
9. और वे पृथ्वी पर रहने वाले और आकाश के छोर पर रहने वाले सब लोगों को नाश कर देंगे।

10. और जब वे अपने अधर्म को पहचान लेंगे जो उन्होंने धरती पर किया है, तो उनके द्वारा वे नाश हो जाएंगे।

अध्याय 55

1. और उसके बाद दिनों के मुखिया ने पछतावा किया और कहा: 'मैंने बेकार में धरती पर रहने वाले सभी लोगों को खत्म कर दिया।'
2. और उसने अपने बड़े नाम की कसम खाई: 'अब से मैं धरती पर रहने वाले सभी लोगों के साथ ऐसा नहीं करूँगा, और मैं आसमान में एक निशानी रखूँगा: और यह मेरे और उनके बीच हमेशा के लिए अच्छे भरोसे की कसम होगी, जब तक आसमान धरती के ऊपर है। और यह मेरे हुक्म के मुताबिक है।'
3. जब मैं मुसीबत और दर्द के दिन उन्हें फ़रिश्तों के हाथ से पकड़ना चाहूँगा, तो मैं उन पर अपनी सज़ा और अपना गुस्सा डालूँगा, यह बात रूहों के मालिक, भगवान ने कही है।
4. हे धरती पर रहने वाले शक्तिशाली राजाओं, तुम्हें मेरे चुने हुए को देखना होगा, कि वह कैसे महिमा के सिंहासन पर बैठता है और आत्माओं के प्रभु के नाम पर अज़ाज़ेल, और उसके सभी साथियों, और उसकी सभी सेनाओं का न्याय करता है।'

अध्याय 56

1. और मैंने वहाँ सज़ा देने वाले फ़रिश्तों की टोली को जाते देखा, और उनके हाथ में लोहे और कांसे की कोड़े और ज़ंजीरें थीं।
2. और मैंने शांति के दूत से जो मेरे साथ था, पूछा: 'ये जो कोड़े पकड़े हुए हैं, वे किसके पास जा रहे हैं?'
3. और उसने मुझसे कहा: 'अपने चुने हुए और प्यारे लोगों से, कि उन्हें घाटी के गहरे गड्ढे में डाल दिया जाए।
4. और तब वह घाटी उनके चुने हुए और प्यारे लोगों से भर जाएगी, और उनके जीवन के दिन खत्म हो जाएंगे, और उनके भटकने के दिन अब से नहीं गिने जाएंगे।
5. और उन दिनों में फ़रिश्ते लौटेंगे, और पूरब की ओर पार्थियन और मेदियों पर टूट पड़ेंगे: वे राजाओं को भड़काएँगे, ताकि उनमें बेचैनी की भावना आ जाए, और वे उन्हें उनके सिंहासन से उठा देंगे, ताकि वे शेरों की तरह अपनी मांद से, और भूखे भेड़ियों की तरह अपने झुंडों में से निकल पड़ें।
6. और वे ऊपर चढ़कर उसके चुने हुए लोगों की ज़मीन को रौंदेंगे, और उसके चुने हुए लोगों की ज़मीन उनके सामने खलिहान और हाईवे बन जाएगी।
7. लेकिन मेरे नेक लोगों का शहर उनके घोड़ों के लिए रुकावट बन जाएगा। और वे आपस में लड़ने लगेंगे, और उनका दाहिना हाथ आपस में ही मज़बूत हो जाएगा, और कोई आदमी अपने भाई को नहीं पहचान पाएगा, न ही कोई बेटा अपने पिता या अपनी माँ को, जब तक कि उनके मारे जाने से लाशों की गिनती खत्म न हो जाए, और उनकी सज़ा बेकार न हो जाए।
8. उन दिनों में अधोलोक अपने जबड़े खोलेगा, और वे उसमें समा जाएँगे, और उनका विनाश समाप्त हो जाएगा; अधोलोक चुने हुए लोगों के सामने पापियों को निगल जाएगा।'

अध्याय 57

1. इसके बाद मैंने गाड़ियों का एक और ग्रुप देखा, और उन पर सवार लोग, जो पूरब और पश्चिम से दक्षिण की तरफ हवा के साथ आ रहे थे।
2. और उनकी गाड़ियों का शोर सुनाई दिया, और जब यह हंगामा हुआ तो स्वर्ग से पवित्र लोगों ने इसे देखा, और पृथ्वी के खंभे अपनी जगह से हट गए, और इसकी आवाज़ एक ही दिन में स्वर्ग के एक छोर से दूसरे छोर तक सुनाई दी।
3. और वे सब गिरकर आत्माओं के प्रभु की आराधना करेंगे। और यह दूसरी कहानी का अंत है।

अध्याय 58

1. और मैंने नेक और चुने हुए लोगों के बारे में तीसरी कहानी कहना शुरू किया।
2. धन्य हो तुम, हे धर्मी और चुने हुए लोगों, क्योंकि तुम्हारा भाग्य गौरवशाली होगा।
3. और नेक लोग सूरज की रोशनी में रहेंगे। और चुने हुए लोग हमेशा की ज़िंदगी की रोशनी में रहेंगे: उनके जीवन के दिन कभी खत्म नहीं होंगे, और पवित्र लोगों के दिन अनगिनत होंगे।
4. और वे रोशनी की तलाश करेंगे और आत्माओं के प्रभु के साथ धार्मिकता पाएंगे: शाश्वत प्रभु के नाम पर धार्मिक लोगों को शांति मिलेगी।
5. और इसके बाद स्वर्ग में पवित्र लोगों से कहा जाएगा, कि वे नेकी के राज़, विश्वास की विरासत की खोज करें: क्योंकि यह धरती पर सूरज की तरह चमक रहा है, और अंधेरा खत्म हो गया है।
6. और एक ऐसी रोशनी होगी जो कभी खत्म नहीं होगी, और कुछ दिनों तक वे नहीं आएंगी, क्योंकि अंधेरा पहले खत्म हो जाएगा, और रोशनी आत्माओं के प्रभु के सामने स्थापित होगी, और सच्चाई की रोशनी आत्माओं के प्रभु के सामने हमेशा के लिए स्थापित होगी।

अध्याय 59

1. उन दिनों मेरी आँखों ने बिजली और रोशनी के राज़ देखे, और जो फैसले वे करती हैं और जो आत्माओं के प्रभु की मर्ज़ी से आशीर्वाद या श्राप के लिए चमकती हैं।
2. और वहाँ मैंने गरजने का राज़ देखा, और कैसे जब वह ऊपर आसमान में गूंजती है, तो उसकी आवाज़ सुनाई देती है, और उसने मुझे धरती पर होने वाले इंसाफ़ देखने को दिए, चाहे वे भलाई और आशीर्वाद के लिए हों, या आत्माओं के प्रभु के वचन के अनुसार श्राप के लिए।
3. और उसके बाद मुझे रोशनी और बिजली के सारे राज़ दिखाए गए, और वे आशीर्वाद और संतुष्टि के लिए चमकते हैं।

अध्याय 60

1. पाँच सौवें साल में, सातवें महीने में, हनोक के जीवन के चौदहवें दिन। उस कहानी में मैंने देखा कि कैसे एक ज़ोरदार भूकंप ने स्वर्ग के सभी कोनों को हिला दिया, और परमप्रधान की

सेना, और स्वर्गदूत, जो हज़ारों और दस हज़ार गुना दस हज़ार थे, एक बड़ी बेचैनी से घबरा गए।
2. और दिनों का मुखिया अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठा, और स्वर्गदूत और धर्मी उसके चारों ओर खड़े थे।
3. और मुझे बहुत डर लगा, और डर ने मुझे जकड़ लिया, और मेरी कमर ढीली पड़ गई, और मेरी हिम्मत जवाब दे गई, और मैं मुँह के बल गिर पड़ा।
4. और माइकल ने पवित्र लोगों में से एक और फ़रिश्ता भेजा और उसने मुझे उठाया, और जब उसने मुझे उठाया तो मेरी आत्मा लौट आई; क्योंकि मैं इस सेना की नज़र, और आसमान का शोर और कंपन बर्दाश्त नहीं कर पा रहा था। और माइकल ने मुझसे कहा: 'तुम ऐसे नज़ारे से क्यों परेशान हो? जब तक कि उसकी दया का दिन नहीं आ गया; और वह धरती पर रहने वालों के प्रति दयालु और सहनशील रहा है।
5. और जब वह दिन, और ताकत, और सज़ा, और इंसाफ़ आएगा, जिसे रूहों के मालिक ने उन लोगों के लिए तैयार किया है जो सही कानून को नहीं मानते, और जो सही इंसाफ़ को नकारते हैं, और जो उसका नाम बेकार में लेते हैं - वह दिन तैयार है, चुने हुए लोगों के लिए एक वादा, लेकिन गुनाहगारों के लिए एक इंक्विज़िशन।
6. जब रूहों के मालिक की सज़ा उन पर आएगी, तो वह इसलिए आएगी ताकि रूहों के मालिक की सज़ा बेकार न जाए, और वह बच्चों को उनकी मांओं के साथ और बच्चों को उनके पिताओं के साथ मार डालेगी। उसके बाद उसकी दया और सब्र के हिसाब से इंसाफ़ होगा।'
7. और उस दिन दो राक्षस अलग हो गए, एक महिला राक्षस जिसका नाम लेविथान था, समुद्र के गहरे गड्ढों में पानी के झरनों के ऊपर रहने के लिए।
8. लेकिन नर का नाम बेहेमोथ है, जिसने अपने सीने से डुइदैन नाम के एक बंजर जंगल पर कब्ज़ा कर लिया, जो उस बगीचे के पूरब में था जहाँ चुने हुए और नेक लोग रहते हैं, जहाँ मेरे दादा को उठाया गया था, जो आदम से सातवें थे, पहले इंसान जिन्हें आत्माओं के प्रभु ने बनाया था।
9. और मैंने दूसरे देवदूत से विनती की कि वह मुझे उन राक्षसों की ताकत दिखाए, कि कैसे वे एक ही दिन में अलग हो गए और फेंक दिए गए, एक को समुद्र की गहराई में, और दूसरे को जंगल की सूखी ज़मीन पर।
10. और उसने मुझसे कहा, 'हे मनुष्य के पुत्र, तुम इसमें छिपी हुई बात को जानना चाहते हो।'
11. और दूसरा स्वर्गदूत जो मेरे साथ गया और जिसने मुझे वह दिखाया जो छिपा हुआ था, उसने मुझे बताया कि स्वर्ग में ऊंचाई में, और पृथ्वी के नीचे गहराई में, और स्वर्ग के छोर पर, और स्वर्ग की नींव में क्या पहला और आखिरी है।
12. और हवाओं के कमरे, और हवाओं को कैसे बांटा जाता है, और उन्हें कैसे तौला जाता है, और हवाओं के दरवाज़ों को कैसे गिना जाता है, हर एक हवा की ताकत के हिसाब से, और चाँद की रोशनी की ताकत के हिसाब से, और जो ताकत सही है उसके हिसाब से: और तारों के उनके नामों के हिसाब से बंटवारे, और सभी हिस्सों को कैसे बांटा जाता है।
13. और गरजने वाली बिजली उन जगहों के हिसाब से जहाँ वे गिरती हैं, और बिजलियों के बीच जो भी ग्रुप बनाए गए हैं ताकि वे चमक सकें, और उनके ग्रुप ताकि वे तुरंत उनकी बात मान सकें।
14. क्योंकि गरजने के लिए आराम की जगहें होती हैं जो उसे तब दी जाती हैं जब वह अपनी गड़गड़ाहट का इंतज़ार कर रही होती है; और गरजना और बिजली एक-दूसरे से अलग नहीं हो सकते, और हालांकि वे एक और बिना बँटे नहीं हैं, फिर भी वे दोनों आत्मा के ज़रिए साथ-साथ चलते हैं और अलग नहीं होते।
15. क्योंकि जब बिजली चमकती है, तो बादल गरजता है, और आत्मा उस गड़गड़ाहट के बीच कुछ देर रुकती है, और उन्हें बराबर बाँट देती है; क्योंकि उनकी गड़गड़ाहट का खज़ाना रेत के समान है, और जब वे गड़गड़ाती हैं तो उनमें से हर एक को लगाम से पकड़ा जाता है, और आत्मा की शक्ति से पीछे मोड़ा जाता है, और पृथ्वी के कई कोनों के अनुसार आगे बढ़ाया जाता है।
16. और समुद्र की आत्मा मर्दाना और मज़बूत है, और अपनी ताकत के बल पर वह उसे लगाम से पीछे खींचता है, और इसी तरह वह आगे बढ़ता है और धरती के सभी पहाड़ों के बीच फैल जाता है।
17. और पाले की आत्मा उसका अपना फ़रिश्ता है, और ओलों की आत्मा एक अच्छा फ़रिश्ता है।
18. और बर्फ़ की आत्मा अपनी ताकत के कारण अपने कमरों को छोड़ गई है - उसमें एक खास आत्मा है, और जो उससे ऊपर उठता है वह धुएं जैसा है, और उसका नाम पाला है।
19. और धुंध की आत्मा उनके कमरों में उनके साथ नहीं रहती, बल्कि उसका एक खास कमरा होता है; क्योंकि उसका रास्ता रोशनी और अंधेरे, और सर्दी और गर्मी दोनों में शानदार होता है, और उसके कमरे में एक फ़रिश्ता रहता है।
20. और ओस की आत्मा आकाश के छोर पर रहती है, और बारिश के कमरों से जुड़ी हुई है, और उसका रास्ता सर्दी और गर्मी में है: और उसके बादल और धुंध के बादल जुड़े हुए हैं, और एक दूसरे को देते हैं।
21. और जब बारिश की आत्मा अपने कमरे से बाहर निकलती है, तो फ़रिश्ते आते हैं और कमरा खोलते हैं और उसे बाहर ले जाते हैं, और जब वह पूरी धरती पर फैल जाती है तो वह धरती के पानी के साथ मिल जाती है। और जब भी वह धरती के पानी के साथ मिलती है...
22. क्योंकि पानी धरती पर रहने वालों के लिए है; क्योंकि यह धरती के लिए स्वर्ग में रहने वाले परमप्रधान की ओर से भोजन है: इसलिए बारिश के लिए एक माप है, और स्वर्गदूत इसका इंतज़ाम करते हैं।
23. और ये बातें मैंने नेक लोगों के बाग़ की ओर देखीं।
24. और शांति के दूत ने जो मेरे साथ था, मुझसे कहा: 'ये दो राक्षस, जो परमेश्वर की महानता के अनुसार तैयार किए गए हैं, खिलाएंगे...

अध्याय 61

1. और मैंने उन दिनों देखा कि उन फ़रिश्तों को कितनी लंबी डोरियाँ दी गईं, और उन्होंने अपने पंख लगाए और उड़ गए, और वे उत्तर की ओर चले गए।
2. और मैंने स्वर्गदूत से पूछा, 'वे स्वर्गदूत ये डोरियाँ लेकर क्यों चले गए?' और उसने मुझसे कहा: 'वे नापने गए हैं।'
3. और जो स्वर्गदूत मेरे साथ गया था, उसने मुझसे कहा: 'ये लोग नेक लोगों के नाप-तौल और नेक लोगों की रस्सियाँ नेक लोगों के

पास लाएँगे, ताकि वे हमेशा-हमेशा के लिए आत्माओं के प्रभु के नाम पर टिके रहें।
4. चुने हुए लोग चुने हुए लोगों के साथ रहना शुरू करेंगे, और ये वे कदम होंगे जिनसे विश्वास बढ़ेगा, और जिनसे नेकी मज़बूत होगी।
5. और ये उपाय धरती की गहराइयों के सारे राज़ खोल देंगे, और जो रेगिस्तान से खत्म हो गए हैं, और जो जानवर खा गए हैं, और जो समुद्र की मछलियों से खाए गए हैं, ताकि वे लौटकर खुद को रोक सकें, चुने हुए के दिन; क्योंकि रूहों के मालिक के सामने कोई भी खत्म नहीं होगा, और कोई भी खत्म नहीं हो सकता।
6. और ऊपर स्वर्ग में रहने वाले सभी लोगों को एक आदेश और शक्ति और एक आवाज़ और आग के समान एक प्रकाश मिला।
7. और उन्होंने अपने पहले शब्दों से ही उस एक को आशीर्वाद दिया, और बुद्धि से उसकी बड़ाई और प्रशंसा की, और वे बोलने में और जीवन की आत्मा में बुद्धिमान थे।
8. और आत्माओं के प्रभु ने चुने हुए को महिमा के सिंहासन पर बिठाया। और वह स्वर्ग में ऊपर पवित्र लोगों के सभी कामों का न्याय करेगा, और उनके कामों को तराजू में तौला जाएगा,
9. और जब वह अपना चेहरा ऊपर उठाएगा, ताकि आत्माओं के प्रभु के नाम के वचन के अनुसार उनके गुप्त मार्गों का न्याय कर सके, और आत्माओं के प्रभु के सही न्याय के मार्ग के अनुसार उनके मार्ग का न्याय कर सके, तब वे सब एक आवाज़ में बोलेंगे और आशीर्वाद देंगे, और आत्माओं के प्रभु के नाम की महिमा करेंगे, उसकी बड़ाई करेंगे और उसे पवित्र करेंगे।
10. और वह स्वर्ग की सारी सेना, और ऊपर के सभी पवित्र लोगों, और परमेश्वर की सेना, करूबिक, सेराफिन और ओफ़ानिन, और शक्ति के सभी स्वर्गदूतों, और प्रधानों के सभी स्वर्गदूतों, और चुने हुए एक, और पृथ्वी पर और पानी के ऊपर की अन्य शक्तियों को बुलाएगा।
11. उस दिन सब लोग एक स्वर में उठेंगे, और विश्वास की आत्मा से, और बुद्धि की आत्मा से, और धीरज की आत्मा से, और दया की आत्मा से, और न्याय और शांति की आत्मा से, और भलाई की आत्मा से आशीर्वाद देंगे, महिमा देंगे और ऊंचा करेंगे, और सब एक स्वर में कहेंगे: "धन्य है वह, और आत्माओं के प्रभु का नाम सदा सर्वदा धन्य रहे।"
12. जो लोग ऊपर स्वर्ग में नहीं सोए हैं, वे सब उसे आशीर्वाद देंगे: स्वर्ग में रहने वाले सभी पवित्र लोग उसे आशीर्वाद देंगे, और जीवन के बगीचे में रहने वाले सभी चुने हुए लोग: और हर रोशनी वाली आत्मा जो आपके धन्य नाम को आशीर्वाद देने, महिमा देने, तारीफ़ करने और पवित्र करने में सक्षम है, और सभी प्राणी हमेशा-हमेशा के लिए आपके नाम की बहुत ज़्यादा महिमा करेंगे और आशीर्वाद देंगे।
13. क्योंकि रूहों के मालिक की दया बहुत बड़ी है, और वह बहुत सब्र रखने वाला है, और उसने अपने सारे काम और जो कुछ उसने बनाया है, उसे रूहों के मालिक के नाम से नेक और चुने हुए लोगों पर ज़ाहिर किया है।

अध्याय 62

1. और इस तरह प्रभु ने राजाओं, ताकतवरों, ऊंचे लोगों और धरती पर रहने वालों को हुक्म दिया, और कहा: 'अपनी आंखें खोलो और अपने सींग ऊपर उठाओ अगर तुम चुने हुए को पहचान सकते हो।'
2. और आत्माओं के प्रभु ने उसे अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठाया, और धार्मिकता की आत्मा उस पर उंडेली गई, और उसके मुंह के वचन ने सभी पापियों को मार डाला, और सभी अधर्मी उसके सामने से नष्ट हो गए।
3. और उस दिन सभी राजा और ताकतवर, और ऊंचे पद वाले और धरती पर अधिकार रखने वाले खड़े होंगे, और वे देखेंगे और पहचानेंगे कि वह अपनी महिमा के सिंहासन पर कैसे बैठा है, और उसके सामने धार्मिकता का न्याय किया जाता है, और उसके सामने कोई झूठा शब्द नहीं बोला जाता है।
4. तब उन्हें ऐसी पीड़ा होगी जैसी प्रसव पीड़ा में स्त्री को होती है, और उसे जनने में पीड़ा होती है, जब उसका बच्चा गर्भ के मुँह में प्रवेश करता है, और उसे जनने में पीड़ा होती है।
5. और उनमें से एक हिस्सा दूसरे को देखेगा, और वे डर जाएँगे, और उनके चेहरे उदास हो जाएँगे, और दर्द उन्हें जकड़ लेगा, जब वे इंसान के बेटे को अपनी शान के सिंहासन पर बैठे हुए देखेंगे।
6. और राजा और ताकतवर लोग और धरती के सभी मालिक उसे आशीर्वाद देंगे, उसकी बड़ाई करेंगे और उसकी तारीफ़ करेंगे जो सब पर राज करता है, जो छिपा हुआ था।
7. क्योंकि इंसान का बेटा तो शुरू से ही छिपा हुआ था, और सबसे ऊँचे ने अपनी ताकत से उसे बचाकर रखा, और चुने हुए लोगों पर ज़ाहिर किया।
8. और चुने हुए और पवित्र लोगों की मंडली बोई जाएगी, और सभी चुने हुए लोग उस दिन उसके सामने खड़े होंगे।
9. और सभी राजा और ताकतवर और ऊंचे पद वाले और धरती पर राज करने वाले, उसके सामने मुंह के बल गिरेंगे, और उस इंसान के बेटे की पूजा करेंगे और उस पर उम्मीद रखेंगे, और उससे गुज़ारिश करेंगे और उसके हाथों दया की भीख मांगेंगे।
10. फिर भी आत्माओं का वह प्रभु उन्हें इतना दबाएगा कि वे जल्दी से उसके सामने से चले जाएँगे, और उनके चेहरे शर्म से भर जाएँगे, और उनके चेहरों पर अंधेरा छा जाएगा।
11. और वह उन्हें सज़ा देने के लिए फ़रिश्तों के हवाले कर देगा, ताकि उनसे बदला ले सके क्योंकि उन्होंने उसके बच्चों और उसके चुने हुए लोगों पर ज़ुल्म किया है।
12. और वे नेक लोगों और उसके चुने हुए लोगों के लिए एक तमाशा होंगे: वे उन पर खुश होंगे, क्योंकि आत्माओं के प्रभु का गुस्सा उन पर है, और उसकी तलवार उनके खून से पी गई है।
13. और उस दिन नेक और चुने हुए लोग बच जाएँगे, और वे उसके बाद कभी पापियों और अधर्मियों का मुँह नहीं देखेंगे।
14. और आत्माओं का प्रभु उनके ऊपर रहेगा, और वे मनुष्य के उस पुत्र के साथ भोजन करेंगे, और सदा सर्वदा लेटेंगे और उठेंगे।
15. और नेक और चुने हुए लोग धरती से उठेंगे, और उदास चेहरे वाले नहीं रहेंगे। और वे शान के कपड़े पहन लेंगे,
16. और ये आत्माओं के प्रभु की ओर से जीवन के वस्त्र होंगे: और तुम्हारे वस्त्र पुराने नहीं होंगे, और न ही आत्माओं के प्रभु के सामने तुम्हारी शान फीकी पड़ेगी।

अध्याय 63

1. उन दिनों में ताकतवर लोग और धरती के राजा उससे गुज़ारिश करेंगे कि वह उन्हें सज़ा देने वाले अपने फ़रिश्तों से थोड़ी राहत दे, जिनके हवाले उन्हें कर दिया गया था, ताकि वे आत्माओं के प्रभु के सामने झुककर पूजा कर सकें और उसके सामने अपने पाप मान सकें।
2. और वे आत्माओं के प्रभु को धन्यवाद देंगे और उसकी महिमा करेंगे, और कहेंगे: 'धन्य है आत्माओं का प्रभु और राजाओं का प्रभु, और शक्तिशाली लोगों का प्रभु और अमीरों का प्रभु, और महिमा का प्रभु और बुद्धि का प्रभु,
3. और तेरी शक्ति पीढ़ी-दर-पीढ़ी हर रहस्य में शानदार है, और तेरी महिमा सदा-सदा के लिए है; तेरे सभी रहस्य गहरे और अनगिनत हैं, और तेरा धर्म गणना से परे है।
4. अब हमने सीखा है कि हमें राजाओं के प्रभु और जो सब राजाओं के राजा हैं, उनकी बड़ाई करनी चाहिए और उन्हें आशीर्वाद देना चाहिए।
5. और वे कहेंगे: 'काश हमें महिमा करने और धन्यवाद देने के लिए आराम मिलता, और हम उसकी महिमा के सामने अपने विश्वास को स्वीकार करते!
6. और अब हम थोड़ा आराम चाहते हैं लेकिन पाते नहीं: हम बहुत ज़्यादा कोशिश करते हैं और पाते नहीं: और रोशनी हमारे सामने से गायब हो गई है, और अंधेरा हमेशा-हमेशा के लिए हमारा घर बन गया है:
7. क्योंकि हमने उसके सामने विश्वास नहीं किया, न ही आत्माओं के प्रभु के नाम की महिमा की, न ही अपने प्रभु की महिमा की, बल्कि हमारी आशा हमारे राज्य के राजदण्ड और हमारी महिमा पर थी।
8. और हमारे दुख और परेशानी के दिन वह हमें नहीं बचाता, और हमें यह मानने का कोई मौका नहीं मिलता कि हमारा प्रभु अपने सभी कामों में, और अपने फैसलों और अपनी इंसाफ़ में सच्चा है, और उसके फैसलों में किसी का पक्ष नहीं होता।
9. और हम अपने कामों की वजह से उसके सामने से चले जाते हैं, और हमारे सब पाप नेकी में गिने जाते हैं।
10. अब वे खुद से कहेंगे: 'हमारे मन गलत फायदे से भरे हुए हैं, लेकिन यह हमें इसके बीच से नीचे अधोलोक के बोझ में गिरने से नहीं रोक सकता।'
11. और उसके बाद उनके चेहरे अंधेरे से भर जाएंगे, और इंसान के बेटे के सामने शर्मिंदा होंगे, और वे उसके सामने से भगा दिए जाएंगे, और तलवार उनके बीच उसके चेहरे के सामने रहेगी।
12. आत्माओं के प्रभु ने कहा: 'यह आत्माओं के प्रभु के सामने ताकतवरों, राजाओं, ऊंचे पद वालों और धरती के मालिकों के लिए नियम और फैसला है।'

अध्याय 64

1. और दूसरे रूप जो मैंने उस जगह छिपे हुए देखे।
2. मैंने स्वर्गदूत की आवाज़ सुनी जो कह रहा था: 'ये वे स्वर्गदूत हैं जो धरती पर उतरे, और उन्होंने इंसानों से छिपी हुई बातें बताईं और इंसानों को पाप करने के लिए बहकाया।'

अध्याय 65

1. उन दिनों नूह ने देखा कि धरती डूब गई है और उसका विनाश निकट है।
2. और वह वहाँ से उठकर पृथ्वी के छोर पर गया, और अपने दादा हनोक को ऊँची आवाज़ में पुकारा: और नूह ने तीन बार कड़वाहट भरी आवाज़ में कहा: 'मेरी सुनो, मेरी सुनो, मेरी सुनो।'
3. और मैंने उससे कहा: 'मुझे बताओ कि धरती पर ऐसा क्या हो रहा है कि धरती इतनी बुरी हालत में है और हिल रही है, कहीं ऐसा न हो कि मैं भी इसके साथ खत्म हो जाऊं?'
4. और इस पर धरती पर बड़ा शोर हुआ, और स्वर्ग से एक आवाज़ सुनाई दी, और मैं अपने चेहरे के बल गिर पड़ा।
5. और मेरे दादा हनोक आए और मेरे पास खड़े होकर मुझसे कहा: 'तुमने इतनी ज़ोर से क्यों रोते हुए मुझसे बात की?
6. और धरती पर रहने वालों के बारे में प्रभु की तरफ से एक आदेश आया है कि उनकी बर्बादी हो चुकी है क्योंकि उन्होंने फ़रिश्तों के सारे राज़, और शैतानों की सारी हिंसा, और उनकी सारी ताकतें – सबसे छिपी हुई – और जादू-टोना करने वालों की सारी ताकत, और जादू-टोना करने वालों की ताकत, और पूरी धरती के लिए ढली हुई मूर्तियाँ बनाने वालों की ताकत सीख ली है:
7. और चाँदी धरती की धूल से कैसे बनती है, और मुलायम धातु धरती में कैसे पैदा होती है।
8. क्योंकि सीसा और टिन पहले की तरह धरती से नहीं बनते: यह एक झरना है जो उन्हें पैदा करता है, और एक फरिश्ता उसमें खड़ा है, और वह फरिश्ता सबसे बड़ा है।'
9. और उसके बाद मेरे दादा हनोक ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे उठाया, और मुझसे कहा: 'जाओ, क्योंकि मैंने आत्माओं के प्रभु से धरती पर इस हंगामे के बारे में पूछा है।
10. और उसने मुझसे कहा: "उनके गलत कामों की वजह से उनका न्याय तय हो गया है और मैं इसे हमेशा के लिए रोक नहीं पाऊँगा। उन जादू-टोने की वजह से जिन्हें उन्होंने खोजा और सीखा है, धरती और उस पर रहने वाले लोग खत्म हो जाएँगे।"
11. और इनके पास हमेशा के लिए पछतावे की कोई जगह नहीं है, क्योंकि उन्होंने उन्हें वह दिखा दिया है जो छिपा हुआ था, और वे शापित हैं: लेकिन तुम्हारे लिए, मेरे बेटे, आत्माओं का प्रभु जानता है कि तुम पवित्र हो, और रहस्यों के बारे में इस बदनामी से बेगुनाह हो।
12. और उसने तेरा नाम पवित्र लोगों में ठहराया है, और तुझे धरती पर रहने वालों के बीच सुरक्षित रखेगा, और तेरे नेक वंश को राज और बड़े सम्मान दोनों के लिए ठहराया है, और तेरे वंश से नेक और पवित्र लोगों का एक ऐसा झरना निकलेगा जिसकी गिनती हमेशा के लिए अनगिनत होगी।

अध्याय 66

1. और उसके बाद उसने मुझे सज़ा देने वाले फ़रिश्ते दिखाए जो आने और धरती के नीचे पानी की सारी ताकतों को छोड़ने के लिए तैयार हैं ताकि धरती पर रहने वाले सभी लोगों पर इंसाफ़ और तबाही लाए।
2. और आत्माओं के प्रभु ने उन स्वर्गदूतों को जो आगे जा रहे थे, आज्ञा दी कि वे पानी को न बढ़ाएँ, बल्कि उसे रोककर रखें; क्योंकि वे स्वर्गदूत पानी की शक्तियों के ऊपर थे।

3. और मैं हनोक के सामने से चला गया।

अध्याय 67

1. और उन दिनों परमेश्वर का वचन मेरे पास आया, और उसने मुझसे कहा, 'नूह, तेरा भाग मेरे सामने आया है, तेरा भाग निर्दोष है, तेरा भाग प्रेम और सीधाई से भरा हुआ है।
2. और अब फ़रिश्ते एक लकड़ी की इमारत बना रहे हैं, और जब वे यह काम पूरा कर लेंगे तो मैं उस पर अपना हाथ रखूंगा और उसे बचाऊंगा, और उसमें से जीवन का बीज निकलेगा, और एक बदलाव आएगा जिससे धरती बिना किसी के नहीं रहेगी।
3. और मैं तेरे वंश को अपने सामने हमेशा के लिए स्थिर रखूंगा, और तेरे साथ रहने वालों को फैलाऊंगा; वह धरती पर कभी बेकार नहीं रहेगा, बल्कि प्रभु के नाम से धरती पर आशीष पाएगा और बढ़ेगा।'
4. और वह उन फ़रिश्तों को, जिन्होंने गलत काम किया है, उस जलती हुई घाटी में कैद कर देगा, जिसे मेरे दादा हनोक ने पहले मुझे पश्चिम में सोने, चांदी, लोहे, मुलायम धातु और टिन के पहाड़ों के बीच दिखाया था।
5. और मैंने वह घाटी देखी जिसमें पानी का बड़ा हिलना और उतार-चढ़ाव था।
6. और जब यह सब हुआ, तो उस आग जैसे पिघले हुए मेटल से और उस जगह पर उसके हिलने से, सल्फर की गंध पैदा हुई, और यह उन पानी से मिल गई, और उन फरिश्तों की घाटी, जिन्होंने इंसानों को गुमराह किया था, उस ज़मीन के नीचे जल गई।
7. और इसकी घाटियों से आग की धाराएँ निकलती हैं, जहाँ उन फ़रिश्तों को सज़ा दी जाती है जिन्होंने धरती पर रहने वालों को गुमराह किया था।
8. लेकिन उन दिनों में वह पानी राजाओं, ताकतवरों, ऊंचे लोगों और धरती पर रहने वालों के लिए शरीर को ठीक करने का काम करेगा, लेकिन आत्मा को सज़ा देगा; अब उनकी आत्मा वासना से भरी है, ताकि वे अपने शरीर में सज़ा पाएं, क्योंकि उन्होंने आत्माओं के प्रभु को नकार दिया है और रोज़ अपनी सज़ा देखते हैं, और फिर भी उसके नाम पर विश्वास नहीं करते।
9. और जैसे-जैसे उनके शरीर में जलन तेज़ होगी, उनकी आत्मा में भी हमेशा-हमेशा के लिए वैसा ही बदलाव आएगा; क्योंकि आत्माओं के प्रभु के सामने कोई भी बेकार की बात नहीं कहेगा।
10. क्योंकि उन पर न्याय आएगा, क्योंकि वे अपने शरीर की वासना पर विश्वास करते हैं और प्रभु की आत्मा को अस्वीकार करते हैं।
11. और उन्हीं दिनों में पानी में बदलाव आएगा; क्योंकि जब उन स्वर्गदूतों को इन पानी में सज़ा दी जाएगी, तो इन पानी के झरनों का तापमान बदल जाएगा, और जब स्वर्गदूत ऊपर जाएंगे, तो झरनों का पानी बदल जाएगा और ठंडा हो जाएगा।
12. और मैंने माइकल को जवाब देते हुए सुना: 'यह न्याय जिसके द्वारा स्वर्गदूतों का न्याय किया जाता है, राजाओं और पृथ्वी के अधिकारियों के लिए एक गवाही है।'
13. क्योंकि न्याय का यह पानी राजाओं के शरीर और उनके शरीर की वासना को ठीक करने में मदद करता है; इसलिए वे न तो देखेंगे और न ही यकीन करेंगे कि वह पानी बदल जाएगा और हमेशा जलने वाली आग बन जाएगा।

अध्याय 68

1. और उसके बाद मेरे दादा हनोक ने मुझे दृष्टांतों की किताब के सभी राज़ सिखाए जो उन्हें दिए गए थे, और उन्होंने उन्हें दृष्टांतों की किताब के शब्दों में मेरे लिए एक साथ रखा।
2. और उस दिन माइकल ने राफ़ेल को जवाब दिया और कहा: 'आत्मा की शक्ति मुझे रहस्यों के फैसले की गंभीरता, स्वर्गदूतों के फैसले के कारण हिला देती है और कांपने पर मजबूर करती है: कौन उस कठोर फैसले को सह सकता है जो किया गया है, और जिसके सामने वे पिघल जाते हैं?'
3. और माइकल ने फिर जवाब दिया, और राफेल से कहा: 'ऐसा कौन है जिसका दिल इस बात से नरम नहीं हुआ है, और जिसका दिल इस सज़ा के शब्द से परेशान नहीं हुआ है जो उन पर उन लोगों की वजह से आया है जिन्होंने उन्हें इस तरह बाहर निकाला है?'
4. और जब वह आत्माओं के प्रभु के सामने खड़ा हुआ, तो माइकल ने राफेल से कहा: 'मैं प्रभु की नज़र में उनका हिस्सा नहीं लूँगा; क्योंकि आत्माओं का प्रभु उनसे नाराज़ है क्योंकि वे ऐसा करते हैं जैसे वे प्रभु हों। इसलिए जो कुछ भी छिपा है वह हमेशा-हमेशा के लिए उन पर आएगा; क्योंकि न तो फ़रिश्ते और न ही इंसान का इसमें कोई हिस्सा होगा, बल्कि सिर्फ़ उन्हें ही हमेशा-हमेशा के लिए अपना न्याय मिला है।'

अध्याय 69

1. और इस फैसले के बाद वे उन्हें डरा देंगे और डरा देंगे क्योंकि उन्होंने धरती पर रहने वालों को यह दिखाया है।
2. और उन फ़रिश्तों के नाम देखो, ये उनके नाम हैं: उनमें पहला है समजाज़ा, दूसरा है अर्तक़ीफ़ा, तीसरा है अरमेन, चौथा है कोकाबेल, पाँचवाँ है तूराएल, छठा है रूमजाल, सातवाँ है दनजाल, आठवाँ है नेकाएल, नौवाँ है बराकेल, दसवाँ है अज़ाज़ेल, ग्यारहवाँ है अरमारोस, बारहवाँ है बतरजाल, तेरहवाँ है बुससेजल, चौदहवाँ है हननेल, पंद्रहवाँ है तूरेल, सोलहवाँ है सिमापेसील, सत्रहवाँ है जेत्रेल, अठारहवाँ है तुमाएल, उन्नीसवाँ है तूरेल, बीसवाँ है रुमाएल, इक्कीसवां अज़ाज़ेल।
3. और ये उनके फ़रिश्तों के सरदार और उनके नाम हैं, और उनके सरदार सौ-सौ, पचास-पचास और दस-दस की संख्या में हैं।
4. पहले जेकोन का नाम: यानी वह जिसने परमेश्वर के सभी बेटों को गुमराह किया, और उन्हें धरती पर ले आया, और उन्हें इंसानों की बेटियों के ज़रिए गुमराह किया।
5. और दूसरे का नाम असबेल था: उसने परमेश्वर के पवित्र पुत्रों को बुरी सलाह दी, और उन्हें भटका दिया ताकि वे मनुष्य की बेटियों के साथ अपने शरीर को अशुद्ध कर लें।
6. और तीसरे का नाम गद्रेल था: वही है जिसने इंसानों को मौत के सारे वार दिखाए, और उसने हव्वा को गुमराह किया, और इंसानों को मौत के हथियार दिखाए - ढाल और कवच, और लड़ाई के लिए तलवार, और इंसानों को मौत के सारे हथियार।
7. और उसके हाथ से वे उस दिन से लेकर हमेशा के लिए धरती पर रहने वालों के खिलाफ़ आगे बढ़े हैं।
8. और चौथे का नाम पेनेमू था: उसने इंसानों को कड़वी और मीठी बातें सिखाईं, और उन्हें उनकी समझ के सारे राज़ सिखाए।

9. और उसने स्याही और कागज़ से लिखकर इंसानों को सिखाया, और इस तरह बहुत से लोग हमेशा से हमेशा तक और आज तक पाप करते रहे।
10. क्योंकि इंसानों को इस मकसद से नहीं बनाया गया कि वे कलम और स्याही से अपने अच्छे विश्वास को पक्का करें।
11. क्योंकि इंसानों को बिल्कुल फ़रिश्तों की तरह बनाया गया था, ताकि वे पवित्र और नेक बने रहें, और मौत, जो सब कुछ खत्म कर देती है, उन्हें पकड़ नहीं सकती थी, लेकिन इस ज्ञान की वजह से वे खत्म हो रहे हैं, और इसी ताकत की वजह से यह मुझे खा रही है।
12. और पांचवें का नाम कसदेजा था: यह वही है जिसने इंसानों को आत्माओं और शैतानों के सभी बुरे असर, और पेट में भ्रूण के असर, ताकि वह मर जाए, और आत्मा के असर, साँप के काटने, और दोपहर की गर्मी से होने वाले असर दिखाए, साँप का बेटा जिसका नाम तबात था।
13. और यह कसबील का काम है, उस कसम का मुख्य हिस्सा जो उसने पवित्र लोगों को दिखाई थी जब वह शान में ऊपर रहता था, और इसका नाम बिका है।
14. इस स्वर्गदूत ने माइकल से गुज़ारिश की कि वह उसे छिपा हुआ नाम दिखाए, ताकि वह उसे शपथ में बता सके, ताकि वे लोग उस नाम और शपथ से कांप उठें जिसने इंसानों के लिए वह सब कुछ बताया जो गुप्त था।
15. और यह इस शपथ की ताकत है, क्योंकि यह शक्तिशाली और मज़बूत है, और उसने यह शपथ अकाए को माइकल के हाथ में दी।
16. और इस शपथ के राज़ ये हैं... और ये उसकी शपथ के ज़रिए मज़बूत हैं: और दुनिया बनने से पहले ही स्वर्ग रुक गया था, और हमेशा के लिए।
17. और इसी से धरती पानी पर बनी, और पहाड़ों की छिपी हुई गुफाओं से खूबसूरत पानी निकला, दुनिया की शुरुआत से लेकर हमेशा तक।
18. और उस कसम से समुद्र बना, और उसने उसके गुस्से के समय के लिए रेत को उसकी नींव बनाया, और दुनिया बनने से लेकर हमेशा तक वह उसे पार करने की हिम्मत नहीं कर सका।
19. और उस कसम के ज़रिए गहरी खाईयाँ मज़बूत हो जाती हैं, और हमेशा से हमेशा तक अपनी जगह पर बनी रहती हैं और हिलती नहीं हैं।
20. और उस कसम के ज़रिए सूरज और चाँद अपनी पूरी रफ़्तार से चलते हैं, और हमेशा से हमेशा तक अपने नियम से नहीं हटते।
21. और उस कसम के ज़रिए तारे अपना रास्ता पूरा करते हैं, और वह उन्हें उनके नाम से बुलाता है, और वे हमेशा से हमेशा तक उसे जवाब देते हैं।
22. और इसी तरह पानी, हवा और सभी तरह के ज़ेफिर की आत्माएँ, और हवा के सभी दिशाओं से उनके रास्ते।
23. और वहाँ गरजने की आवाज़ें और बिजली की चमक सुरक्षित हैं; और वहाँ ओलों के कमरे और पाले के कमरे, और कोहरे के कमरे, और बारिश और ओस के कमरे सुरक्षित हैं।
24. और ये सब विश्वास करते हैं और आत्माओं के प्रभु के सामने धन्यवाद देते हैं, और अपनी पूरी शक्ति से उसकी महिमा करते हैं, और उनका भोजन धन्यवाद के हर काम में है: वे हमेशा-हमेशा के लिए आत्माओं के प्रभु के नाम का धन्यवाद, महिमा और गुणगान करते हैं।
25. और यह कसम उन पर मज़बूत है, और इसके ज़रिए वे सुरक्षित रहते हैं और उनके रास्ते सुरक्षित रहते हैं, और उनका रास्ता बर्बाद नहीं होता।
26. और उनके बीच बहुत खुशी हुई, और उन्होंने आशीर्वाद दिया और महिमा की और प्रशंसा की क्योंकि मनुष्य के पुत्र का नाम उन पर प्रकट हुआ था।
27. और वह अपनी महिमा के सिंहासन पर बैठा, और न्याय का काम मनुष्य के पुत्र को दिया गया, और उसने पापियों को मिटा दिया और पृथ्वी के चेहरे से मिटा दिया, और जिन्होंने दुनिया को गुमराह किया था।
28. उन्हें ज़ंजीरों से बांध दिया जाएगा, और उनके विनाश की जगह में उन्हें कैद कर दिया जाएगा, और उनके सारे काम धरती से गायब हो जाएंगे।
29. और अब से कुछ भी खराब नहीं होगा; क्योंकि इंसान का बेटा सामने आया है, और अपनी शान की राजगद्दी पर बैठ गया है, और सारी बुराई उसके सामने से चली जाएगी, और इंसान के उस बेटे की बात आगे बढ़ेगी और रूहों के मालिक के सामने मज़बूत होगी।

अध्याय 70

1. और इसके बाद ऐसा हुआ कि उसके जीवनकाल में उसका नाम पृथ्वी पर रहने वालों में से मनुष्य के पुत्र और आत्माओं के प्रभु के नाम पर ऊंचा किया गया।
2. और वह आत्मा के रथों पर ऊपर उठा लिया गया और उसका नाम उनके बीच से गायब हो गया।
3. और उस दिन से मैं उनमें गिना नहीं गया: और उसने मुझे दो हवाओं के बीच, उत्तर और पश्चिम के बीच खड़ा कर दिया, जहाँ स्वर्गदूतों ने मेरे लिए चुने हुए और नेक लोगों के लिए जगह नापने के लिए रस्सियाँ लीं।
4. और वहाँ मैंने पहले पुरखों और नेक लोगों को देखा जो शुरू से ही उस जगह पर रहते थे।

अध्याय 71

1. और इसके बाद ऐसा हुआ कि मेरी आत्मा स्वर्ग में चली गई, और स्वर्ग में चली गई: और मैंने परमेश्वर के पवित्र पुत्रों को देखा। वे आग की लपटों पर चल रहे थे: उनके कपड़े और उनके कपड़े सफेद थे, और उनके चेहरे बर्फ की तरह चमक रहे थे।
2. और मैंने आग की दो धाराएँ देखीं, और उस आग की रोशनी जलकुंभी की तरह चमक रही थी, और मैं आत्माओं के प्रभु के सामने मुँह के बल गिर पड़ा।
3. और स्वर्गदूत माइकल, जो महादूतों में से एक है, ने मेरा दाहिना हाथ पकड़ा, और मुझे उठाकर सारे राज़ों में ले गया, और मुझे नेकी के सारे राज़ दिखाए।
4. और उसने मुझे स्वर्ग के कोने-कोने के सारे राज़ दिखाए, और सभी तारों के कमरे और सभी रोशनी, जहाँ से वे पवित्र लोगों के सामने निकलते हैं।
5. और उसने मेरी आत्मा को स्वर्ग के स्वर्ग में पहुँचा दिया, और मैंने वहाँ क्रिस्टल से बनी एक संरचना देखी, और उन क्रिस्टल के बीच जीवित आग की जीभें थीं।

6. और मेरी आत्मा ने उस आग के घर को घेरने वाले पट्टे को देखा, और उसके चारों तरफ जीवित आग से भरी धाराएँ थीं, और उन्होंने उस घर को घेरा हुआ था।
7. और चारों ओर सेराफिन, करूबिक और ओफ़ैनिन थे: और ये वे हैं जो सोते नहीं हैं, और उसकी महिमा के सिंहासन की रक्षा करते हैं।
8. और मैंने ऐसे स्वर्गदूत देखे जिनकी गिनती नहीं की जा सकती थी, हज़ारों हज़ार, और दस हज़ार गुना दस हज़ार, उस घर को घेरे हुए थे। और माइकल, और राफेल, और गेब्रियल, और फानूएल, और पवित्र स्वर्गदूत जो स्वर्ग से ऊपर हैं, उस घर में आते-जाते रहते थे।
9. और वे उस घर से बाहर आए, और माइकल और गेब्रियल, राफेल और फानूएल, और अनगिनत पवित्र स्वर्गदूत।
10. और उनके साथ दिनों का मुखिया भी था, उसका सिर ऊन के समान सफेद और शुद्ध था, और उसका वस्त्र अवर्णनीय था।
11. और मैं मुंह के बल गिर पड़ा, और मेरा पूरा शरीर ढीला पड़ गया, और मेरी आत्मा बदल गई; और मैं ज़ोर से चिल्लाया, . . . शक्ति की आत्मा के साथ, और धन्य और महिमावान और प्रशंसित हुआ।
12. और मेरे मुँह से निकली ये दुआएँ उस दिन के मुखिया को बहुत अच्छी लगीं।
13. और दिनों का वह प्रधान मीकाएल और गेब्रील, रफएल और फानूएल, हज़ारों और लाखों अनगिनत स्वर्गदूतों के साथ आया।
14. और वह मेरे पास आया और अपनी आवाज़ से मुझे नमस्ते किया, और मुझसे कहा: 'यह इंसान का बेटा है जो नेकी के साथ पैदा हुआ है; और नेकी उस पर बनी रहती है, और दिनों के सिर की नेकी उसे नहीं छोड़ती।'
15. और उसने मुझसे कहा: 'वह आने वाली दुनिया के नाम पर तुम्हारे लिए शांति का ऐलान करता है; क्योंकि दुनिया के बनने के समय से ही शांति यहीं से आई है, और ऐसा ही तुम्हारे लिए हमेशा और हमेशा रहेगा।
16. और सब उसके मार्गों पर चलेंगे, क्योंकि नेकी कभी उसका साथ नहीं छोड़ती। उनके रहने की जगहें भी उसी के साथ होंगी, और उनकी विरासत भी उसी के साथ होगी। और वे उससे कभी अलग नहीं होंगे, हमेशा-हमेशा के लिए।
17. और इस तरह इंसान के बेटे की उम्र लंबी होगी, और नेक लोगों को शांति और सीधा रास्ता मिलेगा, रूहों के मालिक के नाम से हमेशा-हमेशा के लिए।'

अध्याय 72

1. आसमान की रोशनी के रास्तों की किताब, हर एक का रिश्ता, उनके क्लास, उनके दबदबे और उनके मौसम, उनके नाम और उनकी शुरुआत की जगह, और उनके महीनों के हिसाब से, जो उरीएल, पवित्र फ़रिश्ता, जो मेरे साथ था, जो उनका गाइड है, ने मुझे दिखाया; और उसने मुझे उनके सारे नियम ठीक वैसे ही दिखाए जैसे वे हैं, और यह दुनिया के सभी सालों और हमेशा के लिए कैसा है, जब तक कि नई दुनिया पूरी न हो जाए जो हमेशा तक चलती है।
2. और यह प्रकाश का पहला नियम है: प्रकाश सूर्य का उदय आकाश के पूर्वी द्वारों में होता है, और इसका अस्त आकाश के पश्चिमी द्वारों में होता है।
3. और मैंने छह द्वार देखे जिनमें सूरज उगता है, और छह द्वार जिनमें सूरज डूबता है और चाँद उगता और डूबता है, और तारों के लीडर और वे जिन्हें वे लीड करते हैं: छह पूरब में और छह पश्चिम में, और सभी एक-दूसरे के ठीक उसी क्रम में चलते हैं: इन द्वारों के दाईं और बाईं ओर कई खिड़कियाँ भी हैं।
4. और सबसे पहले सूरज नाम का एक बड़ा प्रकाशमान तारा निकलता है, और उसका घेरा आसमान के घेरे जैसा है, और वह पूरी तरह से रोशनी देने वाली और गर्म करने वाली आग से भरा हुआ है।
5. जिस रथ पर वह चढ़ता है, उसे हवा चलाती है, और सूरज स्वर्ग से डूब जाता है और पूरब तक पहुँचने के लिए उत्तर से लौटता है, और उसे इस तरह रास्ता मिलता है कि वह सही दरवाज़े पर पहुँचता है और स्वर्ग के सामने चमकता है।
6. इस तरह वह पहले महीने में बड़े द्वार में उगता है, जो साँचे में उन छह द्वारों में से चौथा है।
7. और उस चौथे दरवाज़े में, जहाँ से पहले महीने में सूरज निकलता है, बारह खिड़कियाँ हैं, जिनसे आग निकलती है जब वे अपने मौसम में खोली जाती हैं।
8. जब सूरज आसमान में उगता है, तो वह लगातार तीस सुबह उस चौथे दरवाज़े से निकलता है, और आसमान के पश्चिम में चौथे दरवाज़े पर ठीक उसी तरह डूबता है।
9. और इस समय में दिन हर दिन बड़ा होता जाता है और रात हर रात छोटी होती जाती है, सुबह तीस बजे तक।
10. उस दिन दिन रात से नौवां हिस्सा बड़ा होगा, और दिन ठीक दस हिस्से का और रात आठ हिस्से की होगी।
11. और सूरज उस चौथे दरवाज़े से निकलता है, चौथे दरवाज़े में डूबता है और तीस सुबह पूरब के पांचवें दरवाज़े पर लौटता है, और वहां से निकलता है और पांचवें दरवाज़े में डूबता है।
12. और फिर दिन दो भाग बड़ा होकर ग्यारह भाग का हो जाता है, और रात छोटी होकर सात भाग की हो जाती है।
13. और यह पूरब की ओर लौटकर छठे द्वार में प्रवेश करता है, और अपने चिन्ह के कारण छठे द्वार में सुबह डेढ़ बजे उगता और डूबता है।
14. उस दिन दिन रात से बड़ा हो जाएगा, और दिन रात से दोगुना हो जाएगा, और दिन बारह भागों का हो जाएगा, और रात छोटी होकर छह भागों की हो जाएगी।
15. और सूरज उगता है ताकि दिन छोटा हो और रात लंबी हो, और सूरज पूरब की ओर लौटता है और छठे दरवाज़े में घुसता है, और वहाँ से उगता है और तीस सुबह ढलता है।
16. और जब तीस सुबहें पूरी हो जाती हैं, तो दिन ठीक एक हिस्सा कम होकर ग्यारह हिस्से का हो जाता है और रात सात हिस्से की।
17. और सूरज पश्चिम में उस छठे दरवाज़े से निकलता है, और पूर्व की ओर जाता है और तीस सुबह तक पांचवें दरवाज़े में उगता है, और फिर पश्चिम में पांचवें पश्चिमी दरवाज़े में डूब जाता है।
18. उस दिन दिन दो भाग कम होकर दस भाग का हो जाएगा और रात आठ भाग की हो जाएगी।
19. और सूरज उस पांचवें दरवाज़े से निकलता है और पश्चिम के पांचवें दरवाज़े में डूबता है, और अपने निशान की वजह से डेढ़ सुबह तक चौथे दरवाज़े से उगता है, और पश्चिम में डूबता है।

20. उस दिन दिन रात के बराबर हो जाएगा, और बराबर लंबाई का हो जाएगा, और रात नौ भागों की और दिन नौ भागों का हो जाएगा।
21. और सूरज उस दरवाज़े से निकलता है और पश्चिम में डूबता है, फिर पूर्व की ओर लौटता है और तीसरे दरवाज़े से तीस सुबह उगता है और तीसरे दरवाज़े से पश्चिम में डूबता है।
22. और उस दिन रात दिन से बड़ी हो जाएगी, और रात रात से बड़ी हो जाएगी, और दिन दिन से छोटा हो जाएगा, जब तक कि सुबह तीस बजे तक न हो जाए, और रात ठीक दस भाग की और दिन आठ भाग का हो जाएगा।
23. और सूरज उस तीसरे दरवाज़े से उगता है और पश्चिम में तीसरे दरवाज़े में डूबता है और फिर पूरब की ओर लौट जाता है, और तीस सुबह तक पूरब में दूसरे दरवाज़े से उगता है, और इसी तरह आसमान के पश्चिम में दूसरे दरवाज़े में डूबता है।
24. और उस दिन रात ग्यारह भागों की और दिन सात भागों का होगा।
25. और उस दिन सूरज दूसरे दरवाज़े से उगेगा और दूसरे दरवाज़े में पश्चिम में डूबेगा, और डेढ़ सुबह तक पूरब में पहले दरवाज़े में लौटेगा, और आसमान के पश्चिम में पहले दरवाज़े में डूबेगा।
26. और उस दिन रात लंबी हो जाएगी और दिन का दोगुना हो जाएगा: और रात ठीक बारह भागों की और दिन छह भागों का हो जाएगा।
27. और सूरज अपनी कक्षा के हिस्सों को पार कर चुका है और अपनी कक्षा के उन हिस्सों पर फिर से घूम चुका है, और तीस सुबह उस दरवाज़े में दाखिल होता है और उसके सामने पश्चिम में डूब भी जाता है।
28. और उस रात रात की लंबाई नौवें हिस्से से कम हो गई, और रात ग्यारह हिस्सों की और दिन सात हिस्सों का हो गया।
29. और सूरज लौट आया है और पूरब में दूसरे दरवाज़े में घुस गया है, और तीस सुबह तक अपनी कक्षा के उन हिस्सों पर लौटता है, उगते और डूबते हुए।
30. और उस दिन रात छोटी हो जाएगी, और रात दस भागों की और दिन आठ भागों का हो जाएगा।
31. और उस दिन सूरज उस दरवाज़े से निकलेगा, और पश्चिम में डूबेगा, और फिर पूरब की ओर लौटेगा, और तीसरे दरवाज़े से डेढ़ सुबह तक उगेगा, और आसमान के पश्चिम में डूबेगा।
32. उस दिन रात घटकर नौ भाग की हो जाएगी, और दिन नौ भाग का हो जाएगा, और रात दिन के बराबर हो जाएगी, और साल अपने दिनों के बराबर तीन सौ चौसठ हो जाएगा।
33. और दिन और रात की लंबाई, और दिन और रात का छोटा होना - ये फर्क सूरज की चाल से होते हैं।
34. इस प्रकार ऐसा होता है कि उसका मार्ग प्रतिदिन लम्बा होता जाता है, और रात्रि में उसका मार्ग छोटा होता जाता है।
35. और यही सूरज का नियम और रास्ता है, और उसका लौटना जितनी बार वह साठ बार लौटता है और उगता है, यानी वह महान प्रकाश जिसे सूरज कहा जाता है, हमेशा-हमेशा के लिए।
36. और जो इस तरह उगता है वह महान प्रकाश है, और इसका नाम इसके रूप के अनुसार रखा गया है, जैसा कि प्रभु ने आज्ञा दी थी।
37. जैसे वह उगता है, वैसे ही डूबता है, घटता नहीं, और आराम नहीं करता, बल्कि दिन-रात दौड़ता रहता है, और उसकी रोशनी चाँद से सात गुना ज़्यादा तेज़ है; लेकिन साइज़ के मामले में वे दोनों बराबर हैं।

अध्याय 73

1. और इस नियम के बाद मैंने एक और नियम देखा जो छोटे तारे से जुड़ा है, जिसका नाम चाँद है।
2. और उसका घेरा आसमान के घेरे जैसा है, और उसका रथ जिस पर वह सवार है, हवा से चलता है, और उसे रोशनी एक खास हद तक दी गई है।
3. और उसका उगना और डूबना हर महीने बदलता रहता है: और उसके दिन सूरज के दिनों जैसे हैं, और जब उसकी रोशनी एक जैसी होती है तो वह सूरज की रोशनी का सातवां हिस्सा होती है।
4. और इस तरह वह उगती है। और पूरब में उसका पहला हिस्सा तीसवीं सुबह निकलता है: और उस दिन वह दिखाई देती है, और तुम्हारे लिए तीसवें दिन चाँद का पहला हिस्सा बनती है, साथ ही सूरज के साथ उस दरवाज़े पर जहाँ सूरज उगता है।
5. और उसका आधा हिस्सा सातवें हिस्से तक फैला हुआ है, और उसका पूरा घेरा खाली है, बिना रोशनी के, उसके सातवें हिस्से और उसकी रोशनी के चौदहवें हिस्से को छोड़कर।
6. और जब वह अपनी आधी ज्योति का सातवाँ भाग प्राप्त कर लेती है, तो उसकी ज्योति उसका सातवाँ भाग और आधा हो जाती है।
7. और वह सूरज के साथ डूब जाती है, और जब सूरज उगता है तो चाँद भी उसके साथ उगता है और रोशनी का आधा हिस्सा पाता है, और उस रात सुबह की शुरुआत में, चांद के दिन की शुरुआत में चाँद सूरज के साथ डूब जाता है, और उस रात चौदह हिस्सों और उनमें से एक के आधे हिस्से के साथ दिखाई नहीं देता।
8. और उस दिन वह ठीक सातवें हिस्से में उगती है, और सूरज के उगने के साथ ही बाहर आती है और पीछे हट जाती है, और अपने बाकी दिनों में वह बाकी तेरह हिस्सों में रोशन हो जाती है।

अध्याय 74

1. और मैंने एक और तरीका देखा, उसके लिए एक नियम, और कैसे उस नियम के अनुसार वह अपना मासिक धर्म करती है।
2. और ये सब उरीएल, पवित्र स्वर्गदूत जो इन सबका लीडर है, उसने मुझे दिखाए, और उनकी जगहें भी, और मैंने उनकी जगहें वैसे ही लिखीं जैसे उसने मुझे दिखाई थीं, और मैंने उनके महीने वैसे ही लिखे जैसे वे थे, और उनकी रोशनी का दिखना जब तक पंद्रह दिन पूरे नहीं हो गए।
3. एक ही सातवें हिस्से में वह पूरब में अपनी सारी रोशनी पूरी करती है, और एक ही सातवें हिस्से में वह पश्चिम में अपना सारा अंधेरा पूरा करती है।
4. और कुछ महीनों में वह अपनी सेटिंग बदल देती है, और कुछ महीनों में वह अपना खास रास्ता अपनाती है।
5. दो महीनों में चाँद सूरज के साथ डूबता है: उन दो बीच के दरवाज़ों में तीसरा और चौथा दरवाज़ा है।
6. वह सात दिन तक बाहर जाती है, और घूमकर फिर उस दरवाज़े से वापस आती है जहाँ से सूरज निकलता है, और अपनी

सारी रोशनी पूरी कर लेती है: और वह सूरज से दूर हो जाती है, और आठ दिन में छठे दरवाज़े में जाती है जहाँ से सूरज निकलता है।
7. और जब सूरज चौथे दरवाज़े से निकलता है तो वह सात दिन तक बाहर रहती है, जब तक वह पांचवें दरवाज़े से बाहर नहीं निकल जाती और सात दिनों में वापस चौथे दरवाज़े में लौट आती है और अपनी सारी रोशनी पूरी कर लेती है: और वह पीछे हट जाती है और आठ दिनों में पहले दरवाज़े में घुस जाती है।
8. और वह सात दिन में फिर चौथे द्वार पर लौट जाती है जहाँ से सूरज निकलता है।
9. इस प्रकार मैंने उनकी स्थिति देखी - उन दिनों में चाँद कैसे उदय होते थे और सूर्य कैसे अस्त होता था।
10. और अगर पाँच साल जोड़ दिए जाएँ तो सूरज के पास तीस दिन ज़्यादा हो जाते हैं, और उन पाँच सालों में से एक साल के पूरे होने पर जितने दिन जुड़ते हैं, वे सब 364 दिन होते हैं।
11. और सूरज और तारों का जोड़ छह दिन का होता है: 5 साल में हर साल 6 दिन 30 दिन के होते हैं: और चाँद सूरज और तारों से 30 दिन पीछे हो जाता है।
12. और सूरज और तारे सभी सालों को ठीक-ठीक लाते हैं, ताकि वे अपनी जगह पर एक भी दिन आगे न बढ़ें या हमेशा के लिए देरी न करें; बल्कि सालों को पूरे न्याय के साथ 364 दिनों में पूरा करते हैं।
13. 3 साल में 1092 दिन होते हैं, और 5 साल में 1820 दिन होते हैं, इस प्रकार 8 साल में 2912 दिन होते हैं।
14. सिर्फ़ चाँद के लिए 3 साल में दिन 1062 दिन होते हैं, और 5 साल में वह 50 दिन पीछे हो जाता है: [यानी (1770 के) जोड़ में (1000 और) 62 दिन जोड़ने हैं।]
15. और 5 साल में 1770 दिन होते हैं, इसलिए चाँद के लिए 8 साल में दिन 2832 दिन होते हैं।
16. [क्योंकि 8 वर्ष में वह 80 दिन पीछे हो जाती है], 8 वर्ष में वह जितने दिन पीछे हो जाती है वे सभी 80 दिन हैं।
17. और वर्ष उनकी विश्व-अवस्थाओं और सूर्य की अवस्थाओं के अनुसार ठीक-ठीक पूरा होता है, जो उन द्वारों से निकलता है जिनसे वह (सूर्य) उदय होता है और अस्त होता है, तीस दिन का।

अध्याय 75

1. और हज़ारों के मुखियाओं के नेता, जो पूरी दुनिया और सभी तारों के ऊपर रखे गए हैं, उन्हें भी चार अलग-अलग दिनों से काम करना है, क्योंकि वे साल के हिसाब के हिसाब से अपने काम से अलग नहीं किए जा सकते, और ये उन चार दिनों में सेवा करते हैं जिन्हें साल के हिसाब में नहीं गिना जाता।
2. और उनकी वजह से लोग इसमें गलत हो जाते हैं, क्योंकि वे रोशनी सच में दुनिया के स्टेशनों पर काम करती हैं, एक पहले पोर्टल में, एक स्वर्ग के तीसरे पोर्टल में, एक चौथे पोर्टल में, और एक छठे पोर्टल में, और साल की सही तारीख उसके अलग-अलग तीन सौ चौसठ स्टेशनों से पता चलती है।
3. क्योंकि ऊरीएल नाम के स्वर्गदूत ने मुझे वे निशानियाँ, समय, साल और दिन दिखाए, जिन्हें महिमा के प्रभु ने हमेशा के लिए स्वर्ग की सभी रोशनियों पर, स्वर्ग और दुनिया में, इसलिए रखा है कि वे स्वर्ग पर राज करें और धरती पर दिखाई दें, और दिन और रात, यानी सूरज, चाँद, और सितारों, और स्वर्ग के सभी रथों में चक्कर लगाने वाले सभी सेवा करने वाले जीवों के लीडर बनें।
4. इसी तरह उरीएल ने मुझे बारह दरवाज़े दिखाए, जो आसमान में सूरज के रथ के घेरे में खुले थे, जिनसे सूरज की किरणें निकलती हैं: और उनसे धरती पर गर्मी फैलती है, जब वे अपने तय समय पर खुलते हैं।
5. और हवाओं और ओस की आत्मा के लिए जब वे खुले होते हैं, आकाश में छोर पर खुले खड़े होते हैं।
6. धरती के कोने-कोने में आसमान के बारह दरवाज़े हैं, जिनसे सूरज, चाँद, तारे और पूरब और पश्चिम में आसमान की सारी चीज़ें निकलती हैं।
7. उनके बाईं और दाईं ओर कई खिड़कियाँ खुली हैं, और एक खिड़की अपने तय समय पर गर्मी पैदा करती है, ठीक वैसे ही जैसे ये उन दरवाज़ों से करती हैं जिनसे तारे निकलते हैं जैसा उसने उन्हें हुक्म दिया है, और जिनमें वे अपनी संख्या के हिसाब से सेट होते हैं।
8. और मैंने स्वर्ग में रथों को दुनिया में दौड़ते देखा, उन दरवाज़ों के ऊपर जिनमें वे तारे घूमते हैं जो कभी डूबते नहीं।
9. और एक सबसे बड़ा है, और वही पूरी दुनिया में अपना रास्ता बनाता है।

अध्याय 76

1. और पृथ्वी के छोर पर मैंने आकाश के सभी कोनों के लिए बारह द्वार खुले देखे, जहाँ से हवाएँ निकलती हैं और पृथ्वी पर बहती हैं।
2. उनमें से तीन आकाश की ओर, तीन पश्चिम की ओर, तीन आकाश के दाहिनी ओर, और तीन बाईं ओर खुले हैं।
3. और पहले तीन पूर्व के हैं, और तीन उत्तर के हैं, और तीन दक्षिण के बाईं ओर के हैं, और तीन पश्चिम के हैं।
4. इनमें से चार के ज़रिए आशीर्वाद और खुशहाली की हवाएँ आती हैं, और उन आठ से नुकसान पहुँचाने वाली हवाएँ आती हैं: जब वे भेजी जाती हैं, तो वे सारी धरती और उस पर मौजूद पानी पर, और उस पर रहने वाले सभी लोगों पर, और पानी और ज़मीन पर मौजूद हर चीज़ पर तबाही लाती हैं।
5. और उन दरवाज़ों से पहली हवा, जिसे पूर्वी हवा कहते हैं, पहले दरवाज़े से निकलती है जो पूरब में है, और दक्षिण की ओर झुकी हुई है: उससे तबाही, सूखा, गर्मी और तबाही निकलती है।
6. और बीच में दूसरे दरवाज़े से जो सही है वो आता है, और उससे बारिश, फल-फूल, खुशहाली और ओस आती है; और तीसरे दरवाज़े से जो उत्तर की ओर है, ठंड और सूखा आता है।
7. और इनके बाद दक्षिण की हवाएँ तीन दरवाज़ों से निकलती हैं: उनमें से पहले दरवाज़े से, जो पूरब की ओर झुका हुआ है, एक गर्म हवा निकलती है।
8. और उसके बगल में बीच के दरवाज़े से खुशबूदार खुशबू, ओस, बारिश, खुशहाली और सेहत आती है।
9. और पश्चिम की ओर स्थित तीसरे द्वार से ओस और वर्षा, टिड्डियाँ और विनाश निकलते हैं।
10. और इनके बाद उत्तर की हवाएँ: पूर्व में सातवें द्वार से ओस और वर्षा, टिड्डियाँ और विनाश आते हैं।

11. और बीच वाले दरवाज़े से सीधे सेहत, बारिश, ओस और खुशहाली आती है; और पश्चिम में तीसरे दरवाज़े से बादल, पाला, बर्फ़, बारिश, ओस और टिड्डियां आती हैं।
12. और इन [चार] के बाद पश्चिमी हवाएँ हैं: उत्तर से सटे पहले द्वार से ओस, पाला, सर्दी, बर्फ और पाला निकलता है।
13. और बीच वाले दरवाज़े से ओस और बारिश, खुशहाली और आशीर्वाद निकलता है; और आखिरी दरवाज़े से जो दक्षिण से जुड़ा है, सूखा और तबाही, जलन और तबाही निकलती है।
14. और स्वर्ग के चारों कोनों के बारह दरवाज़े पूरे हो गए हैं, और उनके सारे नियम, सारी मुसीबतें और सारे फ़ायदे मैंने तुम्हें दिखाए हैं, मेरे बेटे मतूशेलह।

अध्याय 77

1. और पहले हिस्से को पूरब कहा गया है, क्योंकि वह पहला है: और दूसरे को दक्षिण, क्योंकि सबसे ऊँचा वहाँ उतरेगा, हाँ, वहाँ एक खास मतलब में वह उतरेगा जो हमेशा के लिए धन्य है।
2. और पश्चिम दिशा का नाम कम हुआ है, क्योंकि वहाँ आकाश की सभी ज्योतियाँ क्षीण होकर डूब जाती हैं।
3. और चौथा हिस्सा, जिसका नाम उत्तर है, तीन हिस्सों में बंटा हुआ है: पहला हिस्सा इंसानों के रहने के लिए है: और दूसरे हिस्से में पानी के समुद्र, और गहरी खाई, और जंगल, और नदियाँ, और अंधेरा और बादल हैं; और तीसरे हिस्से में नेकी का बगीचा है।
4. मैंने सात ऊँचे पहाड़ देखे, जो धरती के सभी पहाड़ों से ऊँचे थे: और वहाँ से पाला निकलता है, और दिन, मौसम और साल गुज़र जाते हैं।
5. मैंने धरती पर सात नदियाँ देखीं जो सब नदियों से बड़ी थीं: उनमें से एक पश्चिम से आकर अपना पानी महासागर में डाल देती थी।
6. और ये दोनों उत्तर से समुद्र तक आते हैं और अपना पानी पूर्व में एरिथ्रियन सागर में डालते हैं।
7. और बाकी चार उत्तर की ओर अपने समुद्र की ओर निकल आते हैं, उनमें से दो एरिथ्रियन सागर में, और दो महासागर में और वहाँ और कुछ कहते हैं: रेगिस्तान में चले जाते हैं।
8. मैंने समुद्र और मुख्य भूमि में सात बड़े द्वीप देखे: दो मुख्य भूमि में और पाँच महासागर में।

अध्याय 78

1. और सूर्य के नाम निम्नलिखित हैं: पहला ओजरिस, और दूसरा टोमास।
2. और चाँद के चार नाम हैं: पहला नाम असोन्या, दूसरा एब्ला, तीसरा बेनासे और चौथा एराए है।
3. ये दो महान प्रकाशमान पिंड हैं: इनकी परिधि आकाश की परिधि के समान है, और दोनों की परिधि का आकार एक समान है।
4. सूरज के घेरे में रोशनी के सात हिस्से हैं जो चांद से ज़्यादा उसमें जुड़ते हैं, और यह तय मात्रा में तब तक ट्रांसफर होता रहता है जब तक सूरज का सातवां हिस्सा खत्म नहीं हो जाता।
5. और वे पश्चिम के दरवाज़ों से निकलकर उत्तर की ओर मुड़ते हैं, और पूर्वी दरवाज़ों से होकर आकाश की ओर निकलते हैं।
6. और जब चाँद निकलता है तो आसमान में उसका चौदहवाँ हिस्सा दिखाई देता है: उसमें रोशनी पूरी हो जाती है: चौदहवें दिन वह अपनी रोशनी पूरी कर लेती है।
7. और पंद्रहवें दिन तक जब उसकी रोशनी पूरी हो जाती है, तो साल के निशान के हिसाब से पंद्रह हिस्से रोशनी उसमें ट्रांसफर हो जाती है, और वह पंद्रह हिस्से की हो जाती है, और चांद चौदहवें हिस्से के हिसाब से बढ़ता है।
8. और अपने घटते हुए चंद्रमा में पहले दिन उसकी रोशनी चौदह भाग रह जाती है, दूसरे दिन तेरह भाग, तीसरे दिन बारह, चौथे दिन ग्यारह, पांचवें दिन दस, छठे दिन नौ, सातवें दिन आठ, आठवें दिन सात, नौवें दिन छह, दसवें दिन पांच, ग्यारहवें दिन चार, बारहवें दिन तीन, तेरहवें दिन दो, चौदहवें दिन सातवें दिन का आधा, और पंद्रहवें दिन उसकी बची हुई सारी रोशनी पूरी तरह गायब हो जाती है।
9. और कुछ महीनों में एक महीना उनतीस दिन का होता है और एक बार अट्ठाईस दिन का।
10. और उरीएल ने मुझे एक और नियम दिखाया: जब प्रकाश चंद्रमा पर स्थानांतरित होता है, और सूर्य द्वारा यह किस तरफ स्थानांतरित होता है।
11. जितने समय में चाँद अपनी रोशनी में बढ़ रहा होता है, वह उसे खुद पर ट्रांसफर कर रही होती है। चौदह दिनों तक सूरज के उलटे रहने पर उसकी रोशनी आसमान में पूरी होती है, और जब वह पूरी तरह से रोशन होती है, तो उसकी रोशनी आसमान में पूरी होती है।
12. और पहले दिन को वह नया चाँद कहलाती है, क्योंकि उस दिन उस पर रोशनी आती है।
13. वह ठीक उसी दिन पूर्णिमा बनती है जब सूरज पश्चिम में डूबता है, और पूरब से वह रात में उगती है, और चाँद पूरी रात चमकता रहता है जब तक कि सूरज उसके सामने नहीं उगता और चाँद सूरज के सामने दिखाई नहीं देता।
14. जिस तरफ से चाँद की रोशनी निकलती है, वहाँ फिर वह कम होती जाती है जब तक कि सारी रोशनी गायब नहीं हो जाती और महीने के सारे दिन खत्म नहीं हो जाते, और उसका घेरा खाली हो जाता है, रोशनी से खाली।
15. और वह तीस दिन के तीन महीने बनाती है, और अपने समय में वह उनतीस दिन के तीन महीने बनाती है, जिसमें वह पहले समय में अपनी समाप्ति पूरी करती है, और पहले द्वार में एक सौ सतहत्तर दिन तक।
16. और जब वह बाहर निकलती है, तो तीन महीने तीस-तीस दिन के लिए दिखाई देती है, और तीन महीने उनतीस दिन के लिए दिखाई देती है।
17. रात में वह बीस दिन तक हर बार मनुष्य की तरह दिखाई देती है, और दिन में वह स्वर्ग की तरह दिखाई देती है, और उसमें उसकी रोशनी के अलावा और कुछ नहीं है।

अध्याय 79

1. और अब, मेरे बेटे, मैंने तुम्हें सब कुछ दिखा दिया है, और आकाश के सभी तारों का नियम पूरा हो गया है।
2. और उसने मुझे हर दिन, हर मौसम, हर साल, हर साल के शुरू होने, हर महीने और हर हफ़्ते के लिए तय किए गए इन सभी नियमों को दिखाया:

3. और चाँद का घटता हुआ भाग जो छठे द्वार में होता है: क्योंकि इस छठे द्वार में उसकी रोशनी पूरी होती है, और उसके बाद घटने की शुरुआत होती है:
4. और पहले द्वार में जो घटता है, वह अपने समय पर होता है, जब तक एक सौ सतहत्तर दिन पूरे नहीं हो जाते: हफ़्तों के हिसाब से गिने गए, पच्चीस हफ़्ते और दो दिन।
5. वह एक समय में सूरज और तारों के क्रम से ठीक पाँच दिन पीछे रह जाती है, और जब यह जगह जिसे तुम देख रहे हो, पार कर ली जाती है।
6. हर रोशनी की तस्वीर और स्केच ऐसा ही है, जो उनके लीडर, आर्कएंजल उरीएल ने मुझे दिखाया।

अध्याय 80

1. और उन दिनों में स्वर्गदूत उरीएल ने जवाब दिया और मुझसे कहा: 'देखो, मैंने तुम्हें सब कुछ दिखाया है, हनोक, और मैंने तुम्हें सब कुछ बताया है ताकि तुम इस सूरज और इस चाँद को, और आकाश के तारों के नेताओं और उन सभी को जो उन्हें घुमाते हैं, उनके कामों और समयों और प्रस्थानों को देख सको।
2. और पापियों के दिनों में साल कम हो जाएँगे, और उनके बीज उनकी ज़मीन और खेतों में देर से उगेंगे, और धरती पर सब कुछ बदल जाएगा, और अपने समय पर नहीं दिखेगा: और बारिश रुक जाएगी, और आसमान उसे रोक लेगा।
3. और उस समय धरती के फल पिछड़े रहेंगे, और अपने समय पर नहीं उगेंगे, और पेड़ों के फल अपने समय पर नहीं उगेंगे।
4. और चाँद अपना क्रम बदल देगा, और अपने समय पर दिखाई नहीं देगा।
5. और उन दिनों सूरज दिखेगा और वह शाम को बड़े रथ के किनारे पर पश्चिम की ओर यात्रा करेगा, और रोशनी के हिसाब से ज़्यादा तेज़ चमकेगा।
6. और सितारों के कई सरदार तय क्रम को तोड़ देंगे। और ये अपने चक्कर और काम बदल देंगे, और तय मौसम में नहीं दिखेंगे।
7. और तारों का पूरा क्रम पापियों से छिप जाएगा, और धरती पर रहने वालों के विचार उनके बारे में भटक जाएंगे, और वे अपने सभी रास्तों से बदल जाएंगे, हां, वे भटक जाएंगे और उन्हें भगवान मान लेंगे।
8. और उन पर बुराई बढ़ेगी, और उन पर ऐसी सज़ा आएगी कि सब कुछ खत्म हो जाएगा।'

अध्याय 81

1. और उसने मुझसे कहा: 'हनोक, इन आसमानी तख्तियों को ध्यान से देखो, और उन पर जो लिखा है उसे पढ़ो, और हर एक बात पर ध्यान दो।'
2. और मैंने आसमान की तख्तियों को देखा, और उन पर लिखी हर बात को पढ़ा और सब कुछ समझा, और इंसानों के सभी कामों की किताब पढ़ी, और धरती पर रहने वाले सभी इंसानों के बच्चों के बारे में भी जो आने वाली पीढ़ियों तक रहेंगे।
3. और तुरंत मैंने महान प्रभु को, जो महिमा का राजा है, सदा के लिए धन्य कहा, क्योंकि उसने दुनिया के सारे काम किए हैं, और मैंने प्रभु को उसके सब्र के कारण सराहा, और इंसानों की संतानों के कारण उसे धन्य कहा।
4. और उसके बाद मैंने कहा: 'धन्य है वह आदमी जो नेकी और भलाई में मरता है, जिसके बारे में बुराई की कोई किताब नहीं लिखी है, और जिसके खिलाफ फैसले का कोई दिन नहीं आएगा।'
5. और उन सात पवित्र लोगों ने मुझे लाकर मेरे घर के दरवाज़े के सामने ज़मीन पर बिठा दिया, और मुझसे कहा: 'अपने बेटे मतूशेलह को सब कुछ बताओ, और अपने सभी बच्चों को दिखाओ कि प्रभु की नज़र में कोई भी इंसान नेक नहीं है, क्योंकि वही उनका बनाने वाला है।
6. एक साल तक हम तुम्हें तुम्हारे बेटे के साथ छोड़ देंगे, जब तक तुम अपनी आखिरी आज्ञाएँ न दे दो, ताकि तुम अपने बच्चों को सिखा सको और उन्हें लिख सको, और अपने सभी बच्चों को गवाही दे सको; और दूसरे साल वे तुम्हें अपने बीच से निकाल देंगे।
7. तेरा दिल मज़बूत रहे, क्योंकि अच्छा लोग अच्छे लोगों को नेकी की बात कहेंगे; नेक लोग नेक लोगों के साथ खुशियाँ मनाएँगे, और एक दूसरे को बधाई देंगे।
8. परन्तु पापी पापियों के साथ मरेंगे, और धर्मत्यागी धर्मत्यागी के साथ ही डूबेंगे।
9. और जो नेकी करते हैं, वे इंसानों के कामों की वजह से मरेंगे, और नास्तिकों के कामों की वजह से उठा लिए जाएँगे।
10. और उन दिनों में उन्होंने मुझसे बात करना बंद कर दिया, और मैं दुनिया के भगवान को आशीर्वाद देते हुए अपने लोगों के पास आया।

अध्याय 82

1. और अब, मेरे बेटे मतूशेलह, ये सारी बातें मैं तुम्हें बता रहा हूँ और तुम्हारे लिए लिख रहा हूँ, और मैंने तुम्हें सब कुछ बता दिया है, और इन सब के बारे में तुम्हें किताबें दी हैं: इसलिए, मेरे बेटे मतूशेलह, अपने पिता के हाथ से ये किताबें संभाल कर रखना, और देखना कि तुम उन्हें दुनिया की पीढ़ियों तक पहुँचाना।
2. मैंने तुम्हें और तुम्हारे बच्चों को, और तुम्हारे बच्चों को जो तुम्हारे होंगे, बुद्धि दी है, ताकि वे इसे अपनी पीढ़ियों तक अपने बच्चों को दें, यह बुद्धि, जो उनके विचार से परे है।
3. और जो इसे समझते हैं वे सोएंगे नहीं, बल्कि कान लगाकर सुनेंगे ताकि वे यह ज्ञान सीख सकें, और जो इसे खाते हैं वे इसे अच्छे भोजन से भी ज़्यादा पसंद करेंगे।
4. धन्य हैं सभी नेक लोग, धन्य हैं वे सभी जो नेकी के रास्ते पर चलते हैं और पापियों की तरह पाप नहीं करते, उनके सभी दिनों का हिसाब जिसमें सूरज आसमान में घूमता है, हज़ारों तारों के क्रम के सिरों के साथ तीस दिनों तक दरवाज़ों में अंदर-बाहर होता है, साथ में वे चार जो आपस में जुड़े हुए हैं जो साल के चार हिस्सों को बांटते हैं, जो उन्हें आगे ले जाते हैं और उनके साथ चार दिन में अंदर जाते हैं।
5. उनके कारण लोग दोषी होंगे और पूरे साल के हिसाब में उन्हें नहीं गिनेंगे: हां, लोग दोषी होंगे, और उन्हें ठीक से नहीं पहचानेंगे।
6. क्योंकि वे साल के हिसाब से हैं और हमेशा के लिए उसमें लिखे गए हैं, एक पहले दरवाज़े में, एक तीसरे में, एक चौथे में, और एक छठे में, और साल तीन सौ चौसठ दिनों में पूरा होता है।

7. और इसका हिसाब सही है और इसका रिकॉर्ड किया गया हिसाब एकदम सही है; क्योंकि उरीएल ने मुझे रोशनी, महीने, त्योहार, साल और दिन दिखाए और बताए हैं, जिसके अधीन दुनिया की सारी सृष्टि के मालिक ने स्वर्ग की सेना को रखा है।
8. और उसे आसमान में रात और दिन पर अधिकार है, ताकि वह इंसानों को रोशनी दे सके - सूरज, चाँद, तारे, और आसमान की सारी ताकतें जो अपने गोल रथों में घूमती हैं।
9. और ये तारों के क्रम हैं, जो अपने स्थानों, और उनके मौसमों, त्योहारों और महीनों में अस्त होते हैं।
10. और ये उन लोगों के नाम हैं जो उनके अगुआ हैं, जो देखते हैं कि वे अपने समय पर, अपने क्रम में, अपने मौसमों में, अपने महीनों में, अपने प्रभुत्व की अवधि में और अपने पदों पर प्रवेश करते हैं।
11. उनके चार लीडर जो साल के चार हिस्सों को बांटते हैं, पहले आते हैं; और उनके बाद ऑर्डर के बारह लीडर जो महीनों को बांटते हैं; और तीन सौ साठ दिनों के लिए हज़ारों के ऊपर हेड होते हैं जो दिनों को बांटते हैं; और चार एक्स्ट्रा दिनों के लिए लीडर होते हैं जो साल के चार हिस्सों को बांटते हैं।
12. और हज़ारों के ऊपर ये मुखिया एक लीडर से दूसरे लीडर के बीच में रखे जाते हैं, हर एक अपनी जगह पर होता है, लेकिन उनके लीडर ही बँटवारा करते हैं। और ये उन लीडरों के नाम हैं जो साल के चार हिस्सों को बाँटते हैं जो तय किए गए हैं: मिल्कीएल, हेल्मेलक, मेलेजल और नारेल।
13. और जो लोग उनका नेतृत्व करते हैं उनके नाम हैं: अदनारएल, इजासुसएल और एलोमेल - ये तीनों ग्रुप के लीडरों के पीछे चलते हैं,
14. और एक ऐसा है जो उन तीन लीडर्स के बाद आता है जो उन स्टेशनों के लीडर्स के बाद आते हैं जो साल के चार हिस्सों को बांटते हैं।
15. साल की शुरुआत में मेल्केजल सबसे पहले उठता है और राज करता है, जिसका नाम तम'आइनी और सूरज है, और जब तक वह राज करता है, उसके राज के कुल दिन 91 दिन होते हैं।
16. और ये उन दिनों के निशान हैं जो उसके राज के दिनों में धरती पर देखे जाएँगे: पसीना, गर्मी, और शांति; और सभी पेड़ों पर फल लगेंगे, और सभी पेड़ों पर पत्ते आएंगे, और गेहूं की फसल होगी, और गुलाब के फूल, और खेत में उगने वाले सभी फूल, लेकिन सर्दियों के मौसम के पेड़ सूख जाएँगे।
17. और उनके नीचे जो सरदार हैं, उनके नाम ये हैं: बर्केल, ज़ेलेब्सेल, और एक और जो हज़ार का सरदार था, जिसका नाम हिलूजासेफ था: और इस सरदार के राज के दिन खत्म हो गए हैं।
18. उसके बाद अगला लीडर हेल्मेमेलेक है, जिसे चमकता हुआ सूरज कहा जाता है, और उसकी रोशनी के सभी दिन 91 दिन के होते हैं।
19. और धरती पर उसके दिनों की ये निशानियाँ हैं: तेज़ गर्मी और सूखापन, और पेड़ अपने फल पकाते हैं और अपने सभी फल पके और तैयार पैदा करते हैं, और भेड़ें जोड़े बनाती हैं और गर्भवती होती हैं, और धरती के सभी फल इकट्ठा किए जाते हैं, और खेतों में जो कुछ भी है, और अंगूर का रस निकालने की मशीन: ये बातें उसके राज के दिनों में होती हैं।
20. ये नाम, क्रम और हज़ारों के सरदारों के नाम हैं: गिदजल, केएल, और हेएल, और हज़ारों के सरदार का नाम जो उनके साथ जुड़ गया, असफाएल: और उसके राज के दिन खत्म हो गए हैं।

अध्याय 83

1. और अब, मेरे बेटे मतूशेलह, मैं तुम्हें अपने सारे दर्शन दिखाऊंगा जो मैंने देखे हैं, और उन्हें तुम्हारे सामने बताऊंगा।
2. शादी करने से पहले मैंने दो सपने देखे थे, और एक दूसरे से बिल्कुल अलग था: पहला जब मैं लिखना सीख रहा था: दूसरा तुम्हारी माँ से शादी करने से पहले, जब मैंने एक भयानक सपना देखा। और उनके बारे में मैंने भगवान से प्रार्थना की।
3. मैं अपने दादा महललेल के घर में लेटा हुआ था, जब मैंने एक दर्शन में देखा कि कैसे स्वर्ग ढह गया और उड़कर धरती पर गिर पड़ा।
4. और जब वह धरती पर गिरा तो मैंने देखा कि धरती एक बड़े गड्ढे में समा गई है, और पहाड़ पहाड़ों पर लटके हुए हैं, और पहाड़ियां पहाड़ियों पर धंस रही हैं, और ऊंचे पेड़ अपने तनों से टूटकर नीचे गिर गए हैं और गड्ढे में डूब गए हैं।
5. और तब मेरे मुंह से एक शब्द निकला, और मैंने ऊंची आवाज में चिल्लाकर कहा: 'पृथ्वी नष्ट हो गई है।'
6. और जब मैं उनके पास लेटा था, तो मेरे दादा महललेल ने मुझे जगाया और मुझसे कहा: 'बेटा, तुम इतना क्यों रो रहे हो, और इतना विलाप क्यों कर रहे हो?'
7. और मैंने उसे वह पूरा नज़ारा बताया जो मैंने देखा था, और उसने मुझसे कहा: 'बेटा, तुमने एक भयानक चीज़ देखी है, और धरती के सारे पापों के राज़ के बारे में तुम्हारा यह सपना बहुत गंभीर है: यह ज़रूर रसातल में डूब जाएगा और बड़ी तबाही के साथ खत्म हो जाएगा।
8. और अब, मेरे बेटे, उठो और महिमा के प्रभु से विनती करो, क्योंकि तुम एक विश्वासी हो, ताकि धरती पर कुछ लोग बचे रहें, और वह पूरी धरती को नष्ट न करे।
9. हे मेरे पुत्र, यह सब स्वर्ग से पृथ्वी पर आएगा, और पृथ्वी पर महाविनाश होगा।
10. उसके बाद मैं उठा और प्रार्थना की और विनती की और दुनिया की पीढ़ियों के लिए अपनी प्रार्थना लिखी, और मैं तुम्हें सब कुछ दिखाऊंगा, मेरे बेटे मतूशेलह।
11. और जब मैं नीचे गया और मैंने आसमान को देखा, और सूरज को पूरब में उगते हुए, और चांद को पश्चिम में डूबते हुए, और कुछ तारे, और पूरी धरती, और सब कुछ जैसा उसने शुरू में जाना था, तब मैंने इंसाफ़ के मालिक को आशीर्वाद दिया और उसकी तारीफ़ की क्योंकि उसने सूरज को पूरब की खिड़कियों से निकलने दिया था, और वह ऊपर चढ़ा और आसमान पर चढ़ा, और निकल पड़ा और उसे दिखाए गए रास्ते पर चलता रहा।

अध्याय 84

1. और मैंने नेकी से अपने हाथ ऊपर उठाए और पवित्र और महान परमेश्वर को धन्यवाद दिया, और अपने मुँह की साँस और शरीर की ज़बान से बात की, जिसे परमेश्वर ने इंसानों के बच्चों के लिए बनाया है, ताकि वे उससे बोल सकें, और उसने उन्हें साँस और ज़बान और मुँह दिया ताकि वे उससे बोल सकें:
2. 'हे प्रभु, राजा, तू धन्य हो, अपनी महानता में महान और शक्तिशाली, स्वर्ग की सारी सृष्टि का स्वामी, राजाओं का राजा और पूरी दुनिया का परमेश्वर। और तेरी शक्ति, राज और महानता हमेशा-हमेशा बनी रहे, और सभी पीढ़ियों तक तेरा राज

रहे; और सारा स्वर्ग हमेशा के लिए तेरा सिंहासन है, और पूरी धरती हमेशा-हमेशा के लिए तेरे चरणों की चौकी है।
3. क्योंकि तूने ही सब कुछ बनाया है और तू ही सब पर राज करता है, और तेरे लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है, बुद्धि तेरे सिंहासन की जगह से नहीं हटती, न ही तेरी मौजूदगी से दूर होती है। और तू सब कुछ जानता, देखता और सुनता है, और तुझसे कुछ भी छिपा नहीं है क्योंकि तू सब कुछ देखता है।
4. और अब तेरे स्वर्ग के फ़रिश्ते गुनाह के दोषी हैं, और तेरा गुस्सा इंसानों के शरीर पर तब तक रहेगा जब तक इंसाफ़ का बड़ा दिन न आ जाए।
5. और अब, हे ईश्वर और प्रभु और महान राजा, मैं आपसे विनती करता हूँ कि मेरी प्रार्थना पूरी करें, मुझे धरती पर एक वंश छोड़ दें, और इंसान के सभी शरीर को नष्ट न करें, और धरती को बिना किसी निवासी के न कर दें, ताकि हमेशा के लिए विनाश हो जाए।
6. और अब, मेरे प्रभु, धरती से उस शरीर को मिटा दे जिसने तेरा गुस्सा भड़काया है, बल्कि नेकी और सच्चाई के शरीर को हमेशा रहने वाले बीज के पौधे के रूप में स्थापित कर, और अपने सेवक की प्रार्थना से अपना चेहरा मत छिपा, हे प्रभु।'

अध्याय 85

1. इसके बाद मैंने एक और सपना देखा, और मैं तुम्हें पूरा सपना दिखाऊंगा, मेरे बेटे।
2. तब हनोक ने ऊँची आवाज़ में अपने बेटे मतूशेलह से कहा, 'हे मेरे बेटे, मैं तुझसे बात करूँगा: मेरी बातें सुनो, अपने पिता के सपने पर कान लगाओ।
3. तुम्हारी माँ एडना को लेने से पहले, मैंने अपने बिस्तर पर एक सपना देखा, और देखो, एक सांड ज़मीन से निकला, और वह सांड सफ़ेद था; और उसके बाद एक बछिया निकली, और उसके साथ दो सांड निकले, जिनमें से एक काला था और दूसरा लाल।
4. और उस काले बैल ने लाल बैल को सींग मार दिया और धरती पर उसका पीछा किया, और उसके बाद मैं उस लाल बैल को और नहीं देख सका।
5. लेकिन वह काला बैल बड़ा हो गया और वह बछिया उसके साथ चली, और मैंने देखा कि बहुत से बैल उसके पीछे-पीछे चले जो उसके जैसे थे।
6. और वह गाय, वह पहली गाय, उस लाल बैल को ढूंढने के लिए उस पहले बैल के पास से गई, लेकिन उसे नहीं पाया, और उसके लिए बहुत विलाप किया और उसे ढूंढने लगी।
7. और मैंने तब तक देखा जब तक कि पहला बैल उसके पास नहीं आया और उसे चुप नहीं करा दिया, और उस समय से वह फिर नहीं रोई।
8. उसके बाद उसने एक और सफेद बैल को जन्म दिया, और उसके बाद उसने बहुत से बैल और काली गायों को जन्म दिया।
9. और मैंने अपनी नींद में देखा कि वह सफ़ेद बैल भी बड़ा होकर एक बड़ा सफ़ेद बैल बन गया, और उससे कई सफ़ेद बैल निकले, और वे उसके जैसे दिखते थे। और वे कई सफ़ेद बैल पैदा करने लगे, जो उनके जैसे दिखते थे, एक के बाद एक, बहुत सारे।

अध्याय 86

1. और फिर मैंने सोते हुए अपनी आँखों से देखा, और मैंने ऊपर आसमान को देखा, और देखो एक तारा आसमान से गिरा, और वह उठा, और खाने लगा और उन बैलों के बीच चरने लगा।
2. और उसके बाद मैंने बड़े और काले बैलों को देखा, और देखो, उन सबने अपने बाड़े, चारागाह और अपने मवेशी बदल लिए, और एक-दूसरे के साथ रहने लगे।
3. और फिर मैंने दर्शन में देखा, और आकाश की ओर देखा, और देखो मैंने देखा कि बहुत से तारे उतरकर आकाश से उस पहले तारे पर गिर पड़े, और वे उन मवेशियों के बीच बैल बन गए और उनके साथ चरने लगे।
4. और मैंने उन पर नज़र डाली और देखा, और देखो वे सब घोड़ों की तरह अपने प्राइवेट पार्ट बाहर निकाल कर बैलों की गायों को ढकने लगे, और वे सब प्रेग्नेंट हो गईं और हाथी, ऊँट और गधे पैदा करने लगीं।
5. और सब बैल उनसे डर गए, और उनसे डरकर अपने दांतों से काटने, खाने और सींगों से मारने लगे।
6. और उन्होंने उन बैलों को भी खाना शुरू कर दिया; और देखो, धरती के सभी लोग उनके सामने कांपने और डरने लगे और उनसे भागने लगे।

अध्याय 87

1. और मैंने फिर देखा कि वे एक-दूसरे को मारने-पीटने और खाने लगे, और धरती ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी।
2. और मैंने फिर से अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाईं, और मैंने देखा कि आसमान से गोरे लोगों जैसे जीव निकल रहे थे: और चार लोग उस जगह से निकले और उनके साथ तीन लोग भी थे।
3. और जो तीनों आखिर में निकले थे, उन्होंने मेरा हाथ पकड़ा और मुझे धरती की पीढ़ियों से दूर ले गए, और मुझे एक ऊँची जगह पर ले गए, और मुझे धरती से ऊँचा एक टावर दिखाया, और सभी पहाड़ियाँ नीचे थीं।
4. और एक ने मुझसे कहा: 'जब तक तुम उन हाथियों, ऊँटों, गधों, तारों, बैलों और उन सब पर पड़ने वाली हर चीज़ को न देख लो, तब तक यहीं रहो।'

अध्याय 88

1. और मैंने उन चार में से एक को देखा जो पहले निकला था, और उसने उस पहले तारे को पकड़ा जो आसमान से गिरा था, और उसके हाथ-पैर बांधकर उसे एक गहरी खाई में फेंक दिया: अब वह गहरी खाई संकरी और भयानक और अंधेरी थी।
2. और उनमें से एक ने तलवार निकाली, और उसे उन हाथियों, ऊँटों और गधों को दे दिया: तब वे एक-दूसरे को मारने लगे, और उनके कारण पूरी धरती काँप उठी।
3. और जब मैं सपने में देख रहा था, तो देखो, उन चार में से एक ने जो बाहर आए थे, उन्हें आसमान से पत्थर मारे, और उन सभी बड़े तारों को इकट्ठा किया जिनके प्राइवेट पार्ट घोड़ों जैसे थे, और उन सभी के हाथ-पैर बांध दिए, और उन्हें धरती के गहरे गड्ढे में फेंक दिया।

अध्याय 89

1. और उन चारों में से एक उस सफ़ेद बैल के पास गया और उसे चुपके से सिखाया, बिना डरे: वह एक बैल के रूप में पैदा हुआ था और एक आदमी बन गया, और उसने अपने लिए एक बड़ा बर्तन बनाया और उसमें रहने लगा; और उस बर्तन में उसके साथ तीन बैल रहते थे और वे ढके हुए थे।
2. और फिर मैंने अपनी आँखें आसमान की तरफ उठाईं और एक ऊँची छत देखी, जिस पर पानी की सात धाराएँ थीं, और वे धाराएँ बहुत सारा पानी लेकर एक घेरे में बह रही थीं।
3. और मैंने फिर देखा, और देखो, उस बड़े घेरे की सतह पर फव्वारे खुल गए, और वह पानी ऊपर उठने लगा और सतह पर आने लगा, और मैंने उस घेरे को तब तक देखा जब तक उसकी पूरी सतह पानी से ढक नहीं गई।
4. और उस पर पानी, अंधेरा और धुंध बढ़ गया; और जब मैंने उस पानी की ऊंचाई को देखा, तो वह पानी उस घेरे की ऊंचाई से ऊपर उठ गया था, और उस घेरे के ऊपर से बह रहा था, और वह धरती पर रुक गया।
5. और उस बाड़े के सारे जानवर तब तक इकट्ठा होते रहे जब तक मैंने देखा कि वे कैसे डूब गए और उस पानी में समा गए और मर गए।
6. लेकिन वह जहाज़ पानी पर तैरता रहा, जबकि सारे बैल, हाथी, ऊँट और गधे सभी जानवरों के साथ नीचे डूब गए, इसलिए मैं उन्हें देख नहीं सका, और वे बच नहीं पाए, बल्कि मर गए और गहराई में डूब गए।
7. और फिर मैंने दर्शन में देखा कि जब तक पानी की धाराएँ उस ऊँची छत से हटा नहीं दी गईं, और धरती के गड्ढे समतल नहीं हो गए और दूसरे गहरे गड्ढे खुल नहीं गए।
8. फिर पानी इनमें बहने लगा, यहाँ तक कि धरती दिखाई देने लगी; लेकिन वह बर्तन धरती पर बैठ गया, और अंधेरा छंट गया और रोशनी दिखाई देने लगी।
9. लेकिन वह सफ़ेद बैल जो इंसान बन गया था, उस बर्तन में से निकला, और उसके साथ तीन बैल भी थे। उन तीनों में से एक उस बैल जैसा सफ़ेद था, एक खून जैसा लाल था, और एक काला था: और वह सफ़ेद बैल उनमें से चला गया।

10-27. नूह की मौत से लेकर एक्सोडस तक।

10. और वे जंगली जानवरों और पक्षियों को जन्म देने लगे, जिससे अलग-अलग तरह के जानवर पैदा हुए: शेर, बाघ, भेड़िये, कुत्ते, लकड़बग्घे, जंगली सूअर, लोमड़ी, गिलहरी, सूअर, बाज़, गिद्ध, चील, और कौवे; और उनमें से एक सफ़ेद बैल पैदा हुआ।
11. और वे एक दूसरे को काटने लगे; लेकिन जो सफ़ेद बैल उनके बीच पैदा हुआ था, उसने एक जंगली गधा और उसके साथ एक सफ़ेद बैल पैदा किया, और जंगली गधे बढ़ गए।
12. लेकिन उस बैल से जो उससे पैदा हुआ, एक काला जंगली सूअर और एक सफ़ेद भेड़ पैदा हुई; और पहले वाले से बहुत सारे सूअर पैदा हुए, लेकिन उस भेड़ से बारह भेड़ें पैदा हुईं।
13. और जब वे बारह भेड़ें बड़ी हो गईं, तो उन्होंने उनमें से एक भेड़ को गधों को दे दिया, और उन गधों ने उस भेड़ को फिर भेड़ियों को दे दिया, और वह भेड़ भेड़ियों के बीच बड़ी हुई।
14. और प्रभु ग्यारह भेड़ों को उसके साथ रहने और भेड़ियों के बीच चरने के लिए ले आया: और वे बढ़ गईं और भेड़ों के कई झुंड बन गए।
15. और भेड़िये उनसे डरने लगे, और उन्होंने उन पर इतना अत्याचार किया कि उनके बच्चों को मार डाला, और उनके बच्चों को बहुत पानी वाली नदी में फेंक दिया: लेकिन वे भेड़ें अपने बच्चों के कारण ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं, और अपने मालिक से शिकायत करने लगीं।
16. और एक भेड़ जो भेड़ियों से बच गई थी, भागकर जंगली गधों के पास चली गई; और मैंने भेड़ों को देखा कि वे कैसे रो रही थीं, रो रही थीं, और अपने मालिक से पूरी ताकत से विनती कर रही थीं, जब तक कि भेड़ों का मालिक भेड़ों की आवाज़ सुनकर एक ऊँचे घर से नीचे नहीं उतरा, और उनके पास आकर उन्हें चराने लगा।
17. और उसने उस भेड़ को बुलाया जो भेड़ियों से बच गई थी, और भेड़ियों के विषय में उससे बात की, कि वह उन्हें चेतावनी दे कि भेड़ों को न छुएं।
18. और भेड़ प्रभु के वचन के अनुसार भेड़ियों के पास गई, और एक और भेड़ उससे मिली और उसके साथ चली गई, और वे दोनों जाकर उन भेड़ियों के समूह में एक साथ घुस गईं, और उनसे बात की और उन्हें चेतावनी दी कि आगे से भेड़ों को न छूएं।
19. और फिर मैंने भेड़ियों को देखा, और देखा कि वे अपनी पूरी ताकत से भेड़ों पर बहुत ज़्यादा ज़ुल्म कर रहे थे; और भेड़ें ज़ोर से चिल्ला रही थीं।
20. और प्रभु भेड़ों के पास आया और उन्होंने उन भेड़ियों को मारना शुरू कर दिया: और भेड़िये विलाप करने लगे; लेकिन भेड़ें शांत हो गईं और तुरंत रोना बंद कर दिया।
21. और मैंने भेड़ों को तब तक देखा जब तक वे भेड़ियों के बीच से चली नहीं गईं; लेकिन भेड़ियों की आँखें अंधी हो गईं, और वे भेड़िये अपनी पूरी ताकत से भेड़ों का पीछा करने निकल पड़े।
22. और भेड़ों का प्रभु उनका नेता बनकर उनके साथ चला, और उसकी सब भेड़ें उसके पीछे हो लीं; और उसका चेहरा चमकीला, शानदार और देखने में भयानक था।
23. लेकिन भेड़िये उन भेड़ों का पीछा करते रहे जब तक कि वे पानी के समुद्र तक नहीं पहुँच गए।
24. और वह समुद्र बँट गया, और पानी उनके सामने इधर-उधर ठहर गया, और उनके रब ने उन्हें मार्ग दिखाया, और अपने आपको उनके और भेड़ियों के बीच खड़ा कर लिया।
25. और जब उन भेड़ियों ने भेड़ों को नहीं देखा, तो वे उस समुद्र के बीच में चले गए, और भेड़ियों ने भेड़ों का पीछा किया, और वे भेड़िये उनके पीछे उस समुद्र में भाग गए।
26. और जब उन्होंने भेड़ों के प्रभु को देखा, तो वे उसके सामने से भागने लगे, लेकिन वह समुद्र इकट्ठा हो गया, और वैसा हो गया जैसा वह बनाया गया था, और पानी इतना बढ़ गया कि उसने उन भेड़ियों को ढक लिया।
27. और मैंने देखा कि उन भेड़ों का पीछा करने वाले सभी भेड़िये मर गए और डूब गए।

28-40. रेगिस्तान में इज़राइल, कानून देना, फ़िलिस्तीन में एंट्री।

28. लेकिन भेड़ें उस पानी से बचकर एक जंगल में चली गईं, जहाँ न पानी था और न घास; और उन्होंने अपनी आँखें खोलीं और देखने लगीं; और मैंने भेड़ों के मालिक को उन्हें चराते और पानी और घास देते हुए देखा, और उस भेड़ को जाते और उन्हें ले जाते हुए देखा।
29. और वह भेड़ उस ऊँची चट्टान की चोटी पर चढ़ गई, और भेड़ों के प्रभु ने उसे उनके पास भेज दिया।
30. और उसके बाद मैंने भेड़ों के प्रभु को देखा जो उनके सामने खड़ा था, और उसका रूप बड़ा, भयानक और राजसी था, और वे सभी भेड़ें उसे देखकर उसके सामने डर गईं।
31. और वे सब उससे डर गए और काँपने लगे, और उन्होंने उस भेड़ से जो उनके बीच में थी, पुकारकर कहा, "हम अपने रब के सामने खड़े नहीं हो सकते, न ही उसे देख सकते हैं।"
32. और वह भेड़ जो उन्हें ले जा रही थी, फिर से उस चट्टान की चोटी पर चढ़ गई, लेकिन भेड़ें अंधी होने लगीं और उस रास्ते से भटकने लगीं जो उसने उन्हें दिखाया था, लेकिन वह भेड़ इसके बारे में नहीं जानती थी।
33. और भेड़ों का मालिक उन पर बहुत गुस्सा हुआ, और उस भेड़ को यह पता चला, और वह चट्टान की चोटी से नीचे उतरी, और भेड़ों के पास आई, और उनमें से ज़्यादातर को अंधा और गिरा हुआ पाया।
34. और जब उन्होंने उसे देखा तो वे डर गए और उसके होने से कांपने लगे, और अपने बाड़े में लौट जाना चाहते थे।
35. और वह भेड़ दूसरी भेड़ों को साथ लेकर उन भेड़ों के पास आई जो गिरी हुई थीं, और उन्हें मारने लगी; और भेड़ें उसके होने से डर गईं, और इस तरह वह भेड़ उन गिरी हुई भेड़ों को वापस ले आई, और वे अपने बाड़े में लौट गईं।
36. और मैंने इस दर्शन में देखा कि वह भेड़ आदमी बन गई और उसने भेड़ों के स्वामी के लिए एक घर बनाया, और सभी भेड़ों को उस घर में रख दिया।
37. और मैंने देखा कि यह भेड़ जो उस भेड़ से मिली थी जो उन्हें ले जा रही थी, सो गई: और मैंने देखा कि सभी बड़ी भेड़ें मर गईं और उनकी जगह छोटी भेड़ें उठ खड़ी हुईं, और वे एक चरागाह में आईं, और पानी की एक धारा के पास पहुँचीं।
38. तब वह भेड़, जो उनका लीडर था और जो एक आदमी बन गया था, उनसे अलग हो गया और सो गया, और सभी भेड़ें उसे ढूँढ़ने लगीं और उसके लिए ज़ोर-ज़ोर से रोने लगीं।
39. और मैंने देखा कि जब तक उन्होंने उस भेड़ के लिए रोना बंद नहीं किया और पानी की धारा पार नहीं कर ली, तब तक वे दो भेड़ें उन भेड़ों की जगह लीडर के तौर पर उठीं जो उन्हें लीड कर रही थीं और सो गई थीं।
40. और मैंने देखा कि भेड़ें एक अच्छी जगह, एक अच्छी और शानदार ज़मीन पर आ गईं, और मैंने देखा कि वे भेड़ें खुश हो गईं; और वह घर उनके बीच उस अच्छी ज़मीन पर खड़ा हो गया।

41-50. न्यायियों के समय से लेकर मंदिर के निर्माण तक।

41. और कभी उनकी आँखें खुल जाती थीं, और कभी अंधी हो जाती थीं, जब तक कि कोई दूसरी भेड़ उठकर उन्हें ले जाती और उन सबको वापस ले आती, और उनकी आँखें खुल जातीं।
42. और कुत्ते, लोमड़ी और जंगली सूअर उन भेड़ों को खाने लगे, जब तक कि भेड़ों के मालिक ने उनके बीच से एक और भेड़, यानी एक मेढ़ा, को खड़ा नहीं किया, जो उनकी अगुवाई करता था।
43. और उस मेढ़े ने उन कुत्तों, लोमड़ियों और जंगली सूअरों को तब तक मारना शुरू किया जब तक उसने उन सबको खत्म नहीं कर दिया।
44. और जिस भेड़ की आँखें खुली थीं, उसने उस मेढ़े को देखा, जो भेड़ों के बीच था, जब तक कि उसने अपनी शान छोड़ दी और उन भेड़ों को पीटना, उन्हें रौंदना और बुरा बर्ताव करना शुरू कर दिया।
45. और भेड़ों के प्रभु ने मेमने को दूसरे मेमने के पास भेजा और उसे उस मेढ़े की जगह, जिसने अपनी शान छोड़ दी थी, एक मेढ़ा और भेड़ों का नेता बनाया।
46. और वह उसके पास गया और उससे अकेले में बात की, और उसे एक मेढ़ा बनाया, और उसे भेड़ों का राजा और नेता बनाया; लेकिन इन सब बातों के दौरान वे कुत्ते भेड़ों पर ज़ुल्म करते रहे।
47. और पहले मेढ़े ने दूसरे मेढ़े का पीछा किया, और वह दूसरा मेढ़ा उठकर उसके सामने से भाग गया; और मैंने देखा कि उन कुत्तों ने पहले मेढ़े को नीचे गिरा दिया।
48. और दूसरा मेढ़ा उठा और छोटी भेड़ों को ले जाने लगा।
49. और वे भेड़ें बढ़ीं और बढ़ती गईं; लेकिन सभी कुत्ते, और लोमड़ियाँ, और जंगली सूअर उससे डरकर भाग गए, और उस मेढ़े ने जंगली जानवरों को टक्कर मारकर मार डाला, और उन जंगली जानवरों का भेड़ों पर कोई अधिकार नहीं रहा और उन्होंने उनसे कुछ भी नहीं छीना। और उस मेढ़े ने बहुत सी भेड़ें पैदा कीं और सो गया; और एक छोटी भेड़ उसकी जगह मेढ़ा बन गई, और उन भेड़ों का राजकुमार और नेता बन गया।
50. और वह घर बड़ा और चौड़ा हो गया, और वह उन भेड़ों के लिए बनाया गया: और भेड़ों के स्वामी के लिए घर पर एक ऊँचा और बड़ा टावर बनाया गया, और वह घर नीचा था, लेकिन टावर ऊँचा और ऊँचा था, और भेड़ों का स्वामी उस टावर पर खड़ा था और उन्होंने उसके सामने एक भरी हुई मेज़ चढ़ाई।

51-67. इज़राइल और यहूदा के दो राज्य, यरूशलेम के विनाश तक।

51. और मैंने फिर उन भेड़ों को देखा कि वे फिर से भटक गईं और बहुत से रास्तों पर चली गईं, और अपना घर छोड़ दिया, और भेड़ों के स्वामी ने भेड़ों में से कुछ को बुलाकर भेड़ों के पास भेजा, लेकिन भेड़ों ने उन्हें मारना शुरू कर दिया।
52. और उनमें से एक बच गया और मारा नहीं गया, और वह भाग गया और भेड़ों पर चिल्लाने लगा; और उन्होंने उसे मारना चाहा, लेकिन भेड़ों के प्रभु ने उसे भेड़ों से बचाया, और मेरे पास ले आया, और वहाँ रहने दिया।
53. और उसने उन भेड़ों के पास और भी बहुत सी भेड़ें भेजीं, ताकि वे उनके बारे में गवाही दें और उनके लिए दुख मनाएँ।
54. और उसके बाद मैंने देखा कि जब उन्होंने प्रभु के घर और उसके टावर को छोड़ दिया तो वे पूरी तरह से भटक गए, और उनकी आँखें अंधी हो गईं; और मैंने भेड़ों के प्रभु को देखा कि कैसे उसने उनके झुंड में बहुत कत्लेआम किया जब तक कि उन भेड़ों ने उस कत्लेआम को न्योता नहीं दिया और उसकी जगह को धोखा नहीं दिया।

55. और उसने उन्हें शेरों, बाघों, भेड़ियों, लकड़बग्घों, लोमड़ियों और सब जंगली जानवरों के हाथ में कर दिया; और वे जंगली जानवर उन भेड़ों को फाड़ने लगे।
56. और मैंने देखा कि उसने उनके घर और उनके गुम्मट को छोड़ दिया और उन सबको शेरों के हाथ में कर दिया, कि वे उन्हें फाड़कर खा जाएं, यानी सब जंगली जानवरों के हाथ में।
57. और मैं अपनी पूरी ताकत से ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगा, और भेड़ों के मालिक से अपील करने लगा, और भेड़ों के बारे में उसे बताने लगा कि उन्हें सभी जंगली जानवरों ने खा लिया है।
58. लेकिन वह यह देखकर भी अडिग रहा, और खुश हुआ कि उन्हें खा लिया गया, निगल लिया गया और लूट लिया गया, और उन्हें सभी जानवरों के हाथ में खाने के लिए छोड़ दिया।
59. और उसने सत्तर चरवाहों को बुलाया, और उन भेड़ों को उनके पास भेजा कि वे उन्हें चराएं, और उसने चरवाहों और उनके साथियों से कहा: "तुम में से हर एक अब से भेड़ों को चराएगा, और जो कुछ मैं तुम्हें आज्ञा दूंगा वह सब तुम करोगे।
60. और मैं उन्हें ठीक से गिनकर तुम्हारे हवाले कर दूँगा, और तुम्हें बताऊँगा कि उनमें से कौन-कौन खत्म होने वाले हैं—और तुम उन्हें खत्म कर देना।" और उसने वे भेड़ें उन्हें सौंप दीं।
61. फिर उसने एक और को बुलाया और उससे कहा: "देखो और ध्यान दो कि चरवाहे उन भेड़ों के साथ क्या करेंगे; क्योंकि वे उनमें से ज़्यादा को खत्म कर देंगे जितना मैंने उन्हें हुक्म दिया है।
62. और हर ज़ुल्म और तबाही जो चरवाहों के ज़रिए होगी, उसे लिखो, यानी कि वे मेरे हुक्म के हिसाब से कितनों को मारेंगे, और कितनों को अपनी मर्ज़ी से: हर चरवाहे के खिलाफ़ वह सारा नुकसान लिखो जो वह करता है।
63. और मेरे सामने गिनती करके पढ़ो कि वे कितनों को मारते हैं, और कितनों को नाश होने के लिए सौंपते हैं, ताकि मेरे पास उनके खिलाफ गवाही हो, और मैं चरवाहों के हर काम को जान सकूं, ताकि मैं समझ सकूं और देख सकूं कि वे क्या करते हैं, कि वे मेरे आदेश का पालन करते हैं या नहीं, जो मैंने उन्हें दिया है।
64. लेकिन वे इसे नहीं जानेंगे, और तुम उन्हें यह नहीं बताओगे, न ही उन्हें चेतावनी दोगे, बल्कि हर एक के खिलाफ़ वह सारी तबाही लिखोगे जो चरवाहे अपने समय में करते हैं और यह सब मेरे सामने रखोगे।
65. और मैंने देखा कि जब चरवाहे अपने समय पर चरने लगे, तो उन्होंने जितना उन्हें बताया गया था उससे ज़्यादा को मारना और खत्म करना शुरू कर दिया, और उन्होंने उन भेड़ों को शेरों के हाथ में सौंप दिया।
66. और शेरों और बाघों ने उन भेड़ों में से ज़्यादातर को खा लिया, और जंगली सूअरों ने भी उनके साथ खाया; और उन्होंने उस मीनार को जला दिया और उस घर को गिरा दिया।
67. और मैं उस मीनार को लेकर बहुत दुखी हुआ क्योंकि भेड़ों का वह घर गिरा दिया गया था, और बाद में मैं यह नहीं देख पाया कि वे भेड़ें उस घर में घुसीं या नहीं।

68-71. स्वर्गदूतों के शासकों का पहला दौर - यरूशलेम के विनाश से लेकर कैद से वापसी तक।

68. और चरवाहों और उनके साथियों ने उन भेड़ों को सभी जंगली जानवरों को सौंप दिया, ताकि वे उन्हें खा जाएं, और उनमें से हर एक को अपने समय पर एक तय संख्या मिली: यह एक किताब में लिखा गया था कि उनमें से हर एक ने उनमें से कितनी को मारा।
69. और हर एक ने तय संख्या से ज़्यादा को मारा और खत्म किया; और मैं उन भेड़ों के लिए रोने और विलाप करने लगा।
70. और इस तरह मैंने दर्शन में उस लिखने वाले को देखा, कि कैसे उसने हर उस चीज़ को लिखा जो उन चरवाहों ने दिन-ब-दिन खत्म की थी, और उसे ऊपर ले जाकर रखा और असल में भेड़ों के प्रभु को पूरी किताब दिखाई – यहाँ तक कि उन्होंने जो कुछ भी किया था, और जो कुछ भी उनमें से हर एक ने छीन लिया था, और जो कुछ भी उन्होंने खत्म होने के लिए दे दिया था।
71. और वह पुस्तक भेड़ों के प्रभु के सामने पढ़ी गई, और उसने पुस्तक उसके हाथ से ली, और उसे पढ़ा, और उस पर मुहर लगाकर उसे रख दिया।

72-77. दूसरा काल - साइरस के समय से लेकर सिकंदर महान के समय तक।

72. और तुरंत मैंने देखा कि चरवाहे बारह घंटे तक चरते रहे, और देखो, उनमें से तीन भेड़ें वापस मुड़ीं और अंदर आकर उस घर में जो कुछ गिरा था, उसे बनाने लगीं; लेकिन जंगली सूअरों ने उन्हें रोकने की कोशिश की, लेकिन वे कामयाब नहीं हुए।
73. और उन्होंने फिर से पहले की तरह बनाना शुरू किया, और उन्होंने वह मीनार खड़ी की, और उसका नाम ऊँचा मीनार रखा गया; और उन्होंने फिर से मीनार के सामने एक मेज़ रखना शुरू किया, लेकिन उस पर रखी सारी रोटियाँ खराब थीं और शुद्ध नहीं थीं।
74. और इन सब बातों से उन भेड़ों की आँखें अंधी हो गईं ताकि वे देख न सकें, और उनके चरवाहों की आँखें भी; और उन्होंने उन्हें बड़ी संख्या में उनके चरवाहों को खत्म करने के लिए सौंप दिया, और उन्होंने भेड़ों को अपने पैरों से रौंदकर खा लिया।
75. और भेड़ों का मालिक तब तक शांत रहा जब तक सारी भेड़ें मैदान में बिखरकर उनमें मिल नहीं गईं, और उन्होंने उन्हें जानवरों के हाथ से नहीं बचाया।
76. और जिसने किताब लिखी थी, वह उसे ले गया, और भेड़ों के मालिक के सामने उसे दिखाया और पढ़ा, और उनके लिए उससे विनती की, और उनके लिए उससे विनती की, क्योंकि उसने उसे चरवाहों के सभी काम दिखाए, और सभी चरवाहों के खिलाफ उसके सामने गवाही दी।
77. फिर उसने असली किताब ली और उसे अपने पास रख दिया, और चला गया।

अध्याय 90

1-5. तीसरा काल - सिकंदर महान से लेकर ग्रीको-सीरियाई राज तक।

1. और मैंने देखा कि इस तरह पैंतीस चरवाहों ने भेड़ों को चराने का काम शुरू किया, और उन्होंने पहले वाले की तरह ही अपना समय पूरा किया; और दूसरों ने उन्हें अपने समय के लिए चराने के लिए अपने हाथों में ले लिया, हर चरवाहा अपने समय में।
2. और उसके बाद मैंने अपने सपने में आसमान के सभी पक्षियों को आते देखा, चील, गिद्ध, चील, कौवे; लेकिन चील सभी पक्षियों

को लीड कर रहे थे; और वे उन भेड़ों को खाने लगे, और उनकी आँखें निकालने लगे और उनका मांस खाने लगे।
3. और भेड़ें चिल्लाईं क्योंकि पक्षी उनका मांस खा रहे थे, और मैं नींद में उस चरवाहे को देखकर दुखी हुआ जो भेड़ों को चराता था।
4. और मैंने देखा कि उन भेड़ों को कुत्ते, चील और चील खा गए, और उन पर न तो मांस बचा, न खाल, न ही नसें, यहाँ तक कि उनकी हड्डियाँ ही रह गईं: और उनकी हड्डियाँ भी ज़मीन पर गिर गईं और भेड़ें कम हो गईं।
5. और मैंने देखा कि तेईस ने चराई का काम शुरू किया और अपने अलग-अलग समय में अट्ठावन बार पूरा किया।

6-12. चौथा काल--ग्रेको-सीरियाई प्रभुत्व से लेकर मैकाबीन विद्रोह तक।

6. लेकिन देखो, उन सफेद भेड़ों ने मेमनों को जन्म दिया, और वे अपनी आँखें खोलकर देखने लगे, और भेड़ों से पुकारने लगे।
7. हां, उन्होंने उन्हें पुकारा, लेकिन उन्होंने उनकी बात नहीं सुनी, बल्कि वे बहुत बहरे हो गए, और उनकी आंखें बहुत अंधी हो गईं।
8. और मैंने दर्शन में देखा कि कैसे कौवे उन मेमनों पर झपट पड़े और उनमें से एक मेमने को ले लिया, और भेड़ों को टुकड़े-टुकड़े करके खा गए।
9. और मैंने देखा कि उन मेमनों के सींग उग आए, और कौवों ने अपने सींग नीचे कर लिए; और मैंने देखा कि उन भेड़ों में से एक का बड़ा सींग उग आया, और उनकी आँखें खुल गईं।
10. और उसने उनकी ओर देखा, और उनकी आँखें खुल गईं, और उसने भेड़ों को पुकारा, और मेढ़ों ने उसे देखा, और सब उसके पास दौड़े।
11. और इन सबके बावजूद वे चील, गिद्ध, कौवे और चील भेड़ों को नोचते रहे, उन पर झपट्टा मारते रहे और उन्हें खा जाते रहे; भेड़ें तो चुप रहीं, लेकिन मेढ़े विलाप करते और चिल्लाते रहे।
12. और वे कौवे उससे लड़े और लड़े और उसके सींग काटने की कोशिश की, लेकिन वे उस पर काबू नहीं पा सके।

13-19. यहूदियों पर गैर-यहूदियों का आखिरी हमला (जहां 13-15 और 16-18 डबलट हैं).

13. और मैंने देखा कि चरवाहे, चील, गिद्ध और चील आए, और उन्होंने कौवों से कहा कि वे उस मेढ़े का सींग तोड़ दें, और वे उससे लड़े और लड़े, और वह उनसे लड़ा और चिल्लाया कि उसकी मदद आ सकती है।
14. और मैंने देखा कि वह आदमी, जो चरवाहों के नाम लिखता था और भेड़ों के मालिक के सामने ले जाता था, आया और उसकी मदद की और उसे सब कुछ दिखाया: वह उस मेढ़े की मदद के लिए नीचे आया था।
15. और मैंने देखा कि भेड़ों का प्रभु गुस्से में उनके पास आया, और जितने लोग उसे देखते थे वे सब भाग गए, और वे सब उसके सामने से उसकी छाया में गिर पड़े।
16. सभी चील, गिद्ध, कौवे और चील इकट्ठा हुए, और उनके साथ मैदान की सभी भेड़ें भी आईं, हाँ, वे सभी एक साथ आईं, और मेढ़े का सींग तोड़ने में एक-दूसरे की मदद की।
17. और मैंने उस आदमी को देखा, जिसने प्रभु के आदेश के अनुसार किताब लिखी थी, जब तक कि उसने उस किताब को नहीं खोला जो उन बारह आखिरी चरवाहों ने की थी, और दिखाया कि उन्होंने भेड़ों के प्रभु के सामने अपने पहले के चरवाहों से कहीं ज़्यादा तबाही मचाई थी।
18. और मैंने देखा कि भेड़ों का प्रभु उनके पास आया और अपने गुस्से की लाठी हाथ में लेकर धरती पर मारा, और धरती फट गई, और आकाश के सभी जानवर और सभी पक्षी उन भेड़ों के बीच से गिर पड़े, और धरती में समा गए और धरती ने उन्हें ढक लिया।
19. और मैंने देखा कि भेड़ों को एक बड़ी तलवार दी गई, और भेड़ें मैदान के सभी जानवरों पर हमला करने के लिए आगे बढ़ीं, और आकाश के सभी जानवर और पक्षी उनके सामने से भाग गए।

20-27. गिरे हुए स्वर्गदूतों, चरवाहों और धर्मत्यागियों का न्याय।

20. और मैंने देखा कि उस खूबसूरत जगह पर एक राजगद्दी खड़ी की गई, और भेड़ों का मालिक खुद उस पर बैठ गया, और दूसरे ने सील की हुई किताबें लीं और भेड़ों के मालिक के सामने उन किताबों को खोला।
21. और प्रभु ने उन लोगों को पहले सात सफ़ेद तारे बुलाए, और हुक्म दिया कि वे पहले तारे से शुरू करके, जो रास्ता दिखाता था, उन सभी तारों को उसके सामने लाएँ जिनके प्राइवेट पार्ट घोड़ों जैसे थे, और वे उन सभी को उसके सामने ले आए।
22. और उसने उस आदमी से जो उससे पहले लिख रहा था, जो उन सात गोरे लोगों में से एक था, कहा: "उन सत्तर चरवाहों को ले लो जिन्हें मैंने भेड़ें सौंपी थीं, और जिन्होंने उन्हें अपने अधिकार में लेकर मेरी आज्ञा से ज़्यादा लोगों को मार डाला।"
23. और देखो, वे सब बंधे हुए थे, मैंने देखा, और वे सब उसके सामने खड़े थे।
24. और सबसे पहले तारों पर फैसला हुआ, और उनका फैसला हुआ और वे दोषी पाए गए, और उन्हें सज़ा की जगह पर ले जाया गया, और उन्हें आग और लपटों से भरे, और आग के खंभों से भरे गहरे गड्ढे में फेंक दिया गया।
25. और उन सत्तर चरवाहों का न्याय हुआ और वे दोषी पाए गए, और उन्हें उस आग के गहरे गड्ढे में डाल दिया गया।
26. और मैंने उस समय देखा कि धरती के बीच में आग से भरा एक गहरा गड्ढा खुल गया था, और वे उन अंधी भेड़ों को लाए, और उन सबका न्याय किया गया और उन्हें दोषी पाया गया और उन्हें इस आग वाले गहरे गड्ढे में डाल दिया गया, और वे जल गईं; अब यह गहरा गड्ढा उस घर के दाहिनी ओर था।
27. और मैंने उन भेड़ों को जलते हुए और उनकी हड्डियों को जलते हुए देखा।

28-38. नया यरूशलेम, बचे हुए गैर-यहूदियों का धर्म बदलना, नेक लोगों का फिर से ज़िंदा होना, मसीहा।

28. और मैं यह देखने के लिए खड़ा हो गया कि उन्होंने उस पुराने घर को समेटा कब है; और सभी खंभे हटा दिए, और घर के सभी बीम और सजावट के सामान को भी उसी समय समेट लिया गया, और उन्होंने उसे ले जाकर ज़मीन के दक्षिण में एक जगह पर रख दिया।

29. और मैंने देखा कि भेड़ों का मालिक एक नया घर लाया जो पहले वाले से बड़ा और ऊँचा था, और उसे पहले वाले घर की जगह पर खड़ा किया जिसमें बीयर रखी हुई थी: उसके सभी खंभे नए थे, और उसकी सजावट नई और पहले वाले से बड़ी थी, पुराना वाला जिसे उसने हटा दिया था, और सभी भेड़ें उसके अंदर थीं।
30. और मैंने देखा कि सभी भेड़ें जो रह गई थीं, और धरती के सभी जानवर, और आकाश के सभी पक्षी, उन भेड़ों के सामने गिरकर उन्हें प्रणाम कर रहे थे और उनसे विनती कर रहे थे और हर बात में उनकी बात मान रहे थे।
31. और उसके बाद उन तीनों ने, जिन्होंने सफ़ेद कपड़े पहने थे और मेरा हाथ पकड़ा था, जिन्होंने मुझे पहले उठाया था, और उस मेढ़े ने भी मुझे हाथ से पकड़ा था, उन्होंने मुझे उठाया और फ़ैसले से पहले उन भेड़ों के बीच में बिठा दिया।
32. और वे सब भेड़ें सफ़ेद थीं, और उनका ऊन बहुत ज़्यादा और साफ़ था।
33. और जो कुछ भी नष्ट हो गया था और बिखर गया था, और मैदान के सभी जानवर, और आकाश के सभी पक्षी, उस घर में इकट्ठे हुए, और भेड़ों का स्वामी बहुत खुश हुआ क्योंकि वे सभी अच्छे थे और उसके घर लौट आए थे।
34. और मैंने देखा कि उन्होंने वह तलवार, जो भेड़ों को दी गई थी, नीचे रख दी, और वे उसे घर में वापस ले आए, और उस पर प्रभु के सामने मुहर लगा दी गई, और सभी भेड़ों को उस घर में बुलाया गया, लेकिन वह उन्हें रोक नहीं पाई।
35. और उन सब की आँखें खुल गईं, और उन्होंने अच्छाई देखी, और उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसने न देखा हो।
36. और मैंने देखा कि वह घर बड़ा, चौड़ा और बहुत भरा हुआ था।
37. और मैंने देखा कि एक सफ़ेद बैल पैदा हुआ, जिसके बड़े सींग थे और मैदान के सभी जानवर और हवा के सभी पक्षी उससे डरते थे और हर समय उससे विनती करते थे।
38. और मैंने देखा कि उनकी सारी पीढ़ियाँ बदल गईं, और वे सब सफेद बैल बन गए; और उनमें से पहला मेमना बना, और वह मेमना एक बड़ा जानवर बन गया और उसके सिर पर बड़े काले सींग थे; और भेड़ों का मालिक उस पर और सभी बैलों पर खुश हुआ। 39. और मैं उनके बीच सो गया: और मैं जागा और सब कुछ देखा।
40. यह वही दर्शन है जो मैंने सोते समय देखा था, और जब मैं जागा तो धर्म के प्रभु को धन्य कहा, और उसकी महिमा की।
41. तब मैं फूट-फूट कर रोया और मेरे आंसू तब तक नहीं रुके जब तक मैं उन्हें और बर्दाश्त नहीं कर सका: जब मैंने देखा, तो जो मैंने देखा था, उसके कारण वे बह निकले; क्योंकि सब कुछ आएगा और पूरा होगा, और मनुष्यों के सभी काम उनके क्रम में मुझे दिखाए गए थे।
42. उस रात मुझे पहला सपना याद आया, और उसके कारण मैं रोया और परेशान हो गया - क्योंकि मैंने वह सपना देखा था।'

अध्याय 91

1. 'और अब, मेरे बेटे मतूशेलह, अपने सब भाइयों को मेरे पास बुला, और अपनी माँ के सब बेटों को मेरे पास इकट्ठा कर; क्योंकि वचन मुझे बुलाता है, और आत्मा मुझ पर उंडेली गई है, ताकि मैं तुझे वह सब कुछ दिखा सकूँ जो तेरे साथ हमेशा के लिए होगा।'
2. तब मतूशेलह गया और अपने सब भाइयों और सम्बन्धियों को बुलाकर अपने पास ले आया।
3. और उसने नेकी के सभी बच्चों से कहा: 'हे हनोक के बेटों, अपने पिता की सारी बातें सुनो, और मेरे मुँह की आवाज़ को ठीक से सुनो; क्योंकि मैं तुम्हें समझाता हूँ और तुमसे कहता हूँ, प्यारे: नेकी से प्यार करो और उसी पर चलो।
4. और दोहरे मन से सीधेपन के करीब मत जाओ, और दोहरे मन वालों के साथ मेल-जोल मत रखो, बल्कि मेरे बेटों, नेकी से चलो। और यह तुम्हें अच्छे रास्तों पर ले जाएगा, और नेकी तुम्हारा साथी होगी।
5. क्योंकि मैं जानता हूँ कि धरती पर हिंसा बढ़ेगी, और धरती पर बड़ी सज़ा दी जाएगी, और सारा अधर्म खत्म हो जाएगा: हाँ, इसे जड़ से उखाड़ दिया जाएगा, और इसकी पूरी बनावट खत्म हो जाएगी।
6. और धरती पर फिर से अधर्म खत्म हो जाएगा, और अधर्म और हिंसा के सारे काम, और अपराध दोगुना हो जाएगा।
7. और जब पाप, अधर्म, ईशनिंदा, और हर तरह के कामों में हिंसा बढ़ेगी, और धर्म से दूर रहना, गुनाह और गंदगी बढ़ेगी, तो इन सब पर स्वर्ग से बड़ी सज़ा आएगी, और पवित्र प्रभु गुस्से और सज़ा के साथ धरती पर इंसाफ़ करने के लिए आएगा।
8. उन दिनों हिंसा जड़ से उखाड़ दी जाएगी, और अधर्म की जड़ें छल-कपट के साथ, और वे आकाश के नीचे से नाश हो जाएंगी।
9. और गैर-यहूदियों की सभी मूर्तियों को छोड़ दिया जाएगा, और मंदिरों को आग में जला दिया जाएगा, और वे उन्हें पूरी धरती से हटा देंगे, और उन्हें आग के न्याय में डाल दिया जाएगा, और वे हमेशा के लिए गुस्से और गंभीर न्याय में नष्ट हो जाएंगे।
10. और धर्मी लोग अपनी नींद से जाग उठेंगे, और बुद्धि जागेगी और उन्हें दी जाएगी।
11. और उसके बाद अधर्म की जड़ें काट दी जाएंगी, और पापी तलवार से नाश किए जाएंगे... हर जगह से ईशनिंदा करने वालों को काट दिया जाएगा, और जो हिंसा की योजना बनाते हैं और जो ईशनिंदा करते हैं, वे तलवार से खत्म हो जाएंगे।
12. और उसके बाद एक और हफ़्ता होगा, यानी आठवां हफ़्ता, जो नेकी का हफ़्ता होगा, और उसमें तलवार दी जाएगी ताकि ज़ुल्म करने वालों पर नेक इंसाफ़ किया जा सके, और पापी नेक लोगों के हाथ में सौंप दिए जाएँगे।
13. और उसके आख़िर में वे अपनी नेकी से घर बनाएंगे, और महान राजा के लिए हमेशा की शान में एक घर बनाया जाएगा,
14. और सारी इंसानियत सच्चाई के रास्ते पर चलेगी। और उसके बाद, नौवें हफ़्ते में, पूरी दुनिया पर सही इंसाफ़ ज़ाहिर होगा, और दुनिया से नास्तिकों के सारे काम खत्म हो जाएँगे, और दुनिया का नाम तबाही के लिए लिख दिया जाएगा।
15. और इसके बाद, दसवें हफ़्ते के सातवें हिस्से में, हमेशा रहने वाला बड़ा इंसाफ़ होगा, जिसमें वह फ़रिश्तों के बीच बदला लेगा।
16. और पहला स्वर्ग चला जाएगा और मिट जाएगा, और एक नया स्वर्ग दिखाई देगा, और स्वर्ग की सारी शक्तियाँ सात गुना रोशनी देंगी।
17. और उसके बाद हमेशा के लिए अनगिनत हफ़्ते होंगे, और सब कुछ अच्छाई और नेकी से होगा, और पाप का ज़िक्र कभी नहीं होगा।

18. और अब मैं तुम्हें बताता हूँ, मेरे बेटों, और तुम्हें नेकी के रास्ते और हिंसा के रास्ते दिखाता हूँ। हाँ, मैं उन्हें तुम्हें फिर से दिखाऊँगा ताकि तुम जान सको कि क्या होगा।
19. और अब, मेरे बेटों, मेरी बात सुनो, और नेकी के रास्ते पर चलो, और हिंसा के रास्ते पर मत चलो; क्योंकि जो लोग बुराई के रास्ते पर चलते हैं, वे हमेशा के लिए खत्म हो जाएंगे।'

अध्याय 92

1. हनोक की लिखी किताब--हनोक ने सच में ज्ञान की यह पूरी शिक्षा लिखी है, जिसकी तारीफ़ सभी लोग करते हैं और वह पूरी धरती का जज है, मेरे उन सभी बच्चों के लिए जो धरती पर रहेंगे। और आने वाली पीढ़ियों के लिए जो सच्चाई और शांति का पालन करेंगे।
2. समय के कारण तुम्हारा मन परेशान न हो; क्योंकि पवित्र और महान परमेश्वर ने सब बातों के लिए दिन तय किए हैं।
3. और धर्मी जन नींद से उठेगा, उठेगा और धर्म के मार्ग पर चलेगा, और उसका सारा मार्ग और चाल-चलन सदा भलाई और अनुग्रह में होगा।
4. वह नेक लोगों पर दया करेगा और उन्हें हमेशा की नेकी देगा, और वह उन्हें ताकत देगा ताकि वे अच्छाई और नेकी से भर जाएं। और वह हमेशा की रोशनी में चलेगा।
5. और पाप हमेशा के लिए अंधेरे में खत्म हो जाएगा, और उस दिन से लेकर हमेशा के लिए दिखाई नहीं देगा।

अध्याय 93

1. और उसके बाद हनोक ने दोनों बातें बताईं और किताबों से गिनना शुरू किया। और हनोक ने कहा: 'नेकी के बच्चों और दुनिया के चुने हुए लोगों के बारे में, और नेकी के पौधे के बारे में, मैं ये बातें कहूँगा, हाँ, मैं हनोक तुम्हें ये बातें बताऊँगा, मेरे बेटों:
2. जैसा मुझे स्वर्ग में दर्शन में दिखा, और जो मैंने पवित्र स्वर्गदूतों के वचन से जाना, और स्वर्ग की पट्टियों से सीखा।
3. और हनोक ने किताबों से गिनना शुरू किया और कहा: 'मैं पहले हफ़्ते में सातवें दिन पैदा हुआ था, जब न्याय और धार्मिकता अभी भी बनी हुई थी।
4. और मेरे बाद दूसरे हफ़्ते में बड़ी बुराई आएगी, और धोखा बढ़ेगा; और उसमें पहला अंत होगा। और उसमें एक आदमी बच जाएगा; और उसके खत्म होने के बाद अधर्म बढ़ेगा, और पापियों के लिए एक कानून बनाया जाएगा।
5. और उसके बाद तीसरे हफ़्ते के आखिर में, एक आदमी को नेक इंसाफ़ के पौधे के तौर पर चुना जाएगा, और उसका वंश हमेशा के लिए नेकी का पौधा बनेगा।
6. और उसके बाद चौथे हफ़्ते के आखिर में, पवित्र और नेक लोगों के दर्शन देखे जाएँगे, और सभी पीढ़ियों के लिए एक कानून और उनके लिए एक घेरा बनाया जाएगा।
7. और उसके बाद पांचवें हफ़्ते के आखिर में, शान और राज का घर हमेशा के लिए बनाया जाएगा।
8. और उसके बाद छठे हफ़्ते में उसमें रहने वाले सभी लोग अंधे हो जाएँगे, और उन सभी के दिल बिना भगवान के समझदारी छोड़ देंगे। और उसमें एक आदमी ऊपर चढ़ेगा; और उसके आखिर में राज का घर आग से जला दिया जाएगा, और चुने हुए लोगों की पूरी जाति बिखर जाएगी।
9. और उसके बाद सातवें हफ़्ते में एक धर्मत्यागी पीढ़ी पैदा होगी, और उसके काम बहुत होंगे, और उसके सारे काम धर्मत्यागी होंगे।
10. और उसके आखिर में, नेकी की हमेशा की फसल में से चुने हुए नेक लोग चुने जाएँगे, ताकि वे उसकी सारी सृष्टि के बारे में सात गुना शिक्षा पाएँ।
11. क्योंकि इंसानों में ऐसा कौन है जो बिना परेशान हुए पवित्र की आवाज़ सुन सके? और उसके विचार कौन सोच सके? और ऐसा कौन है जो स्वर्ग के सारे काम देख सके?
12. और ऐसा कोई कैसे हो सकता है जो स्वर्ग को देख सके, और वहाँ कौन है जो स्वर्ग की चीज़ों को समझ सके और किसी आत्मा या रूह को देख सके और उसके बारे में बता सके, या ऊपर जाकर उनके सभी मकसद देख सके और उनके बारे में सोच सके या उनके जैसा कर सके?
13. और सब मनुष्यों में ऐसा कौन है जो जान सके कि पृथ्वी की चौड़ाई और लंबाई कितनी है, और किसको उन सब का माप दिखाया गया है?
14. या कोई ऐसा है जो यह जान सके कि आसमान कितना लंबा है, उसकी ऊंचाई कितनी है, वह किस चीज़ पर टिका है, तारों की गिनती कितनी है, और सभी तारे कहाँ टिके हैं?

अध्याय 94

1. और अब मैं तुमसे कहता हूँ, मेरे बेटों, नेकी से प्यार करो और उसी पर चलो; क्योंकि नेकी के रास्ते मंज़ूर हैं, लेकिन बुराई के रास्ते अचानक खत्म हो जाएँगे और गायब हो जाएँगे।
2. और एक पीढ़ी के कुछ लोगों को हिंसा और मौत के रास्ते दिखाए जाएँगे, और वे उनसे दूर रहेंगे, और उनके पीछे नहीं चलेंगे।
3. और अब मैं तुम नेक लोगों से कहता हूँ: बुराई के रास्तों पर मत चलो, न मौत के रास्तों पर, और न उनके पास जाओ, नहीं तो तुम खत्म हो जाओगे।
4. लेकिन अपने लिए नेकी और चुना हुआ जीवन खोजो और चुनो, और शांति के रास्तों पर चलो, और तुम ज़िंदा रहोगे और कामयाब होगे।
5. और मेरे वचनों को अपने दिल में बसाए रखना, और उन्हें अपने दिल से मिटाने मत देना; क्योंकि मैं जानता हूँ कि पापी लोग लोगों को बुरी तरह से ज्ञान की ओर लुभाते हैं, ताकि उसके लिए कोई जगह न मिले, और किसी भी तरह का लालच कम न हो।
6. हाय उन पर जो अन्याय और ज़ुल्म करते हैं, और धोखे को नींव बनाते हैं; क्योंकि वे अचानक तबाह हो जाएँगे, और उन्हें कोई शांति नहीं मिलेगी।
7. हाय उन पर जो पाप से अपने घर बनाते हैं; क्योंकि वे अपनी सारी नींव से उखाड़ दिए जाएँगे, और तलवार से गिर जाएँगे। और जो लोग न्याय करके सोना और चाँदी कमाते हैं, वे अचानक खत्म हो जाएँगे।
8. हे धनवानों, तुम पर हाय! क्योंकि तुम अपने धन पर भरोसा करते हो; और अपने धन को छोड़कर चले जाओगे, क्योंकि तुमने अपने धन के दिनों में परमप्रधान को स्मरण नहीं किया।

9. तुमने ईशनिंदा और अधर्म किया है, और वध के दिन, और अंधकार के दिन और महान न्याय के दिन के लिए तैयार हो गए हो।
10. मैं तुमसे यह कहता और कहता हूँ: जिसने तुम्हें बनाया है, वही तुम्हें गिरा देगा, और तुम्हारे गिरने पर कोई दया नहीं होगी, और तुम्हारा बनाने वाला तुम्हारे खत्म होने पर खुश होगा।
11. और उन दिनों तुम्हारे नेक लोग पापियों और नास्तिकों के लिए बदनामी का कारण बनेंगे।

अध्याय 95

1. काश मेरी आँखें पानी का बादल होतीं, कि मैं तुम्हारे लिए रो पाता, और अपने आँसू पानी के बादल की तरह बहा पाता: ताकि मैं अपने दिल की परेशानी से आराम पा पाता!
2. किसने तुम्हें बुराई और बुराई करने की इजाज़त दी है? और इसलिए, पापियों, तुम्हें सज़ा मिलेगी।
3. हे नेक लोगो, पापियों से मत डरो; क्योंकि प्रभु उन्हें फिर तुम्हारे हाथ में सौंप देगा, ताकि तुम अपनी इच्छा के अनुसार उन पर न्याय कर सको।
4. हाय तुम पर जो ऐसी गालियां देते हो जो पलटी नहीं जा सकतीं: इसलिए तुम्हारे पापों के कारण तुम ठीक नहीं हो पाओगे।
5. धिक्कार है तुम पर जो अपने पड़ोसी के साथ बुराई करते हो; क्योंकि तुम्हें अपने कामों के अनुसार ही बदला मिलेगा।
6. हाय तुम पर, झूठे गवाहों पर, और उन पर जो अन्याय का आरोप लगाते हो, क्योंकि तुम अचानक नष्ट हो जाओगे।
7. हे पापियों, तुम पर हाय! तुम नेक लोगों को सताते हो; क्योंकि अन्याय के कारण तुम्हें पकड़वाया जाएगा और सताया जाएगा, और उसका बोझ तुम पर भारी होगा।

अध्याय 96

1. हे नेक लोगो, उम्मीद रखो; क्योंकि पापी अचानक तुम्हारे सामने खत्म हो जाएंगे, और तुम अपनी इच्छा के अनुसार उन पर अधिकार करोगे।
2. और पापियों के संकट के दिन, तुम्हारे बच्चे उकाबों की तरह उड़ेंगे और ऊपर उठेंगे, और तुम्हारा घोंसला गिद्धों से भी ऊँचा होगा, और तुम चढ़ोगे और धरती की दरारों में, और चट्टानों की दरारों में हमेशा के लिए दुष्टों के सामने शंकुओं की तरह घुस जाओगे, और जलपरी तुम्हारे कारण आहें भरेंगी और रोएँगी।
3. इसलिए, हे दुख उठाने वालों, डरो मत; क्योंकि चंगा होना तुम्हारा हिस्सा होगा, और एक तेज़ रोशनी तुम्हें रोशन करेगी, और तुम स्वर्ग से आराम की आवाज़ सुनोगे।
4. हे पापियों, तुम पर हाय! क्योंकि तुम्हारी दौलत तुम्हें नेक लोगों जैसा दिखाती है, लेकिन तुम्हारे दिल तुम्हें पापी बताते हैं, और यह बात तुम्हारे बुरे कामों की याद दिलाने के लिए तुम्हारे खिलाफ गवाही बनेगी।
5. हाय तुम पर, जो बढ़िया से बढ़िया गेहूँ खाते हो, और बड़े प्यालों में दाखमधु पीते हो, और अपनी ताकत से दीन-दुखियों को रौंदते हो।
6. हाय तुम पर जो हर झरने से पानी पीते हो, क्योंकि तुम अचानक खत्म हो जाओगे और सूख जाओगे, क्योंकि तुमने जीवन के झरने को छोड़ दिया है।
7. हाय तुम पर जो अधर्म, छल और निन्दा करते हो; यह तुम्हारे विरुद्ध बुराई का स्मरण होगा।
8. हाय तुम पर, हे ताकतवर, जो ताकत से नेक लोगों पर जुल्म करते हो; क्योंकि तुम्हारे विनाश का दिन आ रहा है। उन दिनों में नेक लोगों के लिए बहुत से और अच्छे दिन आएंगे - तुम्हारे न्याय के दिन में।

अध्याय 97

1. हे धर्मियों, विश्वास करो, कि पापी लोग लज्जित होंगे, और अधर्म के दिन नाश हो जाएंगे।
2. हे पापियों, यह जान लो कि परमप्रधान को तुम्हारी तबाही का ध्यान है, और स्वर्ग के फ़रिश्ते तुम्हारी तबाही पर खुशियाँ मना रहे हैं।
3. हे पापियों, तुम क्या करोगे? और न्याय के दिन तुम किधर भागोगे? जब तुम धर्मियों की प्रार्थना सुनोगे?
4. हां, तुम्हारा हाल भी उनके जैसा होगा, जिनके खिलाफ यह बात गवाही होगी: "तुम पापियों के साथी रहे हो।"
5. और उन दिनों में नेक लोगों की प्रार्थना यहोवा तक पहुंचेगी, और तुम्हारे लिए न्याय के दिन आएंगे।
6. और तुम्हारे सारे बुरे कामों की बातें महान पवित्र परमेश्वर के सामने पढ़ी जाएंगी, और तुम्हारे चेहरे शर्म से ढक जाएंगे, और वह हर उस काम को ठुकरा देगा जो बुरे कामों पर आधारित है।
7. हे पापियों, तुम पर हाय, जो समुद्र के बीच और सूखी भूमि पर रहते हो, जिनका स्मरण तुम्हारे विरुद्ध बुरा है।
8. धिक्कार है तुम पर, जो गलत काम से सोना-चाँदी कमाते हो और कहते हो, "हम धन-दौलत से अमीर हो गए हैं, और हमारे पास बहुत कुछ है; और हमने वह सब कुछ पा लिया है जो हम चाहते थे।"
9. और अब हम वह करें जो हमने सोचा था: क्योंकि हमने चाँदी जमा कर ली है, और हमारे घरों में बहुत से किसान हैं।" और हमारे अनाज के भंडार पानी से भरे हुए हैं,
10. हाँ, तुम्हारे झूठ पानी की तरह बह जाएँगे; क्योंकि तुम्हारा धन स्थिर नहीं रहेगा, बल्कि तेज़ी से तुमसे दूर चला जाएगा; क्योंकि तुमने यह सब अधर्म से कमाया है, और तुम एक बड़े श्राप के हवाले हो जाओगे।

अध्याय 98

1. और अब मैं तुम समझदारों और बेवकूफों से कसम खाता हूँ, क्योंकि तुम्हें धरती पर कई तरह के अनुभव होंगे।
2. क्योंकि तुम पुरुष स्त्रियों से अधिक श्रृंगार और कुंवारी कन्याओं से अधिक रंगीन वस्त्र पहिनेंगे। राजसी ठाट-बाट, शान-शौकत, शक्ति, चांदी, सोना, बैंगनी वस्त्र, शोभा और भोजन जल की नाईं बहाए जाएंगे।
3. इसलिए उनमें शिक्षा और समझ की कमी होगी, और वे अपनी संपत्ति के साथ खत्म हो जाएंगे; और अपनी सारी शान और शान के साथ, और शर्म, हत्या और बड़ी तंगी में, उनकी आत्मा को आग की भट्टी में डाल दिया जाएगा।
4. हे पापियों, मैंने तुमसे कसम खाई है, जैसे पहाड़ गुलाम नहीं बनता, और न ही पहाड़ी किसी औरत की दासी बनती है, वैसे ही

पाप धरती पर नहीं भेजा गया, बल्कि इंसान ने खुद इसे बनाया है, और जो लोग इसे करते हैं वे बड़े श्राप के तहत गिरेंगे।
5. और स्त्री को बांझपन नहीं दिया गया, परन्तु अपने ही हाथों के कामों के कारण वह बिना सन्तान मर जाती है।
6. हे पापियों, मैंने तुम से उस महान पवित्र की शपथ ली है, कि तुम्हारे सारे बुरे काम स्वर्ग में प्रकट हो जाएंगे, और तुम्हारे अत्याचार के कोई भी काम छिपे या छिपे नहीं रहेंगे।
7. और अपने मन में यह न सोचो, और न अपने मन में यह कहो कि तुम नहीं जानते, और न देखते हो कि हर पाप हर दिन स्वर्ग में परमप्रधान के सामने लिखा जाता है।
8. अब से तुम जान लो कि तुम जो ज़ुल्म करते हो, वह तुम्हारे इंसाफ़ के दिन तक हर दिन लिखा जाएगा।
9. अरे मूर्खों, तुम पर हाय! क्योंकि अपनी मूर्खता के कारण तुम नाश हो जाओगे। और तुम बुद्धिमानों के विरुद्ध अपराध करोगे, और इस प्रकार तुम्हारा भाग अच्छा नहीं होगा।
10. और अब, जान लो कि तुम विनाश के दिन के लिए तैयार हो: इसलिए, हे पापियों, जीने की उम्मीद मत करो, बल्कि तुम जाओगे और मरोगे; क्योंकि तुम कोई फिरौती नहीं जानते; क्योंकि तुम बड़े न्याय के दिन, क्लेश के दिन और अपनी आत्माओं के लिए बड़ी शर्म के दिन के लिए तैयार हो।
11. हाय तुम पर, हे हठीले दिल वालों, जो बुरे काम करते हो और खून खाते हो। तुम्हारे पास खाने-पीने और पेट भरने के लिए अच्छी चीज़ें कहाँ से हैं? उन सभी अच्छी चीज़ों से जो सबसे ऊँचे प्रभु ने धरती पर बहुत सारी रखी हैं; इसलिए तुम्हें कोई शांति नहीं मिलेगी।
12. अफ़सोस तुम पर जो गलत कामों से प्यार करते हो: तुम अपने लिए अच्छे की उम्मीद क्यों करते हो? जान लो कि तुम नेक लोगों के हाथों में सौंप दिए जाओगे, और वे तुम्हारी गर्दन काट देंगे और तुम्हें मार डालेंगे, और तुम पर कोई दया नहीं करेंगे।
13. अफ़सोस तुम पर जो नेक लोगों की मुसीबत में खुश होते हो, क्योंकि तुम्हारे लिए कोई कब्र नहीं खोदी जाएगी।
14. हाय तुम पर जो नेक लोगों की बातों को तुच्छ समझते हो; क्योंकि तुम्हें जीवन की कोई आशा नहीं रहेगी।
15. धिक्कार है तुम पर जो झूठे और भगवान के खिलाफ बातें लिखते हो; क्योंकि वे अपने झूठ इसलिए लिखते हैं ताकि लोग उन्हें सुनकर अपने पड़ोसी के साथ भगवान के खिलाफ काम करें।
16. इसलिए उन्हें कोई शांति नहीं मिलेगी, बल्कि वे अचानक मर जाएंगे।

अध्याय 99

1. धिक्कार है तुम पर जो बुराई करते हो, और झूठ पर गर्व करते हो और उसकी बड़ाई करते हो: तुम खत्म हो जाओगे, और तुम्हें कोई खुशहाल ज़िंदगी नहीं मिलेगी।
2. हाय उन पर जो सीधी-सादी बातों को तोड़-मरोड़कर पेश करते हैं, और हमेशा के नियम को तोड़ते हैं, और जो वे नहीं थे, वैसे पापी बन जाते हैं: वे धरती पर पैरों तले रौंदे जाएँगे।
3. हे नेक लोगो, उन दिनों अपनी प्रार्थनाओं को यादगार के तौर पर तैयार रखो, और उन्हें फ़रिश्तों के सामने गवाही के तौर पर रखो, ताकि वे पापियों के पाप को सबसे ऊँचे परमेश्वर के सामने यादगार के तौर पर रखें।
4. उन दिनों में राष्ट्रों में हलचल मच जाएगी, और राष्ट्रों के परिवार विनाश के दिन उठ खड़े होंगे।
5. और उन दिनों में बेसहारा लोग निकलकर उनके बच्चों को ले जाएंगे, और उन्हें छोड़ देंगे, ताकि उनके बच्चे उनके कारण खत्म हो जाएं: हां, वे अपने दूध पीते बच्चों को छोड़ देंगे, और उनके पास वापस नहीं आएंगे, और अपने प्यारों पर कोई दया नहीं करेंगे।
6. और फिर से मैं तुमसे, हे पापियों, शपथ लेता हूँ कि पाप लगातार खून-खराबे के दिन के लिए तैयार है।
7. और जो लोग पत्थरों, और सोने, चांदी, लकड़ी, पत्थर और मिट्टी की कब्रों की पूजा करते हैं, और जो लोग अशुद्ध आत्माओं, राक्षसों और सभी प्रकार की मूर्तियों की पूजा करते हैं जो ज्ञान के अनुसार नहीं हैं, उन्हें उनसे किसी भी तरह की मदद नहीं मिलेगी।
8. और वे अपने दिल की मूर्खता के कारण भगवान को नहीं मानेंगे, और उनके दिल के डर और सपनों में देखे गए नज़ारों के कारण उनकी आँखें अंधी हो जाएँगी।
9. इनके कारण वे नास्तिक और डरावने हो जाएँगे; क्योंकि उन्होंने अपना सारा काम झूठ से किया होगा, और पत्थर की पूजा की होगी: इसलिए वे पल भर में खत्म हो जाएँगे।
10. लेकिन उन दिनों में वे सब धन्य हैं जो ज्ञान की बातें मानते हैं, और उन्हें समझते हैं, और परमप्रधान के मार्गों पर चलते हैं, और उसकी धार्मिकता के मार्ग पर चलते हैं, और अधर्मियों के साथ अधर्मी नहीं बनते; क्योंकि वे बच जाएँगे।
11. हाय तुम पर जो अपने पड़ोसियों में बुराई फैलाते हो; क्योंकि तुम अधोलोक में मारे जाओगे।
12. हाय तुम पर जो धोखेबाज़ और झूठे तरीके अपनाते हो, और उन पर जो धरती पर कड़वाहट फैलाते हैं; क्योंकि वे इस तरह पूरी तरह खत्म हो जाएँगे।
13. धिक्कार है तुम पर जो दूसरों की कड़ी मेहनत से अपने घर बनाते हो, और उनके बनाने का सारा सामान पाप की ईंटें और पत्थर हैं; मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम्हें कभी शांति नहीं मिलेगी।
14. अफ़सोस उन पर जो अपने पुरखों के नाप-तौल और हमेशा की विरासत को ठुकरा देते हैं, और जिनकी आत्माएँ मूर्तियों के पीछे चली जाती हैं; क्योंकि उन्हें कभी चैन नहीं मिलेगा।
15. हाय उन पर जो अन्याय करते हैं और ज़ुल्म में मदद करते हैं, और बड़े फ़ैसले के दिन तक अपने पड़ोसियों को मारते हैं।
16. क्योंकि वह तुम्हारी शान को गिरा देगा, और तुम्हारे दिलों पर दुख लाएगा, और अपना भयंकर गुस्सा भड़काएगा, और तुम सबको तलवार से खत्म कर देगा; और सभी पवित्र और नेक लोग तुम्हारे पापों को याद रखेंगे।

अध्याय 100

1. और उन दिनों एक ही जगह पर पिता और उनके बेटे मारे जाएँगे, और भाई एक दूसरे के साथ मरेंगे, जब तक कि उनके खून से नदियाँ बहने न लगें।
2. क्योंकि कोई भी इंसान अपने बेटों और पोतों के बेटों को मारने से हाथ नहीं रोकेगा, और न ही पापी अपने आदरणीय भाई को मारने से हाथ रोकेगा: सुबह से लेकर सूरज डूबने तक वे एक-दूसरे को मारते रहेंगे।

3. और घोड़ा पापियों के खून में डूब जाएगा, और रथ अपनी ऊंचाई तक डूब जाएगा।
4. उन दिनों स्वर्गदूत गुप्त जगहों पर उतरेंगे, और उन सभी को एक जगह इकट्ठा करेंगे जिन्होंने पाप किया था, और सबसे ऊँचा परमेश्वर उस न्याय के दिन उठेगा, ताकि पापियों के बीच बड़ा न्याय करे।
5. और सभी नेक और पवित्र लोगों पर वह पवित्र स्वर्गदूतों में से पहरेदार नियुक्त करेगा, जो उनकी आँख की पुतली की तरह रक्षा करेंगे, जब तक कि वह सारी बुराई और सारे पाप का अंत न कर दे, और भले ही नेक लोग लंबी नींद सो जाएँ, उन्हें डरने की कोई बात नहीं है।
6. और तब धरती के बच्चे बुद्धिमानों को सुरक्षित देखेंगे, और इस किताब की सारी बातें समझेंगे, और पहचानेंगे कि जब वे अपने पापों के कारण बर्बाद हो जाएँगे, तो उनका धन उन्हें बचा नहीं पाएगा।
7. हे पापियो, तुम पर हाय! जब तुम बड़ी मुसीबत के दिन आओगे, तुम नेक लोगों को सताते हो और उन्हें आग में जलाते हो। तुम्हें अपने कामों के हिसाब से सज़ा मिलेगी।
8. हाय तुम पर, हे हठीले मनवालों, जो बुरी चालें चलने के लिए जागते रहते हो; इसलिए तुम पर डर छा जाएगा, और कोई तुम्हारी मदद करने वाला नहीं होगा।
9. हे पापियो, हाय तुम पर, तुम्हारे मुँह की बातों के कारण, और तुम्हारे हाथों के कामों के कारण जो तुम्हारी अभक्ति ने किए हैं, तुम आग से भी भयानक धधकती लपटों में जलोगे।
10. और अब, तुम जान लो कि वह स्वर्ग में तुम्हारे कामों के बारे में फ़रिश्तों से, सूरज, चाँद और तारों से तुम्हारे पापों के बारे में पूछेगा, क्योंकि तुम धरती पर नेक लोगों का इंसाफ़ करते हो।
11. और वह तुम्हारे खिलाफ हर बादल, धुंध, ओस और बारिश को बुलाकर गवाही देगा; क्योंकि वे सब तुम्हारे कारण तुम पर नहीं गिरेंगे, और वे तुम्हारे पापों को याद रखेंगे।
12. और अब बारिश को भी तोहफ़े दो कि वह तुम पर बरसने से न रुके, और न ही ओस को, जब उसने तुमसे सोना और चाँदी लेकर बरसने के लिए कहा है।
13. जब पाला और बर्फ़ अपनी ठंडक के साथ, और सभी बर्फ़ीले तूफ़ान अपनी सभी मुसीबतों के साथ तुम पर आ पड़ेंगे, उन दिनों तुम उनके सामने खड़े नहीं रह पाओगे।

अध्याय 101

1. हे स्वर्ग के बच्चों, स्वर्ग पर ध्यान दो, और परमप्रधान के हर काम पर ध्यान दो, और उससे डरो और उसके सामने कोई बुरा काम मत करो।
2. अगर वह तुम्हारे लिए आसमान की खिड़कियाँ बंद कर दे, और तुम्हारे लिए बारिश और ओस को ज़मीन पर गिरने से रोक दे, तो तुम क्या करोगे?
3. और अगर वह तुम्हारे कामों की वजह से तुम पर गुस्सा करे, तो तुम उससे गुज़ारिश नहीं कर सकते; क्योंकि तुमने उसकी नेकी के खिलाफ घमंड और घमंड भरी बातें कही हैं: इसलिए तुम्हें कोई शांति नहीं मिलेगी।
4. और क्या तुम जहाज़ों के नाविकों को नहीं देखते कि उनके जहाज़ लहरों से कैसे इधर-उधर उछलते हैं, और हवाओं से कैसे हिलते हैं, और बड़ी मुश्किल में पड़ जाते हैं?
5. और इसलिए वे डरते हैं क्योंकि उनका सारा अच्छा सामान उनके साथ समुद्र में चला जाता है, और उनके मन में बुरा डर रहता है कि समुद्र उन्हें निगल जाएगा और वे उसमें खत्म हो जाएंगे।
6. क्या पूरा समुद्र और उसका सारा पानी, और उसकी सारी हरकतें, सबसे ऊँचे का काम नहीं हैं, और क्या उसने उसके कामों की सीमाएँ तय नहीं की हैं, और उसे रेत से पूरी तरह से सीमित नहीं किया है?
7. और उसकी डांट से वह डरकर सूख जाता है, और उसकी सब मछलियां और जो कुछ उस में है, सब मर जाते हैं; परन्तु हे पृथ्वी पर रहनेवाले पापियों, उससे मत डरो।
8. क्या उसने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनमें है, सब कुछ नहीं बनाया? जिसने ज़मीन और समुद्र में चलने-फिरने वाली हर चीज़ को समझ और समझ दी है।
9. क्या जहाज़ के नाविक समुद्र से नहीं डरते? फिर भी पापी परमप्रधान से नहीं डरते।

अध्याय 102

1. उन दिनों में जब वह तुम पर भयानक आग बरसाएगा, तो तुम कहाँ भागोगे, और कहाँ छुटकारा पाओगे? और जब वह तुम्हारे खिलाफ़ अपना वचन भेजेगा, तो क्या तुम डरोगे नहीं?
2. और सभी तारे बहुत डर जाएंगे, और सारी पृथ्वी डर जाएगी, कांपेगी और घबरा जाएगी।
3. और सभी फ़रिश्ते अपने हुक्म पूरे करेंगे, और महान महिमा की मौजूदगी से खुद को छिपाने की कोशिश करेंगे, और धरती के बच्चे कांपेंगे और डरेंगे; और तुम पापियों को हमेशा के लिए श्राप दिया जाएगा, और तुम्हें कोई शांति नहीं मिलेगी।
4. हे धर्मियों, डरो मत, और हे धर्मियों, जो धर्म में मरे हो, आशा रखो।
5. और अगर तुम्हारी आत्मा दुख में अधोलोक में चली गई है, और तुम्हारे जीवन में तुम्हारा शरीर तुम्हारी अच्छाई के अनुसार नहीं रहा है, तो दुखी मत हो, बल्कि पापियों के न्याय के दिन, और श्राप और सज़ा के दिन का इंतज़ार करो।
6. और फिर भी जब तुम मरते हो तो पापी तुम्हारे बारे में कहते हैं: "जैसे हम मरते हैं, वैसे ही नेक लोग भी मरते हैं, और उन्हें अपने कामों का क्या फ़ायदा मिलता है?
7. देखो, जैसे हम, वैसे ही वे भी दुख और अंधेरे में मरते हैं, और उनके पास हमसे ज़्यादा क्या है? अब से हम बराबर हैं।
8. और वे क्या पाएंगे और हमेशा क्या देखेंगे? देखो, वे भी मर चुके हैं, और अब से हमेशा के लिए वे कोई रोशनी नहीं देखेंगे।"
9. मैं तुम से कहता हूँ, हे पापियों, तुम खाने-पीने, चोरी करने, पाप करने, लोगों को नंगा करने, धन कमाने और अच्छे दिन देखने में संतुष्ट हो।
10. क्या तुमने नेक लोगों का अंत देखा है? कि उनकी मौत तक उनमें कोई हिंसा नहीं पाई जाती?
11. "फिर भी वे नष्ट हो गए और ऐसे हो गए जैसे वे थे ही नहीं, और उनकी आत्माएँ क्लेश में अधोलोक में उतर गईं।"

अध्याय 103

1. इसलिए, अब मैं तुम नेक लोगों से, उस महान, आदरणीय और शक्तिशाली राजा की महिमा और उसकी महानता की शपथ लेता हूँ:
2. मैं एक रहस्य जानता हूँ, और मैंने स्वर्ग की तख्तियाँ पढ़ी हैं, और पवित्र किताबें देखी हैं, और उनमें उनके बारे में लिखा और लिखा हुआ पाया है:
3. कि सारी अच्छाई, खुशी और महिमा उनके लिए तैयार की गई है, और जो नेकी में मरे हैं उनकी आत्माओं के लिए लिखी गई है, और तुम्हारे कामों के बदले में तुम्हें कई गुना अच्छाई दी जाएगी, और तुम्हारा भाग्य जीवितों के भाग्य से कहीं ज़्यादा है।
4. और तुम जो नेकी में मरे हो, उनकी आत्माएं ज़िंदा रहेंगी और खुश रहेंगी, और उनकी आत्माएं खत्म नहीं होंगी, और न ही दुनिया की सभी पीढ़ियों में महान परमेश्वर के सामने उनकी याद रहेगी: इसलिए अब उनके अपमान से मत डरो।
5. हे पापियों, जब तुम मरोगे, तो तुम पर अफ़सोस होगा। अगर तुम अपने पापों की दौलत में मरोगे, और तुम्हारे जैसे लोग तुम्हारे बारे में कहेंगे: 'धन्य हैं वे पापी: उन्होंने अपने पूरे दिन देखे हैं।'
6. और वे कैसे खुशहाली और दौलत में मरे, और उन्होंने अपनी ज़िंदगी में कोई मुसीबत या खून नहीं देखा; और वे इज्ज़त से मरे, और उनकी ज़िंदगी में उन पर कोई सज़ा नहीं हुई।"
7. तुम जान लो कि उनकी आत्माएं अधोलोक में उतर जाएंगी, और वे अपनी बड़ी मुसीबत में दुखी होंगे।
8. और तुम्हारी आत्माएं अंधेरे, जंजीरों और जलती हुई आग में जाएंगी जहां कठोर न्याय होगा; और यह बड़ा न्याय दुनिया की सभी पीढ़ियों के लिए होगा। अफ़सोस तुम पर, क्योंकि तुम्हें कोई शांति नहीं मिलेगी।
9. ज़िंदगी में जो नेक और अच्छे लोग हैं, उनके बारे में यह मत कहो: "हमारे मुश्किल दिनों में हमने बहुत मेहनत की है और हर मुसीबत झेली है, और बहुत बुराई का सामना किया है और खत्म हो गए हैं, और हम कम हो गए हैं और हमारी आत्मा कमज़ोर हो गई है।
10. और हम बर्बाद हो गए हैं और हमें कोई मदद करने वाला भी नहीं मिला, यहाँ तक कि एक शब्द भी कहने वाला नहीं: हम तड़प-तड़प कर बर्बाद हो गए हैं, और हमें उम्मीद नहीं है कि हम रोज़ ज़िंदगी देखेंगे।
11. हमने सिर बनने की उम्मीद की थी और हम पूंछ बन गए हैं: हमने बहुत मेहनत की है और हमें अपनी मेहनत से कोई संतुष्टि नहीं मिली; और हम पापियों और अधर्मियों का खाना बन गए हैं, और उन्होंने हम पर अपना भारी बोझ डाल दिया है।
12. जो हमसे नफ़रत करते थे और हमें मारते थे, उन्होंने हम पर राज किया; और जो हमसे नफ़रत करते थे, उनके आगे हमने गर्दन झुकाई, लेकिन उन्होंने हम पर दया नहीं की।
13. हम उनसे दूर जाना चाहते थे ताकि बचकर आराम कर सकें, लेकिन हमें कोई ऐसी जगह नहीं मिली जहाँ हम भागकर उनसे सुरक्षित रह सकें।
14. और अपनी मुसीबत में हम हाकिमों से शिकायत करते हैं, और उन लोगों के खिलाफ़ चिल्लाते हैं जिन्होंने हमें खा लिया, लेकिन उन्होंने हमारी पुकार पर ध्यान नहीं दिया, और हमारी आवाज़ नहीं सुनी।
15. और उन्होंने उन लोगों की मदद की जिन्होंने हमें लूटा और खा गए और जिन्होंने हमें कम कर दिया; और उन्होंने अपना जुल्म छिपाया, और उन्होंने उन लोगों का बोझ हमसे नहीं हटाया जिन्होंने हमें खा लिया और हमें तितर-बितर कर दिया और हमें मार डाला, और उन्होंने अपनी हत्या को छिपाया, और यह याद नहीं रखा कि उन्होंने हम पर हाथ उठाए थे।

अध्याय 104

1. मैं तुमसे कसम खाता हूँ कि स्वर्ग में फ़रिश्ते तुम्हें महान की महिमा से पहले अच्छे के लिए याद करते हैं: और तुम्हारे नाम महान की महिमा से पहले लिखे गए हैं।
2. उम्मीद रखो; क्योंकि पहले तुम बुराई और तकलीफ़ की वजह से शर्मिंदा हुए थे; लेकिन अब तुम स्वर्ग की रोशनी की तरह चमकोगे, तुम चमकोगे और तुम्हें देखा जाएगा, और स्वर्ग के दरवाज़े तुम्हारे लिए खुल जाएँगे।
3. और अपनी पुकार में न्याय की पुकार करो, और वह तुम्हें दिख जाएगा; क्योंकि तुम्हारी सारी मुसीबत शासकों पर, और उन सभी पर आएगी जिन्होंने तुम्हें लूटने वालों की मदद की।
4. उम्मीद रखो, और अपनी उम्मीदों को मत छोड़ो क्योंकि तुम्हें स्वर्ग के स्वर्गदूतों की तरह बहुत खुशी मिलेगी।
5. तुम्हें क्या करना होगा? तुम्हें बड़े न्याय के दिन छिपना नहीं पड़ेगा और तुम पापी नहीं ठहरोगे, और हमेशा रहने वाला न्याय दुनिया की सभी पीढ़ियों तक तुमसे दूर रहेगा।
6. और अब, हे नेक लोगो, जब तुम पापियों को ताकतवर होते और अपने कामों में कामयाब होते देखो, तो डरो मत; उनके साथी मत बनो, बल्कि उनके जुल्म से दूर रहो; क्योंकि तुम स्वर्ग की सेनाओं के साथी बन जाओगे।
7. और, भले ही तुम पापी कहते हो: "हमारे सभी पाप खोजे नहीं जाएंगे और लिखे नहीं जाएंगे," फिर भी वे हर दिन तुम्हारे सभी पाप लिखेंगे।
8. और अब मैं तुम्हें दिखाता हूँ कि रोशनी और अंधेरा, दिन और रात, तुम्हारे सारे पाप देखते हैं।
9. अपने दिलों में भगवान को न मानने वाले मत बनो, और झूठ मत बोलो और नेकी की बातों को मत बदलो, न ही पवित्र महान परमेश्वर की बातों पर झूठ बोलने का इल्ज़ाम लगाओ, और न ही अपनी मूर्तियों का ध्यान रखो; क्योंकि तुम्हारा सारा झूठ और तुम्हारी सारी भगवान को न मानने का नतीजा नेकी नहीं बल्कि बड़ा पाप है।
10. और अब मैं यह राज़ जानता हूँ, कि पापी लोग नेकी की बातों को कई तरह से बदलेंगे और तोड़-मरोड़ देंगे, और बुरी बातें बोलेंगे, और झूठ बोलेंगे, और बड़ी-बड़ी धोखेबाज़ी करेंगे, और अपनी बातों पर किताबें लिखेंगे।
11. लेकिन जब वे मेरी सारी बातें अपनी भाषा में सच-सच लिखेंगे, और मेरी बातों में कुछ भी नहीं बदलेंगे या कम नहीं करेंगे, बल्कि वे सब सच-सच लिखेंगे - वह सब जो मैंने उनके बारे में पहले गवाही दी थी।
12. फिर, मैं एक और रहस्य जानता हूँ, कि किताबें नेक और समझदार लोगों को दी जाएँगी ताकि वे खुशी, सच्चाई और बहुत ज्ञान का कारण बनें।

13. और उन्हें किताबें दी जाएंगी, और वे उन पर विश्वास करेंगे और उनसे खुश होंगे, और फिर उन सभी नेक लोगों को, जिन्होंने उनसे सच्चाई के सभी रास्ते सीखे हैं, बदला मिलेगा।'

अध्याय 105

1. उन दिनों प्रभु ने उन्हें धरती के बच्चों को बुलाकर अपनी समझदारी के बारे में गवाही देने को कहा: उन्हें यह दिखाओ; क्योंकि तुम ही उनके गाइड हो, और पूरी धरती पर इनाम हो।
2. क्योंकि मैं और मेरा बेटा उनके जीवन में हमेशा के लिए सच्चाई के रास्ते पर उनके साथ रहेंगे; और तुम्हें शांति मिलेगी: हे सच्चाई के बच्चों, खुश रहो। आमीन।

अध्याय 106

1. और कुछ दिनों के बाद मेरे बेटे मतूशेलह ने अपने बेटे लेमेक के लिए एक पत्नी ली, और वह उससे गर्भवती हुई और एक बेटे को जन्म दिया।
2. और उसका शरीर बर्फ़ की तरह सफ़ेद और गुलाब के फूल की तरह लाल था, और उसके सिर के बाल और उसकी लंबी लटें ऊन की तरह सफ़ेद थीं, और उसकी आँखें सुंदर थीं। और जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो उसने पूरे घर को सूरज की तरह रोशन कर दिया, और पूरा घर बहुत रोशन था।
3. और तब वह दाई के हाथों उठा, अपना मुँह खोला, और नेकी के प्रभु से बातें करने लगा।
4. और उसका पिता लेमेक उससे डरकर भाग गया, और अपने पिता मतूशेलह के पास आया।
5. और उसने उससे कहा: 'मैंने एक अजीब बेटा पैदा किया है, जो इंसानों से अलग और उनके जैसा नहीं है, और स्वर्ग के परमेश्वर के बेटों जैसा है; और उसका स्वभाव अलग है और वह हमारे जैसा नहीं है, और उसकी आँखें सूरज की किरणों जैसी हैं, और उसका चेहरा शानदार है।
6. और मुझे ऐसा लगता है कि वह मुझसे नहीं बल्कि फ़रिश्तों से आया है, और मुझे डर है कि उसके दिनों में धरती पर कोई अजूबा हो सकता है।
7. और अब, मेरे पिता, मैं आपसे गुज़ारिश करने और विनती करने आया हूँ कि आप हमारे पिता हनोक के पास जाएँ और उनसे सच्चाई सीखें, क्योंकि उनका निवास स्थान फ़रिश्तों के बीच है।'
8. और जब मतूशेलह ने अपने बेटे की बातें सुनीं, तो वह धरती के कोने-कोने से मेरे पास आया; क्योंकि उसने सुना था कि मैं वहाँ हूँ, और वह ज़ोर से चिल्लाया, और मैंने उसकी आवाज़ सुनी और मैं उसके पास आया। और मैंने उससे कहा: 'देख, मैं यहाँ हूँ, मेरे बेटे, तू मेरे पास क्यों आया है?'
9. उसने जवाब दिया, 'मैं बहुत परेशान होकर तुम्हारे पास आया हूँ, और एक परेशान करने वाला सपना देखकर आया हूँ।
10. और अब, मेरे पिता, मेरी बात सुनो: मेरे बेटे लेमेक को एक बेटा हुआ है, जिसके जैसा कोई नहीं है, और उसका स्वभाव इंसान के स्वभाव जैसा नहीं है, और उसके शरीर का रंग बर्फ से भी ज़्यादा सफ़ेद और गुलाब के फूल से भी ज़्यादा लाल है, और उसके सिर के बाल सफ़ेद ऊन से भी ज़्यादा सफ़ेद हैं, और उसकी आँखें सूरज की किरणों जैसी हैं, और उसने अपनी आँखें खोलीं और उससे पूरा घर रोशन हो गया।
11. और वह दाई के हाथों में उठा, और अपना मुँह खोलकर स्वर्ग के प्रभु को धन्यवाद दिया।
12. और उसका पिता लेमेक डर गया और मेरे पास भाग आया, और उसे यकीन नहीं हुआ कि वह उससे पैदा हुआ है, बल्कि वह स्वर्ग के स्वर्गदूतों जैसा है; और देखो, मैं तुम्हारे पास इसलिए आया हूँ कि तुम मुझे सच बताओ।'
13. और मैंने, हनोक ने, उससे कहा: 'प्रभु धरती पर एक नई चीज़ करेंगे, और यह मैंने पहले ही एक दर्शन में देखा है, और तुम्हें बताता हूँ कि मेरे पिता जेरेड की पीढ़ी में स्वर्ग के कुछ स्वर्गदूतों ने प्रभु के वचन का उल्लंघन किया था।
14. और देखो, वे पाप करते हैं और कानून तोड़ते हैं, और औरतों से संबंध बनाकर उनके साथ पाप करते हैं, और उनमें से कुछ से शादी करके उनसे बच्चे पैदा करते हैं।
15. और वे धरती पर आत्मा के अनुसार नहीं, बल्कि शरीर के अनुसार दानव पैदा करेंगे, और धरती पर बड़ा दण्ड होगा, और धरती सारी गंदगी से साफ़ हो जाएगी।
16. हाँ, पूरी धरती पर एक बड़ा विनाश आएगा, और एक साल तक बाढ़ और बड़ा विनाश होगा।
17. और यह बेटा जो तुम्हारा पैदा हुआ है, धरती पर रह जाएगा, और उसके तीन बच्चे उसके साथ बच जाएंगे: जब धरती पर रहने वाले सभी इंसान मर जाएंगे, तो वह और उसके बेटे बच जाएंगे।
18. और अब अपने बेटे लेमेक को बता देना कि जो पैदा हुआ है, वह सच में तेरा बेटा है, और उसका नाम नूह रखना; क्योंकि वह तेरे पास छोड़ दिया जाएगा, और वह और उसके बेटे उस तबाही से बच जाएँगे, जो धरती पर सारे पाप और सारे बुरे कामों की वजह से आएगी, जो उसके दिनों में धरती पर पूरी हो जाएगी।
19. और उसके बाद धरती पर पहले से भी ज़्यादा बुराई होगी; क्योंकि मैं पवित्र लोगों के राज़ जानता हूँ; क्योंकि उसने, यानी प्रभु ने, मुझे दिखाया है और बताया है, और मैंने उन्हें आसमान की तख्तियों पर पढ़ा है।

अध्याय 107

1. और मैंने उन पर लिखा हुआ देखा कि पीढ़ी दर पीढ़ी पाप होता रहेगा, जब तक कि नेकी की पीढ़ी न आ जाए, और पाप खत्म हो जाए और धरती से पाप मिट जाए, और हर तरह की अच्छाई उस पर आ जाए।
2. और अब, मेरे बेटे, जाओ और अपने बेटे लेमेक को बता दो कि यह बेटा, जो पैदा हुआ है, सचमुच उसका बेटा है, और यह कोई झूठ नहीं है।'
3. और जब मतूशेलह ने अपने पिता हनोक की बातें सुनीं – क्योंकि उसने उसे सब कुछ चुपके से दिखाया था – तो वह वापस लौटा और उसे सब बातें दिखाईं और उस बेटे का नाम नूह रखा; क्योंकि वह सारी तबाही के बाद धरती को सुकून देगा।

अध्याय 108

1. एक और किताब जो हनोक ने अपने बेटे मतूशेलह और उन लोगों के लिए लिखी जो उसके बाद आएंगे और आखिरी दिनों में कानून का पालन करेंगे।

2. तुम जिन्होंने अच्छा काम किया है, उन दिनों का इंतज़ार करो जब तक कि बुरे काम करने वालों का अंत न हो जाए; और गुनाहगारों की ताकत खत्म न हो जाए।
3. और तुम तब तक इंतज़ार करो जब तक पाप खत्म न हो जाए, क्योंकि उनके नाम जीवन की किताब और पवित्र किताबों से मिटा दिए जाएँगे, और उनके वंश हमेशा के लिए खत्म हो जाएँगे, और उनकी आत्माएँ मारी जाएँगी, और वे एक ऐसी जगह पर रोएँगे और विलाप करेंगे जो एक सुनसान जंगल होगा, और वे आग में जलेंगे; क्योंकि वहाँ कोई धरती नहीं है।
4. और मैंने वहाँ एक अदृश्य बादल जैसा कुछ देखा; क्योंकि उसकी गहराई के कारण मैं उस पर नज़र नहीं रख सका, और मैंने आग की एक लपट को तेज़ी से जलते हुए देखा, और चमकते पहाड़ों जैसी चीज़ें इधर-उधर घूमती और फैलती हुई देखीं।
5. और मैंने अपने साथ मौजूद पवित्र स्वर्गदूतों में से एक से पूछा: 'यह चमकती हुई चीज़ क्या है? क्योंकि यह कोई स्वर्ग नहीं है, बल्कि सिर्फ़ धधकती आग की लौ है, और रोने, चिल्लाने, विलाप करने और तेज़ दर्द की आवाज़ है।'
6. और उसने मुझसे कहा: 'यह जगह जो तुम देख रहे हो - यहाँ पापियों और ईशनिंदा करने वालों की आत्माएँ, और जो लोग बुरे काम करते हैं, और जो लोग उन सभी बातों को बिगाड़ते हैं जो प्रभु ने भविष्यद्वक्ताओं के मुँह से कही हैं - यहाँ तक कि जो बातें होंगी।
7. क्योंकि उनमें से कुछ ऊपर आसमान में लिखे और खुदे हुए हैं, ताकि फ़रिश्ते उन्हें पढ़कर जान सकें कि पापियों, दीन-हीन लोगों की आत्माओं, और जिन्होंने अपने शरीर को तकलीफ़ दी है और जिन्हें परमेश्वर ने बदला दिया है; और जो बुरे लोगों की वजह से शर्मिंदा हुए हैं, उनका क्या होगा:
8. जो परमेश्वर से प्रेम रखते थे, और न तो सोने, न चाँदी, और न संसार की किसी अच्छी वस्तु से प्रेम रखते थे, वरन अपने शरीर को दुख देने के लिये दे दिया।
9. जो जब से पैदा हुए, उन्होंने दुनियावी खाने की चाहत नहीं की, बल्कि हर चीज़ को गुज़रती हुई साँस समझते थे, और उसी के हिसाब से जीते थे, और प्रभु ने उन्हें बहुत परखा, और उनकी आत्माएँ शुद्ध पाई गईं ताकि वे उसके नाम का आशीर्वाद दें।
10. और उनके लिए जो भी आशीर्वाद तय थे, मैंने किताबों में उनका ज़िक्र किया है। और उसने उन्हें उनका बदला दिया है, क्योंकि वे ऐसे पाए गए जिन्होंने दुनिया में अपनी जान से ज़्यादा स्वर्ग को प्यार किया, और भले ही वे बुरे लोगों के पैरों तले कुचले गए, और उनसे गाली-गलौज और बुरा-भला सुना और शर्मिंदा हुए, फिर भी उन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया।
11. और अब मैं रोशनी की पीढ़ी के अच्छे लोगों की आत्माओं को बुलाऊंगा, और मैं उन लोगों को बदल दूंगा जो अंधेरे में पैदा हुए थे, जिन्हें शरीर में उस सम्मान के साथ पुरस्कृत नहीं किया गया था जिसके वे हकदार थे।
12. और मैं उन लोगों को चमकती हुई रोशनी में सामने लाऊंगा जिन्होंने मेरे पवित्र नाम से प्यार किया है, और मैं हर एक को उसके सम्मान के सिंहासन पर बैठाऊंगा।
13. और वे अनगिनत समय तक चमकते रहेंगे; क्योंकि नेकी ही परमेश्वर का न्याय है; क्योंकि वह विश्वासियों को सीधे मार्गों के निवास में विश्वास देगा।
14. और वे देखेंगे कि जो लोग अंधेरे में पैदा हुए थे, उन्हें अंधेरे में ले जाया जाएगा, जबकि नेक लोग चमकेंगे।
15. और पापी ज़ोर से चिल्लाएँगे और उन्हें शानदार देखेंगे, और वे ज़रूर वहाँ जाएँगे जहाँ उनके लिए दिन और मौसम तय किए गए हैं।'